

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_176064

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. 1482/G72P Accession No. G.H. 513

Author गोविन्ददास

Title पाकिस्तान / 1946

This book should be returned on or before the date last marked below.

पाकिस्तान

[तीन अंकों में एक नाटक]



गोविन्ददास

किताब महल

इलाहाबाद

प्रकाशक
किताब महल
इलाहाबाद

प्रथम संस्करण, १९४६

मुद्रक
जे० के० शर्मा
इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस
इलाहाबाद

विषय सूची

पृष्ठ

उपक्रम	५
पहला अंक	१३
पहला दृश्य	१३
दूसरा दृश्य	२८
तीसरा दृश्य	३६
चौथा दृश्य	४८
दूसरा अंक	६४
पहला दृश्य	६४
दूसरा दृश्य	७४
तीसरा दृश्य	८२
चौथा दृश्य	९०
पाँचवाँ दृश्य	१११
तीसरा अंक	११६
पहला दृश्य	११६
दूसरा दृश्य	१२५
तीसरा दृश्य	१३२
चौथा दृश्य	१३७
पाँचवाँ दृश्य	१५४
उपसंहार	१६३

मुख्यपात्र

अमरनाथ

महफूजखाँ

शांतिप्रिय

पीरबरुश

दुर्गा

जहाँनारा

गंगाराम (तोता)

रूबी (कुतिया)

उपक्रम

स्थान—दिल्ली में हुमायूँ के मक़बरे के बगीचे का एक हिस्सा

समय—सन्ध्या

[एक ओर कुछ दूर मक़बरे की गुंबद और उसके नीचे की इमारत का कुछ भाग दिखायी पड़ता है। बाग़ के इस हिस्से में एक बेंच पर जहाँनारा और शांतिप्रिय बैठे हुए हैं। जहाँनारा की उम्र २३-२४ साल के करीब है। वह गेहुएँ रंग की ऊँची-पूरी सुन्दर युवती है। रेशमी साड़ी और शलूका पहने है। पैरों में दिल्ली के कामदार जूते हैं। दाहिने हाथ में सोने की कुछ चूड़ियाँ और बायें हाथ में घड़ी है। इनके सिवा बदन पर और कोई गहने नहीं हैं। शांतिप्रिय की अवस्था १७-१८ वर्ष के लगभग है। वह गौर वर्ण, ऊँचा-पूरा, पर ज़रा दुबला, सुन्दर युवक है। सिर पर आजकल के ढंग से कटे हुए बाल लहरा रहे हैं। ऊपर के ओंठ पर रेख निकल रही है। वह आधुनिक ढंग का सूट पहने है, कालर और टाई भी लगाये हैं। इस बेंच के चारों तरफ़ इन दोनों के सिवा और कोई दिखायी नहीं देता।]

शांतिप्रिय—आवर लाइफ़ इज़ ए रैग्युलर फ्रीस्ट।

जहाँनारा—हाँ, बहुत . . . बहुत दिन के बाद वह . . . वह रैग्युलर फ्रीस्ट हो सकी। जिस तरह मेरे दिल्ली आने के बहुत दिन बाद तुम दिल्ली आये हो, उसी तरह मेरे दुनिया में आने के बहुत दिन बाद तुम दुनिया में भी आये थे। (कुछ रुककर) सात साल की थी मैं, जब तुम पैदा हुए। साल क्या होती है, उसमें कितने महीने और दिन, यह मैं उस वक़्त न जानती थी, पर सात साल की हूँ, यह मुझे मालूम था।

शांतिप्रिय—अम्मा के बार-बार कहने से ही न, दीदी, कि अब जहाँनारा पाँच साल की हुई, अब जहाँनारा छै साल की हुई, अब जहाँनारा सात साल की हुई ?

जहाँनारा—और क्या ? लेकिन आठवें साल से यह बात न रही ।

शांतिप्रिय—आठवें साल से तुम समझने लगीं कि साल का क्या मतलब है ?

जहाँनारा—हाँ, क्योंकि उस वक्त तुम एक साल के हो गये थे ; जिस तरह अम्मा मेरी उम्र की सालें गिनती थीं उसी तरह मैंने तुम्हारी उम्र की सालें गिनना शुरू किया ।

शांतिप्रिय—दीदी, तुम्हें मेरी पैदाइश की कितनी अच्छी तरह याद है !

जहाँनारा—उस वक्त की और उसके बाद की मुझे सभी बातें याद हों, यह नहीं, लेकिन बच्चों का दिल शायद ऐसा होता है कि कुछ बातें वे कभी नहीं भूल सकते । तुम्हारी पैदाइश भी ऐसी ही बातों में से एक थी ।

शांतिप्रिय—तुम्हारे लिए तो जरूर ही ।

जहाँनारा—एक बड़ी भीड़ आदमियों की तुम्हारे मकान के दीवानखाने में इकट्ठा थी और औरतों की जनानखाने में । तुम्हारी माँ को तुम्हारे होने में बहुत तकलीफ हुई थी, इसीलिए यह भीड़ जमा हो गयी थी । हम लोग तुम्हारे पड़ोसी ठहरे, और फिर तुम्हारे हमारे इतने अच्छे खानदानी मेलजोल !

शांतिप्रिय—जरूर ।

जहाँनारा—तब हम कैसे वहाँ न पहुँचते ? अब्बा थे दीवानखाने में और अम्मा के साथ में जनानखाने में ; जहाँ तुम पैदा हुए, वहाँ, अम्मा थीं, मैं तो वहाँ जाने न पायी थी ; दूसरे बच्चों के साथ मैं सहन में थी ।

शांतिप्रिय—दूसरे बच्चों के साथ खेलती होंगी ?

जहाँनारा—और क्या ; उस उम्र में भी फ़िर करती ? खुशी की कैसी लहर उठी, औरतों की उस भीड़ में, जब थाली बजाकर तुम्हारी पैदाइश की खबर दी गयी । भइया, थाली की वह आवाज़ कई दफ़ा अब भी मेरे कानों में गूँज उठती है ।

शांतिप्रिय—कितनी बार, दीदी, तुमने मेरी पैदाइश का यह हाल मुझे सुनाया है ?

जहाँनारा—पर दिल्ली में इसके पहले कभी सुनाया था ?

शांतिप्रिय—(मुस्कराकर) दिल्ली में कहाँ से सुनातीं ? दिल्ली तो मैं आज ही पहुँचा हूँ ।

जहाँनारा—इसीलिए तो आज फिर यह सब याद आ गया । जिसकी पैदाइश देखी, जिसे पलने में भुलाया, जिसे खिलौनों से खिलाया, जिसे अलिफ़, बे सिखाया

शांतिप्रिय—और जिसके साथ खुद खेलीं, पढ़ी-लिखीं

जहाँनारा—ठीक; उसी को आज हिन्दोस्तान की इस राजधानी दिल्ली में कालेज में भरती कराकर घूमने निकली हूँ । क्या आज का दिन ऐसा नहीं है, भइया, कि सारी की सारी पुरानी बातें बतौर सिनेमा के फ़िल्म के आँखों के सामने से घूम जायँ ?

शांतिप्रिय—ज़रूर है; और उस दीदी के लिए तो ज़रूर ही, जिसके दिल में दीदी और माँ दोनों की ही मुहब्बत है । (कुछ रुककर) दीदी, ऐसे ही मौकों पर तो तुम्हें मेरी यह तमाम तवारीख़ याद आ जाती है ।

जहाँनारा—(विचार करते हुए) हाँ, ऐसे ही मौकों पर । जब तुम्हें पहले-पहल खीर चटायी गयी, जब तुम्हारी तख्ती-ख़वानी हुई, जब तुम स्कूल में भरती हुए, और आज, जब तुम कालेज में आये हो, इनमें से कोई भी ऐसा मौका नहीं है, जब मुझे तुम्हारी ये सारी तवारीख़ याद न आयी हो ।

शांतिप्रिय—और मेरी जिस-जिस सालगिरह पर तुम मेरे साथ रहीं, उस-उस दिन भी । तुम्हारे दिल्ली पढ़ने को आने के बाद मेरी सालगिरह की मुबारिकबादियों की जो चिट्ठियाँ सौगातों के साथ तुमने भेजी हैं, उनमें भी इन्हीं बातों का ज़िक्र है ।

जहाँनारा—(विचारते हुए) मैंने कहा न, भइया: बचपन की कुछ बातें कभी नहीं भूली जातीं । (कुछ रुककर) और . . . और फिर

अगर बचपन के बाद की ज़िन्दगी भी उसीसे भरी हो, जिसे बचपन में चाहा हो, तब भला वह बातें कैसे भूली जा सकती हैं ?

शांतिप्रिय—(बिचारते हुए) हाँ, हाँ, शायद इसीलिए मैं भी अपने बचपन की एक बात नहीं भूला हूँ ।

जहाँनारा—कौन-सी ?

शांतिप्रिय—तुम्हारे गाने की यह सतरें—‘अल्लाह ! बरख़ना यह.’

जहाँनारा—(लंबी साँस लेकर बीच ही में). उफ़ ! इस. इस गाने की याद न दिलाओ, भइया ।

शांतिप्रिय—क्यों, दीदी ? इतनी गहरी साँस के साथ यह फ़िक़रा क्यों ?

जहाँनारा—भइया, इस गाने की याद के साथ ही एक दर्दनाक वाक़या याद आ जाता है ।

शांतिप्रिय—कौन-सा, दीदी ?

जहाँनारा—अब तक कभी न कहा था, पर आज बताती हूँ । यह गाना पहली मर्तबा गाया था मैंने उस वक़्त जब तुम एक दफ़ा बहुत बीमार हो गये थे ।

शांतिप्रिय—अच्छा ।

जहाँनारा—एक रात को कैसी ख़ौफ़नाक हो गयी थी तुम्हारी हालत ! उफ़ ! वह रात ! उस रात को कितनी बार, कितनी आरजू, कितनी मिन्नत के साथ इसे गाकर किस तरह मैंने परवरदिगार से इल्तज़ा की थी कि उसके जनाब में. अगर किसी नन्हों-सी जान की ही ज़रूरत है, तो तुम्हारी जान के बदले मेरी जान हाज़िर है ।

शांतिप्रिय—(हुमायूँ के मक़बरे की ओर देखकर) तो तुम मुझ पर सदक़े होना चाहती थीं, जिस तरह हुमायूँ पर बाबर हुआ था । (कुछ रुककर) कितना. कितना चाहती थीं, तुम मुझे, दीदी, और आज भी कितनी चाहती हो !

[कुछ देर सन्नाटा ।]

जहाँनारा—(शांतिप्रिय की ओर देखते हुए) भइया, एक बात और भी है, जो आज तक तुमसे नहीं कही ।

शांतिप्रिय—(जहाँनारा की ओर देख) वह भी कह दो, दीदी ।

जहाँनारा—बचपन में तुम्हारे लिए मेरी और सारी आरजूएँ तो पूरी हो जातीं पर एक न होने पाती ।

शांतिप्रिय—कौन-सी ?

जहाँनारा—तुम्हें खिला-पिला न पाती । जब तुम्हारी माँ या कोई दाई वगैरह तुम्हें चमचे से दूध पिलाती, तब कितना रश्क होता मुझे उनकी किस्मत पर, मैं चाहती उस चमचे को लेकर तुम्हें दूध पिलाना । जब तुम खाने-पीने लगे तब, जब-जब भी घर में कोई चीज़ बनती, तब कितनी ख्वाहिश होती तुम्हें भी उस चीज़ को खिलाने की, पर . . . पर, भइया, फल और सूखे मेवे के अलावा और कोई चीज़ तुम्हारे लिए ला ही न सकती । मैं तुम्हारे हाथ का, तुम्हारे घर में, सब कुछ खा सकती, पर तुम नहीं । कुछ और बड़े होने पर मैंने अपनी इस आरजू को ही कुचल डाला ।

शांतिप्रिय—पर यहाँ, दीदी, अब अपनी इस आरजू को भी पूरी कर लेना ।

[फिर कुछ देर निस्तब्धता ।]

शान्तिप्रिय—(जहाँनारा की ओर एकटक देखते हुए) क्या सोच रही हो, दीदी ?

जहाँनारा—तुम वैष्णव खानदान के हो, बड़े पाक वैष्णव खानदान के, सोच रही हूँ, यह करना कहाँ तक मुनासिब होगा ? (कुछ रुककर) भइया, एक बात जानते हो ?

शांतिप्रिय—कौन-सी ?

जहाँनारा—अपनी इस आरजू के पूरे न होने पर मुझे गुस्सा तो आता, पर नफ़रत न होती । तुम मेरे हाथ का न खाते थे, मेरे घर में न खाते थे,

इससे मेरे दिल में यह नहीं उठा कि बदले में मैं भी तुम्हारे हाथ का न खाऊँ, तुम्हारे घर में न खाऊँ; बल्कि कुछ और बड़े होने पर तुम्हारी इन मजहबी बातों को मैं इफ़ज़त की नज़र से देखने लगी।

शांतिप्रिय—पर कहाँ है मजहब इन बातों में, दीदी ? मैं इन सब चीज़ों को ढकोसला . . . बड़े से बड़ा ढकोसला मानता हूँ। मैं तुम्हारे हाथ का ज़रूर खाऊँगा, बल्कि तुम्हारा बनाया हुआ। (कुछ रुककर) मुझे तो एक बात और भी देखनी है।

जहाँनारा—कौन-सी ?

शांतिप्रिय—यह कि एम० ए० और एल-एल० बी० की एक तालिबबयेइल्म कैसा खाना बनाती है।

जहाँनारा—(मुस्कराकर) इस इम्तहान में भी मैं फ़ेल होने वाली नहीं। पढ़ने-लिखने के साथ औरतों के दूसरे फ़राइज़ की तरफ़ भी मेरा ख़्याल रहा है।

[फिर कुछ देर सन्नाटा ।]

शांतिप्रिय—(विचारते हुए) दीदी, जानती हो मुझे खिलाने-पिलाने की यह आरज़ू तुम्हें क्यों रहती थी ?

जहाँनारा—बताओ।

शांतिप्रिय—मैंने अभी कहा था न, तुम्हारे दिल में मेरी जो मुहब्बत है वह सिर्फ़ बहन की ही नहीं, पर माँ की भी है। (कुछ रुककर) दीदी, मेरी माँ तो बहुत जल्द चल दीं। मुझे तो उनकी पूरी-पूरी याद ही नहीं, लेकिन तुम्हारी वजह से मैंने माँ की ग़ैरहाज़िरी को कभी महसूस ही नहीं किया। असल में तुम्हीं ने मुझे पाला-पोसा, बड़ा किया, जैसा मैं हूँ वैसा बनाया।

[जहाँनारा कोई जवाब नहीं देती। उसकी आँखों में आँसू छलछला आते हैं। फिर कुछ देर सन्नाटा ।]

शांतिप्रिय—और, दीदी, तुम्हीं मुझे यहाँ बुला भी सकीं। बाबू जी कभी यहाँ भेजते मुझे, अगर तुमने इतना जोर न दिया होता।

जहाँनारा—मैं भी किस मुश्किल से परदे से बाहर निकल सकी हूँ। तुम्हें यहाँ बुलाने का भी मैं इतना जोर कभी न देती, भइया, लेकिन मैं यह चाहती थी कि तुम्हारे कॉलेज की पढ़ाई भी मेरी ही देख-रेख में हो; दूसरे तुम मुल्क को देखो, यहाँ के रहने वालों को समझो। इस तरह की जगह में आकर ही इन्सान अपने को और अपने इर्द-गिर्द को पहचानता है; अपनी ज़िन्दगी का मक़सद तय करता है।

शांतिप्रिय—तब, दीदी, तुमने तो अपने मुल्क को और अपने को इन पाँच सालों में अच्छी तरह पहचान लिया होगा, ज़िन्दगी का अपना मक़सद भी तय कर लिया होगा ?

जहाँनारा—ज़रूर, भइया, यहाँ आकर मैंने देखी अपने मुल्क की गुलामी, हम गुलामों की गरीबी और हमारी हर तरह से तनज़ुली; साथ ही हमारी सरकार के हथकंडे। मैंने अपने को भी पहचाना और अपनी ज़िन्दगी के मक़सद को भी तय किया।

शांतिप्रिय—क्या तय किया तुमने अपने लिए ?

जहाँनारा—मुल्क की ख़िदमत।

शांतिप्रिय—(विचारते हुए) लेकिन लेकिन, दीदी

जहाँनारा—(शांतिप्रिय की ओर देखते हुए) लेकिन क्या ?

शांतिप्रिय—माफ़ करना, शादी होते ही

जहाँनारा—शादी ? शादी ? हाँ, हाँ, वह वह भी मैंने तय कर लिया है। शादी कर मैं गुलामों से भी बदतर गुलाम नहीं बनना चाहती, और न इस गुलाम मुल्क में नये गुलाम ही पैदा करना चाहती। तुम्हारे साथ बहन की तरह ही रहकर अपनी लाइफ़ को रैग्यूलर फ़्रीस्ट रखना चाहती हूँ।

[शांतिप्रिय आश्चर्य से जहाँनारा की ओर देखता है।]

पहला अंक

पहला दृश्य

स्थान—एक क्लब

समय—सन्ध्या

[बाहिनी और टेनिसकोर्ट का एक भाग दिखायी दे रहा है और बायीं तरफ़ क्लब की इमारत का थोड़ा-सा हिस्सा, बीच में दूब का मैदान है, जिसकी दूब अच्छी तरह कटी हुई है। मैदान के दोनों तरफ़ फूलों की क्यारियाँ हैं, जिनमें मौसमी रंग-बिरंगे फूल खिले हुए हैं। मैदान के बीच में सफ़ेद मेज़पोश से ढकी हुई एक बड़ी-सी टेबिल है। टेबिल पर सोडा, लेमन, रसबरी, विमटो, जिजर आदि की बोतलें और कई काँच के गिलास रखे हैं। मेज़ के चारों तरफ़ कुछ दूरी पर छोटी-छोटी टेबलें रखी हैं, जिन पर ताश, शतरंज, केरमबोर्ड, इत्यादि रखे हैं। एक पर कई अख़बार और मासिक-पत्र आदि भी हैं। बड़ी टेबिल के चारों तरफ़ की कुर्सियों पर जहाँनारा, शांतिप्रिय, पीरबल्लश, दुर्गा, अमरनाथ तथा कुछ और स्त्री-पुरुष बैठे हैं। जहाँनारा करीब-करीब वैसी ही है जैसी उपक्रम में थी। शांतिप्रिय की मूर्छें कुछ बढ़ गयी हैं। अब उसकी अवस्था २४-२५ वर्ष के लगभग जान पड़ती है। पीरबल्लश की उम्र करीब ३१-३२ वर्ष की है और अमरनाथ की पीरबल्लश से कुछ ही अधिक। दुर्गा २२-२३ साल की दिखती है। पीरबल्लश साँवला, ऊँचा पूरा दुहरे शरीर का व्यक्ति है। छोटी-छोटी मूर्छें और दाढ़ी हैं। आँखों पर मोटे फ़्रेम का चश्मा है। अमरनाथ गेहुएँ रंग का, न बहुत ऊँचा और न ठिगना, दुबला-सा मनुष्य है। छोटी-छोटी मूर्छें हैं। दुर्गा गौर वर्ण की, कुछ ठिगनी और इकहरे

शरीर की सुन्दर युवती हैं। शेष व्यक्ति भी सभी युवक और युवतियाँ हैं। अमरनाथ को छोड़कर पुरुषों में से कुछ पश्चिमी ढंग की पोशाकें और कुछ शेरवानी तथा चूड़ीदार पाजामा पहने हैं। सिर सब के नंगे हैं। अमरनाथ खादी का कुरता और पाजामा पहने हैं, तथा गांधी-टोपी लगाये हैं। स्त्रियाँ साड़ियाँ और शलूके अथवा जम्पर धारण किये हैं। स्त्रियों के शरीर पर गहने नाम-मात्र के हैं। शांतिप्रिय और पीरबल्लश के बायें हाथों में टेनिस-रैकट हैं। कोई-कोई व्यक्ति सोडा, लेमन, आदि पी रहे हैं। बातें चल रही हैं।]

पीरबल्लश—(उत्तेजित स्वर में) पाकिस्तान बेशक पाकिस्तान। मैं फिर कहता हूँ, हिन्दोस्तान एक मुल्क नहीं, यहाँ रहने वालों की एक क्रीम नहीं। मुस्लिम लीग की पाकिस्तान की यह तहरीक ही हिन्दू-मुस्लिम सवाल को तय करा सकती है।

दुर्गा—(क्रोध से) पाकिस्तान ! पाकिस्तान ! भारत-माता के शरीर के टुकड़े ! यह कभी सम्भव है ? यह कभी हो सकता है ? इससे हिन्दू-मुस्लिम प्रश्न सुलभ जायगा ? अजी साहब, इससे होगा इस देश में रक्तपात ! घोर रक्तपात घोर-घोर रक्तपात !

अमरनाथ—मैं देखता हूँ कि इस बहस में आप दोनों ही बहुत उत्तेजित हो उठे हैं। बिना ठंडे दिमाग के बहस नहीं हो सकती। (दुर्गा से) मिस दुर्गा, क्या आप मुझे भी मिस्टर पीरबल्लश से कुछ बातें करने की इजाजत देंगी ?

दुर्गा—इजाजत ! इसमें मेरी आज्ञा माँगने की क्या आवश्यकता है ? मैं लोग तो क्लब के सदस्य ही हूँ, आप तो हैं मन्त्री।

अमरनाथ—जी नहीं, इस दृष्टि से मैंने इजाजत नहीं माँगी। बहस प्रधानतः आप लोगों में चल रही थी, मैं बीच में बोलने वाला न समझा जाऊँ, इसलिए मैंने इजाजत चाही। (पीरबल्लश से) पीरबल्लश साहब,

सबसे पहले क्या आप मुझे यह बताने की कृपा करेंगे कि एक मुल्क के क्या मायने हैं ?

पीरबल्लश—एक मुल्क के मायने ? एक मुल्क के मायने
(विचारते हुए) एक मुल्क के मायने, जनाब (रुक जाता है ।)

[सब लोग हँस पड़ते हैं ।]

पीरबल्लश—(कुछ चिढ़कर) हाँ, हाँ, मैं बताता हूँ एक मुल्क के मायने । एक मुल्क के मायने हैं जमीन का वह टुकड़ा, जिसकी कुछ कुदरती सरहदें हों ।

एक युवक—याने या तो वह समुद्र से घिरा हो, या पहाड़ों वगैरह से, या नदी बीच में हो ।

पीरबल्लश—जी जी हाँ ।

अमरनाथ—और दुनिया के सारे मौजूदा देशों की इसी प्रकार की सरहदे हैं ?

पीरबल्लश—(विचारते हुए) मुझे जागरफ़ी पढ़े तो बहुत वक्त गुज़र गया, लेकिन अगर आप लोग ग़ौर से जुग़राफ़िया समझने की तकलीफ़ ग़वारा करेंगे, तो मुझे यकीन है कि आपको हर मुल्क की किसी न किसी तरह की कुदरती सरहदें जरूर मिलेंगी ।

अमरनाथ—मैं भूगोल का अच्छा विद्यार्थी रहा हूँ और इस विषय से स्वाभाविक दिलचस्पी होने के सबब मैं अब तक भी नक्शे देखा और बनाया करता हूँ । माफ़ कीजिएगा, अगर मैं यह कहूँ कि अधिकतर लड़ाइयाँ ही इन सीमाओं के निर्धारित न रहने की वजह से हुई हैं ।

पीरबल्लश—(गला साफ़ करते हुए) अमरनाथ साहब का तालीमी ज़माना इतना शानदार रहा है और उन्हें जागरफ़ी पर इतना उबूर है कि उनकी राय के खिलाफ़ अगर मैं कुछ कहूँ, तो भी

एक युवती—(बीच ही में) जनाब, यह राय का नहीं, हकीक़त का सवाल है ।

पीरबल्लश—अच्छा जाने दीजिए कुदरती सरहदों की बात । एक मुल्क वह है जिसमें एक क़ौम रहती हो ।

अमरनाथ—और एक क़ौम के क्या लक्षण हैं ?

पीरबल्लश—एक क़ौम वह है जिसका एक मज़हब हो, जिसकी एक ज़बान हो और जिसकी एक तहज़ीब हो । क़ौम की तारीफ़ तो माहिर तय कर चुके हैं :

अमरनाथ—एक मत से; क्यों ?

पीरबल्लश—एक मत से न सही, तो कसरतराय से ।

अमरनाथ—एक तो कसरतराय क्या है, यह कहना भी कठिन है, दूसरे विशेषज्ञों के मामले में कसरतराय की क़ीमत भी बहुत अधिक नहीं है ।

पीरबल्लश—फिर काहे की क़ीमत है ? हम मुसलमानों में तो हर बात में कसरतराय की ही सबसे बड़ी क़ीमत होती है । इस्लाम से ज़्यादा जमहूरी और कोई मज़हब दुनिया के परदे पर नहीं । जमहूरियत में कसरतराय के सामने किस चीज़ की क़ीमत है ? माहिरों की कसरतराय ने क़ौम की जो तारीफ़ तय की है, हम मुसलमान उसी को मानते हैं और उस तारीफ़ के मुताबिक़ इस मुल्क में दो क़ौमें रहती हैं—हिन्दू और मुसलमान ।

दुर्गा—सर्वथा भ्रमपूर्ण युक्ति ! कल तक तो इनमें से निन्यानवे प्रतिशत मुसलमान हिन्दू थे और आज इनका अलग राष्ट्र हो गया ।

अमरनाथ—एक तो जैसा मैंने कहा कि क़ौम के लक्षणों की व्याख्या में भी विशेषज्ञों की एक राय नहीं, दूसरे जो तारीफ़ आपने अभी बतायी, और जिसे आजकल कुछ मुसलमान भाई मानने लगे हैं, उसके मुताबिक़ भी यह सिद्ध नहीं होता कि मुसलमान और हिन्दू दो राष्ट्र हैं ।

पीरबल्लश—यह सिध नहीं होता ?

अमरनाथ—जी नहीं, देखिए, जहाँ तक मज़हब का ताल्लुक है वहाँ तक तो एक ही धर्म को मानने वाली दो या अधिक क़ौमें हो सकती हैं ।

ईसाई धर्म के अनुयायी कितने राष्ट्र हैं। और एक ही क्रीम में एक से ज्यादा धर्म मानने वाले समुदाय भी रह सकते हैं। हिन्दू, जिसे कम से कम आप लोग भी एक क्रीम मानते हैं, बौद्ध, जैन, सिक्ख, भिन्न-भिन्न धर्मों के अनुयायियों का राष्ट्र है। चीन का भी यही हाल है।

पीरबख्श—लेकिन लेकिन (चुप हो जाता है।)

अमरनाथ—कहिए।

पीरबख्श—आप पूरी बात कह लीजिए।

अमरनाथ—अच्छी बात है। आपके क्रीम के लक्षणों की तीन बातों में से एक का उत्तर तो मैं दे चुका। दो का और सुन लीजिए। हिन्दोस्तान में एक सिरे से दूसरे सिरे तक जो ज़बान समझी जाती है, और जिसे यहाँ के अधिकांश लोग बोलते हैं, वह है हिन्दोस्तानी। ज़बान एक है या दो, इसे प्रधानतया सिद्ध करती है—उस भाषा की गठन, और हिन्दी, उर्दू दो कही जाने वाली ज़बानों की गठन प्रायः एक-सी ही है, इतना ही नहीं दोनों भाषाओं में ऐसे बेशुमार शब्द हैं जो संस्कृत से निकले हैं या अरबी, फ़ारसी भाषा से, इसका पता तक साधारण लिखने और बोलने वाले नहीं लगा सकने। इसके सिवा प्रान्तीय ज़बानें—बँगला, मराठी, गुजराती, तैलगू, तामिल, पश्तो वगैरह को उन सूबों में रहने वाले हिन्दू और मुसलमान दोनों ही बोलते और लिखते हैं। फिर एक बात और भी है।

पीरबख्श—कौन-सी ?

अमरनाथ—आप लोगों की पाकिस्तान की योजना में जिन हिस्सों को आप मुस्लिम-ज़ोन कहते हैं उनमें भी तो एक ही ज़बान नहीं है। एक पश्चिमोत्तर ज़ोन में ही पश्तो, काश्मीरी, पंजाबी, सिन्धी, बलूची, पाँच भाषाएँ हैं और इनके सिवा उप-भाषाएँ डायलेक्ट्स अलग। इतनी ज़बानों वाला पश्चिमोत्तर अगर एक राष्ट्र बन सकता है, तो अलग-अलग ज़बानें हिन्दोस्तान की राष्ट्रीयता के रास्ते में बाधाएँ कैसे मानी जा सकती हैं ? और अब तहज़ीब की बात लीजिए।

पीरबल्लश—हाँ, उसे और खतम कर लीजिए ।

अमरनाथ—धर्म और भाषा के सिवा तहजीब में जो चीजें खास जगह रखती हैं उनमें मुख्य हैं—कलाएँ, रीति-रिवाज, पोशाक वगैरह । स्थापत्यकला, याने इमारतों इत्यादि की बनावट, मुसब्बिरी, संगीत, नाच वगैरह में हमें कहीं भी हिन्दू-मुस्लिम तरीकों में कोई फ़र्क नहीं दिखता । छोटी-छोटी रीतियाँ तो हर हिन्दू और हर मुस्लिम समुदाय की भी एक-सी नहीं, हाँ, अगर हम बड़े-बड़े रिवाजों को लें तो हमें दिख पड़ेगा कि ये हिन्दू-मुसलमान दोनों के प्रायः एक-से हैं । पोशाक में तो कोई फ़र्क है ही नहीं । यथार्थ में हिन्दोस्तान की मौजूदा तहजीब दोनों समुदायों की संयुक्त संस्कृति है ।

एक युवक—दरअसल राजनैतिक और आर्थिक स्वार्थों का सामंजस्य एक क्रोम का सबसे बड़ा लक्षण है ।

पीरबल्लश—अच्छा, आप भी कह लीजिए ।

वही युवक—हिन्दू और मुसलमानों के राजनैतिक और आर्थिक स्वार्थों में कोई भेद नहीं ।

पीरबल्लश—क्योंकि हम दोनों ब्रिटिश गवर्नमेंट के मातहत हैं । जिस दिन हम आज़ाद हो जायँगे, उसी दिन यह फ़र्क शुरू हो जायगा । सियासी और इकतिसादी दोनों ही मामलों में हिन्दू मुसलमानों के उसूल एक-साँ नहीं; मसलन सियासी आज़ादी से हिन्दुओं के मज़हब का कोई ताल्लुक नहीं, पर मुसलमानों का यह मज़हबी सवाल है । इस्लाम में मज़हब और सियासी बातें एक ही चीज़ है । हमारी मसजिद में नमाज़ भी पढ़ी जाती है, और सयासी मामलात के लिए मुकामे-मजलिस भी वही है । इकतिसादी उसूल तो हमेशा बदलती रहने वाली चीज़ है ।

वही युवक—आर्थिक उसूल चाहे बदलती रहने वाली चीज़ हो, पर हर प्राणी के लिए रोटी जीवन में पहली ज़रूरत है, इससे कोई इन्कार नहीं कर सकता ।

एक युवती—कोई नहीं ।

पहला युवक—और इस गरीब देश में तो रोटी का सवाल सबसे बड़ा सवाल है ।

दूसरा युवक—निःसन्देह ।

पहला—तब हमें सबसे पहले यह देखना है कि देश का पृथक्करण देश की गरीबी बढ़ाता है या घटाता । पृथक्करण देश की आर्थिक उन्नति के लिए अनेक प्रकार से बाधक होगा । कुछ दृष्टान्त लीजिए । खनिज पदार्थ सारे देश में इस तरह फैले हैं कि अगर देश के टुकड़े हो गये तो कुछ चीजें हिन्दोस्तान में रह जायँगी और कुछ पाकिस्तान में । मसलन लोहा और कोयला हिन्दोस्तान में अधिक रहेगा और तेल पाकिस्तान में । समूचा देश इन पदार्थों का ठीक उपयोग न कर सकेगा । फिर अब यह सिद्ध हो गया है कि योजना बनाकर काम करने से ही काम सुचारु रूप से हो सकता है । आर्थिक योजनाएँ बड़े क्षेत्रफल में जिस तरह कामयाब हो सकती हैं, छोटे क्षेत्रफलों में नहीं । और फिर देश के टुकड़े हो जाने से देश की साख विदेशी बाजारों में इतनी कम हो जायगी कि हमें अपने उद्योग धन्धों की उन्नति के लिए एक नहीं

पीरबख्श—(बीच ही में) आप तो, जनाब, एक स्पीच दे रहे हैं स्पीच । इन सब बातों के जवाब मेरे पास हैं, पर मैं

दुर्गा—(बीच ही में) जवाब तो संसार में हर बात के होते हैं; पर हम यदि आर्थिक प्रश्नों को एक ओर रख भी दें तो भी, ... क्षमा कीजिए, मुझसे बोले बिना फिर नहीं रहा जाता, और देखिए, आप लोग बहुत बोल भी चुके हैं अतः मेरी पूरी बात सुने बिना बीच में बोलिएगा भी नहीं, मुझे तो पीरबख्श साहब और अमरनाथ जी दोनों की ही युक्तियाँ भ्रमपूर्ण दिखती हैं । मेरी सम्मति में भौगोलिक दृष्टि से भारतवर्ष एक देश है । उसकी स्वाभाविक सीमाएँ हैं । उत्तर में उसका सिर पर्वतराज हिमालय रूपी मुकुट से सुशोभित है । दक्षिण में उसके चरणों को रत्नाकर सागर

धो रहा है। गंगा आदि नदियाँ अपने पावन नीर से उसे पवित्र कर रही हैं। अनेक अन्य पर्वत और वन उसके भिन्न-भिन्न अंगों के शृंगार हैं। इस देश का सारा प्राचीन इतिहास बताता है कि यह देश सदा से एक देश रहा है। सभी बड़े-बड़े सम्राट् और बादशाहों का यही ध्येय रहा है कि वे समूचे भारत पर राज्य करें। यहाँ एक ही राष्ट्र है और धार्मिक सहिष्णुता इस राष्ट्र के प्राण। इस राष्ट्र की संस्कृति संसार की सबसे प्राचीन संस्कृति है। विश्व की अन्य संस्कृतियों पर इस संस्कृति की छाप है। अनेक जातियाँ यहाँ आयीं अवश्य, पर जो यहाँ आये सभी ने इस संस्कृति को अपना लिया। शकों, हूणों इत्यादि में और हिन्दुओं में क्या अन्तर रह गया? मुसलमानों और हिन्दुओं का भी सम्मेलन हो रहा था, शेरशाह, अकबर आदि यही तो कर रहे थे, पर औरंगजेब ने इस सम्मेलन को थोड़ा-सा घक्का पहुँचा दिया। इतने में अंग्रेज आ गये। अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए उन्होंने मिटते हुए भगड़ों को उत्तेजित कर दिया है। पर किसी राष्ट्र की संस्कृति के इतिहास में, जब वह इतनी पुरानी हो, सौ, दो सौ वर्ष क्या होते हैं? अन्त में मुसलमान और हिन्दू भी उसी प्रकार एक हो जायेंगे जिस प्रकार शक, हूण और हिन्दू हो गये थे।

पीरबक्ष—याने जो हाल उन क्रीमों का हुआ, वही मुसलमानों का होगा; न उनका कोई नामोनिशान बाक़ी रहा, न मुसलमानों का रह जायगा? कांग्रेस मिनिस्ट्रियों ने भी तो यही कोशिशें की थीं; कौन-सा ऐसा जुल्म बाक़ी रह गया था जो उन्होंने मुसलमानों पर न किया हो।

जहाँनारा—हिन्दुओं के इसी तरह के ख्यालों ने इस दो क्रीमी नज़रिये को पैदा किया है। इन्होंने.....

दुर्गा—(बीच ही में) जी नहीं, इसका जन्म हुआ है विदेशी स्वार्थियों के षडयन्त्रों से। सन् १९०६ में लार्ड मिंटो ने मुसलमानों का एक शिष्ट मण्डल बुलाकर फूट का बीज बाँटा, जो आगे चलकर पृथक निर्वाचन क्षेत्रों

में बोया गया । चुनाव के पश्चात् पौधे निकले, कांग्रेस के हिन्दू मुस्लिम समझौते के प्रयत्नों से ये फूले और कांग्रेस मिनिसिट्रियों के समय फल भी गये ।

शांतिप्रिय—मेरी तो राय है कि जब कुछ मुसलमान लीडरों ने यह देखा कि कांग्रेस इकतिसादी लाइहा-ए-अमल की बिना पर माशरत के एक नये तश्कील की ही कोशिश कर रही है, तब मजहब और तहजीब के नाम पर उन्होंने अपनी क्रौम को भड़काना शुरू किया ।

जहाँनारा—भड़काना कैसा ? क्या मजहब और तहजीब कोई चीज ही नहीं ।

पीरबल्लश—अगर मजहब और तहजीब कुछ नहीं तो दुनिया में कहीं कुछ नहीं ।

अमरनाथ—मजहब और तहजीब कुछ नहीं यह कोई नहीं कह सकता, पर सच्चे धर्म का काम सम्मेलन कराना है, एक दूसरे को अलग करना नहीं । और तहजीब तो मुझे यहाँ दो दिखती ही नहीं । फिर गुलामों का भी कोई मजहब होता है ? कोई तहजीब होती है ? विदेशी हमें कुचले हुए हैं, हमें पीस रहे हैं और हमें आपस में ही लड़ने से फुरसत नहीं ! मुझे हैरत होती है जब मैं देखता हूँ कि हम दूसरे देशों के इतिहासों से भी कोई शिक्षा नहीं ले रहे हैं । जापान और रूस की पहली लड़ाई के वक्त जापान में भगवान बुद्ध की कितनी पीतल की मूर्तियाँ गलवायी गई थीं, जिससे वह पीतल लड़ाई के काम आ सके । चीन और जापान के एक युद्ध में कितने चीनियों ने अपनी चोटियाँ कटवा दी थीं, जिससे लड़ाई के लिए रस्से बन सकें । दूर क्यों जाते हैं । इसी युद्ध में जो आर्क बिशप आफ्र केन्टरबरी रूस को धर्म और ईश्वर-द्रोही कहते थे, वे ही आज गिरजे में बैठकर उसकी विजय-कामना कर रहे हैं ; और यह सिर्फ इसीलिए कि दोनों एक ही तरह के खतरे में हैं । आपसी भगड़ों को हम आज्ञादी के बाद भी निपटा सकते हैं ।

पीरबल्लश—लेकिन आज़ादी तो अब मुनस्सर है मुसलिम लीग के पाकिस्तान की इस तहरीक के मुताबिक़ मुल्क के तक्सीम होने पर ।

दुर्गा—(कुछ उत्तेजना से) ऐसा ?

पीरबल्लश—जी हाँ, बिना इसके मुल्क की आज़ादी का मतलब होगा, हिन्दुओं की हुकूमत और मुसलमानों की और भी बदतर गुलामी । आज़ादी-पसन्द मुस्लिम क़ौम इसे कभी भी मंज़ूर नहीं कर सकती । उसे तो अब तसल्ली ही तब होगी जब जहाँ हिन्दू ज़्यादा हैं, वहाँ हिन्दुओं, और जहाँ मुसलमान ज़्यादा हैं वहाँ मुसलमानों की हुकूमत क़ायम होकर, मुल्क तक्सीम कर दिया जाय ।

जहाँनारा—हिन्दुओं के आजकल के रवैये को देखते हुए बिना इस बँटवारे के शायद आपसी दोस्ताना भी नहीं रह सकता ।

अमरनाथ—और आप समझती हैं कि बँटवारे के बाद भगड़े का कोई सवाल ही नहीं उठ सकता ? उन मुसलमानों का जो हिन्दुओं के सूबों में रहेंगे, और उन हिन्दुओं का जो मुस्लिम सूबों में, क्या होगा ?

पीरबल्लश—यह छोटी-छोटी बातें बाद में निपटती रहेंगी ।

अमरनाथ—छोटी-छोटी बातें ! इस देश के प्रायः एक तिहाई मुसलमान तो उन सूबों में रहते हैं जहाँ हिन्दुओं का बहुमत है ।

एक युवक—और फिर ईसाई, पारसी, सिक्ख इत्यादि दूसरी जातियों का इस बँटवारे में कौन-सा स्थान होगा ?

पीरबल्लश—बँटवारे के बाद यह सब बातें सोची जा सकती हैं ।

दुर्गा—(और उत्तेजित होकर मुट्ठी बाँध टेबल को ठोकते हुए, जिससे बोलें और गिलासों में आवाज़ होती है) बँटवारा हो नहीं सकता ! कदापि . . . कदापि नहीं !

शांतिप्रिय—हाँ, हाँ, यह कैसे हो सकता है ?

एक युवक—और फिर देखिए, मैं तो एक दूसरी ही बात कहता हूँ ।

शांतिप्रिय—कैसी ?

वही युवक—यदि हम यह भी मान लें कि हिन्दू और मुसलमान दो क्रोम हैं तो भी देश के टुकड़ों की जरूरत नहीं ।

जहाँनारा—तो साथ रहकर लड़ा करें ?

वही युवक—जी नहीं, साथ रहकर भी मेल रखा जा सकता है । कैनडा में फ़रासीसी और अंग्रेज़, स्विटज़रलैण्ड में जर्मन, इटैलियन और फ़रासीसी, दक्षिण आफ़्रिका में, यदि हम भारतीयों और रंगीनों को छोड़ भी दें तो, अंग्रेज़ और बोर, रूस में ईसाई, मुसलमान और यहूदी, चीन में बुद्ध, कन्फ़्यूशियस और लाओजू के अनुयायी तथा मुसलमान एक सरकार के अन्तर्गत रहते हैं ।

दूसरा युवक—आपने अगर इस तरह की मिसालें दीं हैं तो मैं दूसरी तरह की दे सकता हूँ । बालकन मुल्कों के टुकड़े आपसी भगड़ों की वजह से ही हुए । स्पेन और पोर्चुगल, आयरलैण्ड और अल्सटर, स्वीडन और नारवे, बैल्जियम और हॉलैण्ड के अलग-अलग होने का सबब यह भगड़े ही हैं ।

पहला युवक—पर इन टुकड़ों से ये देश कमजोर ही हुए, बलवान नहीं ।

एक युवती—यह समय है बड़े-बड़े ताक़तवर राष्ट्रों का, छोटों और कमजोरों की दुनिया में कोई हस्ती न रहेगी ।

पहला युवक—और फिर एक बात का और खयाल रहे । आज तो समूचा भारत एक देश है यहाँ रहने वालों का एक राष्ट्र है, पर अगर एक बार देश के टुकड़े हो गये, एक बार यदि हिन्दोस्तान और पाकिस्तान बन गये, तो फिर एकता न हो सकेगी । किसी दिन इंग्लैण्ड और अमेरिका भिन्न-भिन्न देश होने पर भी, एक दूसरे से भौगोलिक दृष्टि से सुदूर होते हुए भी, एक राज्य के अन्तर्गत थे, पर आज दोनों का धर्म एक, भाषा एक, सभ्यता एक होने पर भी एक दूसरे से पृथक हो गये हैं ।

तीसरा युवक—और फिर अलग ही होना है तो हिन्दोस्तान और पाकिस्तान ही क्यों, सिक्खिस्तान, द्रविडिस्तान, जैनिस्तान, मौमिनिस्तान, और शिया तथा सुन्नियों के भी शियाइस्तान और सुन्नीइस्तान क्यों नहीं ?

एक मुसलमान—(भज्जाक़-सा उड़ते हुए) शियाइस्तान और सुन्नीइस्तान !

तीसरा युवक—हाँ, शियाइस्तान और सुन्नीइस्तान भी । क्यों शियाइस्तान और सुन्नीइस्तान नहीं ? शिया और सुन्नियों के तबर्रा और माहादी साहबा के भगड़े रहते हुए वे साथ-साथ कैसे रह सकेंगे ?

चौथा युवक—और क्या सुन्नी सुन्नियों में भी लड़ाइयाँ नहीं हुई हैं ? पठान और मुग़ल दोनों सुन्नी थे । पठानों-पठानों के बीच भी लड़ाइयाँ हुई हैं । इतना ही नहीं, मुसलमानों ने मुसलमानों से लड़ते हुए, युद्ध में दूसरी क़ौमों की सहायताएँ तक ली हैं । अरब के मुसलमानों ने तुर्कों के मुसलमानों से अपना पिंड छुड़ाने के लिए अंग्रेज़ों से मदद माँगी थी ।

दूसरी युवती—मुसलमान ही क्यों, एक धर्म मानने वाली क्या दूसरी क़ौमों में एक दूसरे से नहीं लड़ी ? योरप के तो प्रायः सभी देशों के रहने वाले ईसाई हैं, फिर वे क्यों लड़ते हैं ?

अमरनाथ—(सन्त कबीर और शेख़ फ़रीद के समान सन्तों ने, शायर नज़ीर और खानख़ाना के मानिन्द कवियों ने, शहन्शाह शेरशाह तथा अकबर के सदृश बादशाहों ने और अगणित सेवकों एवं खादिमों ने जो बड़ा भारी कार्य इन दो महान जातियों के मिलाने, इन दो विशाल संस्कृतियों के सम्मेलन कराने का किया है, उसे आज कुछ लोग बरबाद करने पर तुले हुए हैं । हिन्दोस्तान न हिन्दुओं का है, न मुसलमानों का; वह है दोनों का । दोनों यहीं पैदा हुए, दोनों यहीं की आबोहवा में पले और यहीं के अन्न से बड़े । दोनों एक माता के दो बच्चे हैं । दो क़ौमों

का यह सिद्धान्त ही गलत है, इतना ही नहीं, उसका कार्यरूप में परिणत होना ही ग़ैरमुमकिन है। हिन्दू और मुसलमान छोटे-छोटे से गाँव में भी एक दूसरे के पड़ोसी हैं। क्या एक-एक गाँव के टुकड़े किये जायेंगे ? जब दुनिया के बड़े-बड़े विचारक सारे संसार का एक संघ-राज्य कायम करने की बात सोच रहे हैं, जब सारी मानव-जाति को एक सूत्र में बाँध मानव-राष्ट्र स्थापित करने की कल्पना की जा रही है, तब एक मिली हुई जाति, एक सम्मिलित संस्कृति के विभाजन की यह कोशिश ! ये विचार अगर फैले तो हर शहर और हर गाँव ही दुखी न होगा, पर हर घर और हर भोपड़ा इस आग से जल उठेगा। देश के लिए इससे बड़ी बदकिस्मती शायद सम्भव ही नहीं है।

एक युवक—आप ठीक कह रहे हैं, अमरनाथ जी, मुझे तो हैरत ही इस बात की है कि आजकल के पढ़े-लिखे लोगों ने यह चर्चा शुरू की है।

अमरनाथ—अरे भाई, पढ़े-लिखे लोग ही तो यह कर सकते हैं। साधारण मनुष्यों को बेवकूफ बनाकर अपना उल्लू सीधा करना पढ़े-लिखे लोगों को ही आता है। मैं तो यह कहूँगा कि ये धर्म के ठेकेदार ही सबसे बड़े पापी हैं, देश-द्रोही हैं, क्रोम-द्रोही हैं; और.....

पीरबख्श—(बीच ही में गुस्से से टेबल पर हाथ पटकते हुए, जिससे कि कुछ गिलास और बोतलें गिर जाती हैं, खड़े होकर) शटअप, अमरनाथ, आप क्लब के सेक्रेटरी होने से हमारी, हमारे लीडरान की और हमारे मज़हब की इस तरह तौहीनी नहीं कर सकते। (बाहर जाते हुए) मेरा नाम काट दीजिए अपनी क्लब की मेम्बरी से। (पीरबख्श बाहर जाता है।)

अमरनाथ—(आश्चर्य से) सुनिए....सुनिए तो, जनाब.....

एक युवक—(बीच ही में, खड़े होते हुए) क्या सुनिए ? जहाँ इस्लाम और मुस्लिम तहज़ीब की इस तरह धज्जियाँ उड़ायी जायँ,

वहाँ किसी भी मुसलमान का रहना हराम है। मेरा नाम भी काट दीजिए। (प्रस्थान।)

अमरनाथ—(पीछे-पीछे जाते हुए) अरे मजहब की धज्जियाँ ! तहजीब की धज्जियाँ ! अरे

[जहाँनारा और शेष मुसलमान भी उठकर जाते हैं। कुछ ही बेर में नेपथ्य से मोटरों के जाने की आवाज आती है। बाक़ी व्यक्ति एक दूसरे का आश्चर्य से मुँह देखते हैं। अमरनाथ लौटकर आता है।]

अमरनाथ—देखिए, ज़रा-सी बात में ही इतनी बड़ी ग़लतफ़हमी हो गयी।

दुर्गा—आप ही लोगों ने तो इन मुसलमानों को सिर पर बिठाकर इनके मस्तिष्क को आकाश पर चढ़ा दिया है। मेरा तो दृढ़ विश्वास है कि इस जाति को ठीक करने के लिए हमें 'शठे शाठ्यम्' की ही नीति पर चलना होगा। या तो ये शकों और हूणों के सदृश हममें मिल जाएँ या फ़रासीसियों, अंग्रेज़ों आदि के समान यहाँ पड़े रहें, या फिर चले जाएँ इस देश को छोड़कर। हमारी जिन भूलों ने इनकी यहाँ इतनी बड़ी संख्या कर दी है, वे ही भूलें हम आगे नहीं

अमरनाथ—(बीच ही में) मिस दुर्गा, क्षमा कीजिए, अगर मैं यह कहूँ कि हिन्दू-मुस्लिम-समस्या के वर्तमान रूप का आप लोगों की इस तरह की बातें भी कारण हैं। आप लोगों ने भी फ़िज़ूल की बातें कर-करके मुसलमानों को इतना चिढ़ा दिया है।

दुर्गा—(क्रोध से) हम लोगों ने चिढ़ा दिया है ! हिन्दू-मुस्लिम-समस्या के हम कारण हैं ? लखनऊ का समझौता हम ही ने तो किया था। खिलाफ़त आन्दोलन में हम ही लोगों ने तो मदद दी थी। करें आप लोग और ऊपर से दोष दें हम लोगों को। पर अब आपकी यह नीति अधिक समय तक न चल सकेगी। हिन्दू जाग गये हैं, उनमें बल आ गया है, वे संगठित हो रहे हैं, उन्हें मालूम पड़ने लगा है कि आप सरीखे मनुष्यों के

हाथ में देश की बागडोर रही तो धर्म का चौथा पैर भी बचने वाला नहीं है। अपने धर्म, देश और संस्कृति को बचाने के लिए हिन्दू अपने प्राणों की आहुति देने में भी न हिचकेंगे। (उठते हुए) काट दीजिए मेरा नाम भी अपने क्लब से। (जाने लगती है।)

अमरनाथ—मिस दुर्गा मिस दुर्गा

एक युवक—(उठते हुए) ठीक तो है, खुशामद कीजिए, मुसलमानों की आप लोग।

[दुर्गा नहीं रुकती। दुर्गा का प्रस्थान। यह युवक, शान्तिप्रिय तथा बाक्री के सब लोग भी दुर्गा के पीछे-पीछे जाते हैं। अमरनाथ अकेला रह जाता है। कुछ देर निस्तब्धता। कुछ देर चुपचाप खड़े रहने के बाद अमरनाथ धीरे-धीरे टहलने लगता है।]

अमरनाथ—(टहलते-टहलते) जिन जिन जहाँनारा और शान्तिप्रिय में इतना प्रेम था, उन्हीं की यह यह हालत ! (कुछ रुककर) इस देश के नौजवानों की भी यह यह दशा ! (कुछ रुककर) और और जो बड़े लम्बे-चौड़े आर्थिक सिद्धान्तों को वधार रहे थे, उनका उनका तक यह रवैया ! (अपनी कुर्सी पर बैठकर दोनों कुहनियों को टेबिल पर रख अपना सिर अपने दोनों हाथों पर रख लेता है। कुछ देर बाद एकाएक हाथ हटाकर, टेनिसकोर्ट की ओर देख) टेनिसकोर्ट ! टेनिसकोर्ट ! इस इस टेनिसकोर्ट ने एक देश का भाग्य बदला था ! फ्रांस की एक बड़ी भारी क्रान्ति इसी प्रकार के किसी टेनिसकोर्ट पर शुरू हुई थी ! आज ही मुस्लिम लीग का पाकिस्तान का प्रस्ताव ! (एकाएक उठकर जिस टेबिल पर अखबार रखे हैं, उसके नजदीक जा, एक अखबार उठाकर उसे देखते हुए) सूडेटन जर्मनों के प्रस्तावों में और इस प्रस्ताव में कितनी समानता है ! और आखिर हो क्यों न ? पृथक्करण का यह विचार ही वहाँ से आया है ! (टेनिसकोर्ट को देखते हुए) फ्रांस का टेनिस-

कोर्ट ! सूडेटन जर्मनों के प्रस्ताव ! इस देश के नवयुवक !
(ऊपर की तरफ देख) हे भगवन् ! इस इस देश के भाग्य में और
क्या क्या-क्या बढ़ा है

लघु यवनिका

दूसरा दृश्य

स्थान—दिल्ली में जहाँनारा के बँगले का बरामदा

समय—प्रातःकाल

[बरामदा आधुनिक ढंग का बना है। बरामदे के बाहर बगीचे का थोड़ा-सा भाग दिखायी देता है। बगियारियों में गुलाब खूब फूले हुए हैं। बरामदे के भीतर की तरफ दरवाजों में से कुछ आधुनिक सजे हुए कमरों के हिस्से दिख पड़ते हैं। बरामदे में बेत का बना हुआ फर्नीचर है और एक महाराज के बीच में पीतल का पिंजरा। पिंजरे में ख़ाक़ी रंग का, जिसकी पूंछ लाल है, अफ़रीकी तोता है। जहाँनारा खड़ी हुई तोते से बातें कर रही है।]

जहाँनारा—हाँ, ...हाँ, नहीं रह सकता अब तेरा नाम गंगाराम !

तोता—गंगाराम !

जहाँनारा—हरगिज़ हरगिज़ गंगाराम नहीं। शुबराती, सुना, शुबराती तेरा नया नाम है। अफ़्रिका का है तू। वहाँ के सारे हब्सी मुसलमान हो गये हैं। तेरा नाम शुबराती होने पर, मुमकिन है, यहाँ के सारे हिन्दू भी धीरे-धीरे . . .

तोता—टर् ! टर् ! टर् !

जहाँनारा—हाँ, कर, कर कोशिश शुबराती कहने की। इसी तरह कोशिश कर-करके तो तू सीखा था कहना गंगाराम।

तोता—गंगाराम !

जहाँनारा—फिर गंगाराम ! ज़िद करता है ! (कुछ रुककर) देख, गंगाराम . . . अररर ! मेरी ज़बान भी फिसलती है। देख, शुबराती, तू है मुसलमान ! मुसलमान का नाम कहीं हो सकता है, गंगाराम ?

तोता—गंगाराम !

जहाँनारा—(मुस्कराकर) हो सकता है गंगाराम। (कुछ रुककर) नहीं, नहीं, शुबराती, कभी . . . कभी नहीं हो सकता। गंगाराम हिन्दू का नाम होता है, मुसलमान का नहीं। हिन्दू और मुसलमान में फ़र्क़, बहुत फ़र्क़ है, बहुत बड़ा फ़र्क़, ज़मीन और आसमान का फ़र्क़। हमारा मज़हब, ज़बान, तहज़ीब, सब कुछ अलग, हिन्दुओं की अलग। हम एक क्रौम के वह दूसरी के। और कितना . . . कितना जुल्म करने पर कमर कसी है हिन्दुओं ने हमारी क्रौम पर ! अरे ! यह हिन्दू इस मुल्क में हमारा नामोनिशान मिटा देना चाहते हैं, नामोनिशान ! (कुछ रुककर) मेरी समझ में भी पहले कहाँ आता था, हिन्दू-मुसलमानों का यह फ़र्क़ ! शान्तिप्रिय मुझे भाई . . . भाई ही क्या, भाई से भी कहीं ज्यादा, कहीं-कहीं ज्यादा मालूम होता था; नज़दीक रहने पर ही नहीं, दूर रहने पर भी। . . . उसकी ग़ैरहाज़िरी में उसकी पैदाइश, उसका बचपन, उसका खेल-कूद, उसका पढ़ना-लिखना, न जाने क्या-क्या, हाँ, हाँ, न जाने क्या-क्या याद आता था और उसके साथ के बाद दुनिया में किसी चीज़ की भी ज़रूरत महसूस न होती थी।

तोता—अवर लाइफ़ इज़ ए रेग्यूलर फ़्रीस्ट !

जहाँनारा—(मुस्कराकर) हाँ, शान्तिप्रिय और मेरे साथ की ज़िन्दगी के मुताल्लिक ही मैं इस फ़िक्ररे को कहा करती हूँ और तूने भी उसे सीख

लिया है। लेकिन....लेकिन अन्धी, हाँ, अन्धी थी मैं अब तक !
 (कुछ रुककर, विचारते हुए) पर....पर अभी....अभी भी जहाँ तक शान्तिप्रिय का सवाल है, कहाँ नज़र आता है, कहाँ महसूस होता है मुझे उसमें और अपने में कोई फ़र्क़।....यहाँ तो वह मेरे हाथ का खाना भी खाता है।....अरे ! दिल्ली में वकालत ही मैंने शुरू की उसी की पढ़ाई खत्म न होने की वजह से।....मुल्क की खिदमत का मेरा तमाम प्रोग्राम ही रुका रहा उसकी पढ़ाई खत्म होने के लिए। (कुछ रुककर) पर कैसे....कैसे चल सकता है अब खिदमत का यह मिला हुआ प्रोग्राम ! शान्तिप्रिय ने भी तो कल की बहस में दुर्गा का ही साथ दिया। (फिर कुछ रुककर) और मैंने (फिर कुछ रुककर) और मैंने ?

तोता—गंगाराम !

जहाँनारा—गंगाराम नहीं, शुबराती।

तोता—टर् ! टर् ! टर् !

जहाँनारा—हाँ, इसी तरह कोशिशकर शुबराती कहने की। मैं भी तो कोशिश कर-करके ही समझ रही हूँ, हिन्दू-मुसलमानों के इस फ़र्क़ को; और अभी....अभी भी पूरा समझ में नहीं आया है, तभी, हाँ, तभी तो शान्तिप्रिय के लिए वैसे ही ख्याल है, और तभी बीच-बीच में ज़बान फिसलकर मुँह से निकल जाता है—गंगाराम !

तोता—गंगाराम !

[बगीचे के एक ओर से पीरबल्लश का प्रवेश। पीरबल्लश को देखकर जहाँनारा पीरबल्लश की तरफ़ बढ़ती है।]

जहाँनारा—बड़ी नवाज़िश हुई आज !

पीरबल्लश—क्यों, इसके पहले क्या कभी आया नहीं ? कभी-कभी तो आ ही जाता हूँ। (क्यारियों के गुलाबों को देखकर) खूब खिले हैं गुलाब, मिस जहाँनारा !

जहाँनारा—जी हाँ, मुझे इस फूल से बड़ी मुहब्बत है। (गुलाबों को देखते हुए) बड़ी दूर-दूर से कलमें लाकर लगायी हैं इनकी मैंने यहाँ पर।

पीरबल्लश—(गुलाबों को ही देखते हुए) जिस तरह आपने एक ज़मीन पर एक गुलाब क्रौम के तरह-तरह के दरस्तों को लगाया है, और उनमें इस तरह खुशनुमा फूल फूले हैं, उसी तरह एक ज़मीन पर एक मुस्लिम क्रौम के अलग-अलग फ़िरकों को लाकर इकट्ठे कर देना है। उनमें भी ऐसी ही बहार आएगी और सारी क्रौम इसी तरह फूल फल उठेगी। (कुछ रुककर) कैसा कैसा वह नज़ारा होगा, मिस जहाँनारा।

जहाँनारा—(गुलाबों को ही देखते हुए विचारपूर्वक) इसमें कोई शक नहीं।

पीरबल्लश—(जहाँनारा की ओर देखकर) और . . . और जिस क़दर यह गुलाब लगाने वाली आपको इन्हें इस शकल में देखकर खुशी हो रही होगी, उसी तरह जो पाकिस्तान कायम करेंगे, उन्हें हमारी क्रौम को उस फूली-फली हालत को देखकर कितनी खुशी होगी !

[दोनों फिर गुलाबों को देखने लगते हैं। कुछ देर निस्तब्धता।]

जहाँनारा—अच्छा, चलकर तशरीफ़ तो रखिए।

[दोनों बरामदे में आकर कुर्सियों पर बैठते हैं।]

तोता—चित्रकोट के घाट पै भई सन्तन की भीर !

पीरबल्लश—(तोते की तरफ़ देखकर, जहाँनारा की ओर देखते हुए) अच्छा, यह तोता आपने किसी हिन्दू से लिया है ?

जहाँनारा—(सकुचते हुए) जी जी नहीं।

पीरबल्लश—तो तो यह चित्रकोट, सन्त वगैरह आपने इसे सिखाया है ?

जहाँनारा—(और सकुचते हुए) क्या . . . क्या कहूँ ?

पीरबल्लश—ओ ! समझा, उस शान्तीप्रिये ने सिखाया होगा ?

जहाँनारा—(और संकोच से) जी नहीं, सिखाया तो मैंने ही है।

तोता—गंगाराम।

पीरबख्श—(फिर तोते की तरफ़ देख, जहाँनारा की ओर देखते हुए)
और यह गंगाराम इसका नाम होगा ?

जहाँनारा—जी हाँ।

पीरबख्श—ओह ! यह गंगा और यह राम ! गंगा पाक दरिया। इन हिन्दुओं में मरे हुए की हड्डियाँ भी गंगा में बहा देने से वह बिहिश्त को पहुँच जाता है। और राम तो खुदा ही ठहरा ! कैसी जाहिल क्रौम है। अन सिविलाइज्ड ब्रूट्स ! और और हमारे घरों के तोतों के नाम भी गंगाराम रखे जाते हैं। उन्हें चितरकोट के शेर सिखाये जाते हैं। कहाँ कहाँ जा रही है यह मुस्लिम क्रौम !

जहाँनारा—(सकुचाते हुए, पर कुछ साहस से) लेकिन लेकिन, मिस्टर पीरबख्श, यह तो बहुत छोटी-छोटी बातें हैं। इनसे मुस्लिम क्रौम की तरक्की और तनज़ुली नहीं जाँची जा सकती।

पीरबख्श—छोटी ! इन्हें आप छोटी बातें समझती हैं ? इन्हीं इन्हीं छोटी-छोटी कही जाने वाली बातों से क्रौम के रवैये का पता लगता है। मिस जहाँनारा, हिन्दुओं का कितना असर मुसलमानों पर पड़ा है और पड़ रहा है, इसे तोलने के लिए इसी तरह की चीज़ें तराजू का काम देती हैं। आखिर क्रौम क्या है ? इन्सानों की जमात ही तो क्रौम है न ?

जहाँनारा—जी हाँ, सो तो है ही।

पीरबख्श—और इन्सान बनते हैं जैसे उनके खानदान होते हैं।

जहाँनारा—हाँ, यह भी ठीक है।

पीरबख्श—जिन खानदानों के जानवरों और परिन्दों पर भी हिन्दू तहज़ीब का इतना असर है, उनके बच्चों पर कितना होगा ?

[जहाँनारा कुछ नहीं कहती। उसका सिर झुक जाता है। पीरबख्श उसकी ओर देखता रहता है। कुछ देर सन्नाटा।]

पीरबख्श—यह न सोचिए कि आप ही के यहाँ का यह हाल है। ज्यादातर मुस्लिम-खानदानों की यही हालत है। कल मिस दुर्गा ने ठीक कहा था। शकों और हूणों का जो हाल हिन्दुओं ने किया, वही यह मुसलमानों का करना चाहते हैं। वह तो हमारी खुशकिस्मती थी कि औरंगजेब पैदा हो गया। दारा बादशाह न हो सका। अंग्रेज यहाँ आ गये। जुदागाहिना इन्तेखाब कायम हो गये। तालिबेइल्म होते हुए भी चौधरी रहमत अली ने राउन्ड टेबिल कान्फरेन्स के मुस्लिम मेम्बरान के सामने मुल्क की तक्सीम के इस मामले को एक ठीक शक्ल में रखा और उस वक्त चाहे रहमतअली की तजवीज पर उन मेम्बरान ने कोई खास दिलचस्पी न दिखायी हो लेकिन ठीक वक्त मुस्लिमलीग ने दो क्रीमों के उसूल और पाकिस्तान की स्कीम को पेश कर दिया, नहीं तो सचमुच ही हम कहीं के न रहते।

तोता—आवर लाइफ़ इज ए रेग्युलर फ्रीस्ट !

पीरबख्श—(तोते की ओर देखकर, फिर जहाँनारा की तरफ़ देखते हुए कुछ मुस्कराकर) अच्छा, यह अंग्रेजी भी बोलता है ?

जहाँनारा—जी हाँ, कुछ यों ही।

पीरबख्श—पर अरबी, फ़ारसी न बोलता होगा; क्यों ?

[जहाँनारा कोई उत्तर नहीं देती। उसका सिर फिर झुक जाता है। कुछ देर निस्तब्धता।]

पीरबख्श—माफ़ कीजिएगा, अगर एक बात कहूँ ?

जहाँनारा—आपको माफ़ी माँगने की जरूरत नहीं, मिस्टर पीरबख्श। जिस शख्स ने मुझे फ़र्ज अदा करने का ठीक रास्ता दिखा दिया, वह मुझे सब कुछ कहने का हक़ रखता है।

पीरबल्लश—शुक्रिया ! शुक्रिया ! मैं कह यह रहा था कि दरअसल उस शान्तीप्रिये का आप पर बहुत असर पड़ा है ।

जहाँनारा—ऐसा ? (विचारते हुए) ऐसा तो नहीं है कि उसीका मुझ पर असर पड़ा हो ; मेरा भी उस पर कम असर नहीं है ।

पीरबल्लश—आपका उस पर असर ! मुसलमानों का उनकी कूवत के सबब चाहे जो असर पड़े, पर ऐसे कभी कोई असर हिन्दुओं पर पड़ सकता है ? अरे ! उन्होंने तो हमारा माशरती बाँयकाँट करके रखा है ।

जहाँनारा—माशरती बाँयकाँट !

पीरबल्लश—जी हाँ, पूरा-पूरा माशरती बाँयकाँट । देखिए खाना-पीना पहली माशरती चीज़ है न ?

जहाँनारा—(विचारते हुए) जी हाँ ।

पीरबल्लश—मुसलमानों के हाथ का न खाना उन्होंने एक मज़हबी सवाल बना लिया है । कई हिन्दू ऐसे हैं जो मुसलमानों को छूकर नहाते हैं । अरे ! कुछ तो ऐसे भी हैं कि जिनसे मिलने अगर कोई मुसलमान जायें तो जिस कमरे में मुलाकात हो, वहाँ की बिछावत, फ़र्नीचर और कमरा धुलवाते हैं । क्यों सच है, या नहीं ?

जहाँनारा—है तो सच ।

पीरबल्लश—आप ही मुझसे कहती थीं कि दिल्ली आने के पहले शान्तीप्रिये ने भी आपके हाथ का खाना न खाया था ।

जहाँनारा—हाँ, यह भी सच है ।

पीरबल्लश—तब भला, उस पर आपका क्या असर हो सकता है ?

[फिर कुछ बेर निस्तब्धता ।]

तोता—चित्रकूट के घाट पे भई सन्तन की भीर ।

तुलसिदास चन्दन घिसें तिलक देत रघुबीर ।

पीरबल्लश—(हँसते हुए) और आप पर उसका कितना असर है, इसका सबूत यह तोता है । बस, इतनी ही कसर रह गयी है कि आप बुत-

परस्ती और शुरू कर दें। एक राम की मूरत बनवायें, चन्दन घिसें और उसका पूजन शुरू करें।

[जहाँनारा जल्दी से उठती है। तोते के पिंजरे को उतारकर अन्दर ले जाती है और खाली हाथ शीघ्रता से वापस लौट आती है।]

जहाँनारा—उस निगोड़े तोते का नाम तो मैंने आज ही बदलकर शुबराती रख दिया है। उसे नयी-नयी दूसरी चीजें सिखाऊँगी और न सीखा तो....

पीरबल्लश—खैर, न सीखा तो.... हम मुसलमान तोता तो खाते नहीं, किसी ऐसे शरूस को दे दीजिएगा जिसके दस्तरख्वान के काम आ जाए। पर सवाल तोते का नहीं है, मिस जहाँनारा, सवाल है हमारी ज़िन्दगी के तमाम पहलुओं पर पड़ते हुए हिन्दुओं के असर का; और इसे अब तक हम समझ भी नहीं रहे हैं। आप जानती ही हैं कि मुस्लिम लीग तमाम मुसलमानों की जमात होनी चाहिए, उस तक के कई मुसलमान खिलाफ़ हैं।

जहाँनारा—हाँ, हाँ, अच्छी तरह जानती हूँ; दो क़ौमों के उसूल और पाकिस्तान की कई मुसलमान ही मुखालफ़त कर रहे हैं; और इनमें ज्यादातर हैं कांग्रेसी।

पीरबल्लश—फिर ज़्यादा तादाद उनकी है, जो समझते ही नहीं हैं कि दरअसल हालात क्या हैं। हमें तमाम मुस्लिम क़ौम को मुस्लिम लीग के हमख़याल बनाने की कोशिश करनी है। हमें उसे समझाना है कि कांग्रेस से ज़्यादा बड़ी उसकी दुश्मन कोई दूसरी जमात नहीं।

जहाँनारा—(बिचारते हुए) बहुत-सा भगड़ा तो हमारे बीच कांग्रेस ने ही मचवा दिया है।

पीरबल्लश—यही तो हमें अपने भाइयों को समझाना है; और फिर समझाना है यह कि अगर हम ज़िन्दा रहना चाहते हैं, इस्लाम और मुस्लिम तहज़ीब को बचाना चाहते हैं, तो हमें हिन्दुओं के इस असर से बाहर निक-

लना होगा, पाकिस्तान कायम करा अपनी क़ौम को उस हिस्से में फुलवाना और फलाना होगा ।

जहाँनारा—और इसके लिए अपनी तमाम ज़िन्दगी और जान को भी क़ुर्बान करने को तैयार होना होगा ।

पीरबख़्श—बेशक, क्योंकि मुसलमानों के मज़हब, ज़बान, तहज़ीब हर चीज़ की तरक्की सिर्फ़ मुस्लिम हुकूमत की मातहत में ही हो सकती है; और किसी भी हुकूमत के साये में नहीं । जब दारउल इस्लाम नहीं तब दारउल हरब ही रहता है ।

जहाँनारा—और किसी भी एक मुल्क में मुसलमानों की इतनी तादाद नहीं, जितनी इस मुल्क में है ।

पीरबख़्श—लेकिन लेकिन इस मुल्क के मुसलमानों पर इस्लाम, मुसलमानी तहज़ीब से ज़्यादा हिन्दू मज़हब, हिन्दू तहज़ीब का असर है । यहाँ के मुसलमान दरअसल पच्चीस परसेन्ट मुसलमान और पचहत्तर परसेन्ट हिन्दू हैं ।

[दोनों एक दूसरे की ओर देखते हैं ।]

लघु यवनिका

तीसरा दृश्य

स्थान—दिल्ली के “क्वीन्स गार्डन” का एक हिस्सा

समय—सन्ध्या

[एक तरफ़ एक होज़ में एक फ़व्वारा चल रहा है । उसके निकट फूलों की कुछ ब्यारियाँ हैं । दूसरी ओर दूब के मैदान का कुछ भाग दिखायी देता है । मैदान में बैठने के लिए कुछ बेंचें पड़ी हैं । पीछे की तरफ़ दूर पर “क्वीन्स गार्डन” की इमारत का कुछ हिस्सा और विक्टोरिया की मूर्ति

दिखायी देती हैं। एक बेंच पर शांतिप्रिय बैठा हुआ सामने की ओर देख रहा है।]

शांतिप्रिय—रबी ! रबी ! . . . रबी . . . रबी . . . रबी . . . तु . . . तु . . . तु . . . तु . . . तु . . .

[एक सुन्दर कुतिया दौड़ती हुई शांतिप्रिय के पास आ जाती है और अपने सामने के दोनों पैर शांतिप्रिय के दोनों घुटनों पर रख, जीभ निकाल हाँफती और दुम हिलाती है।]

शांतिप्रिय—रबी, इस तरह दूर नहीं जाना पड़ता, सुना . . . सुना, माई डियर रबी ! (कुछ रुककर) जिस तरह जहाँनारा मुझे अकेला छोड़कर अपने साथियों के साथ चल दी, उसी तरह तू भी क्या किसी दिन मुझे अकेला छोड़, अपने साथियों के साथ चल देगी ? (ध्यान से कुतिया की ओर देखते हुए) अरे ! उसे तो कल इतना ख्याल भी न आया, कि मुझे अपनी मोटर में लायी है, इसलिए मुझे घर पहुँचा देना भी उसका फ़र्ज है।

कुतिया—भों ! भों ! भों !

शांतिप्रिय—हाँ, इसी तरह भोंकता हुआ पीरबख्श चला, उसके पीछे जहाँनारा और सारे मुसलमान । . . . कैसी अजीब यह क्रौम है ? और कितना एका है इनमें ? . . . कह देने भर की देर है 'इस्लाम इन डेन्जर', चाहे सच हो या भूठ, और सब के सब मुसलमान . . .

[नेपथ्य से—भों ! भों ! भों ! भों ! भों !]

शांतिप्रिय—इसी . . . ठीक इसी तरह जैसे तेरे कान में भों भों की आवाज़ पड़ते ही तू सब कुछ भूलकर सिर्फ़ वही भों भों सुनती

[नेपथ्य से—भों ! भों ! भों ! भों ! भों !]

कुतिया—(सामने की तरफ़ ही देखते हुए) भों ! भों ! भों ! भों ! (सामने की ओर दौड़ती है।)

शांतिप्रिय—और अपने गिरोह में मिलने के लिए दौड़ती....
(सामने की तरफ देखते हुए खड़े होकर) रुबी ! रुबी ! रुबी....
रुबी.... रुबी.... रुबी.... तु.... तु.... तु.... तु.... तु....

[कुतिया लौट आती और शांतिप्रिय के पैरों पर पंजों और सिर को रगड़ते हुए द्रुम हिलाती है ।]

शांतिप्रिय—तू लौट तो आयी, लेकिन 'इस्लाम इन डेन्जर' सुनते ही जहाँनारा के मानिन्द इन्सान भी किसी पुरानी चीज की तरफ लौटने की बात नहीं करते । कहाँ.... कहाँ गयी मुझ पर की उसकी वह सारी मुहब्बत । ... मेरी पैदाइश, मेरे बचपन, मेरे खेलने-कूदने, मेरे पढ़ने-लिखने के वे पुराने क्रिस्से; (कुछ रुककर) हाँ, हाँ, वे क्रिस्से—क्रिस्से ही रह गये ।

कुतिया—भों ! भों ! भों !

शांतिप्रिय—पीरबख्श की भों भों में भूल गयी वह उन तमाम क्रिस्सों को; क्यों ? (कुछ रुककर) यहाँ मैं बुलवाया गया था अपने मुल्क और यहाँ रहने वालों को पहचानने के लिए, ज़िन्दगी का अपना मक़सद तय करने के लिए । हम लोगों ने मुल्क की खिदमत का एक मुत्तफ़िका प्रोग्राम बनाया था । (कुतिया को गोद में उठाकर, उसका मुँह देखते हुए) कितनी.... कितनी मर्तबा मैं, रुबी, तुझ से उस प्रोग्राम के मुताल्लिक़ बातें किया करता था, और कितना.... कितना जोश था हमारे दिलों में उस प्रोग्राम के लिए, याद है न ?

कुतिया—भों ! भों ! भों !

शांतिप्रिय—हाँ, याद है; तू भला कभी मेरी कोई चीज़ भूल सकती है ? अरे ! हमने शादी तक न कर उस प्रोग्राम को अमल में लाने का फ़ैसला किया था । मेरी पढ़ाई ख़त्म होते ही हमारा काम शुरू होने वाला था और.... और मुझे एम० ए० पास किये देर न हुई कि....

(कुछ रुककर) कुछ दिनों से जहाँनारा के रख में फ़र्क़ जरूर पड़ रहा था, पर कल कल तो

कुतिया—भों ! भों ! भों !

शान्तिप्रिय—हाँ, पीरबख़्श की भों भों का ऐसा असर हुआ कि मैं तो दंग रह गया । (कुछ रुककर) पर मैंने ही उसे क्यों न रोका ?

कुतिया—भों ! भों ! भों !

शान्तिप्रिय—मुझ पर मुझ पर भी दुर्गा की भों भों का असर था । (कुछ रुककर) लेकिन इसके सिवा और हो ही क्या सकता

[दुर्गा का प्रवेश । दुर्गा को देख शान्तिप्रिय कुतिया को गोद से उतार दुर्गा की ओर बढ़ता है । दोनों हाथ मिलाते हैं ।]

दुर्गा—अच्छा, आज आप अकेले ही ? मिस जहाँनारा कहाँ हैं ?

शान्तिप्रिय—(मुस्कराते हुए) क्यों, क्या मेरा अकेला रहना कोई ताज्जुब की बात है ?

दुर्गा—(मुस्कराते हुए) अवश्य, जहाँ मिस जहाँनारा, वहाँ मिस्टर. शान्तिप्रिय, और जहाँ मिस्टर शान्तिप्रिय वहाँ मिस जहाँनारा । उनकी पढ़ाई समाप्त होने पर भी जब तक आप पढ़ते रहे कदाचित् ही कोई दिन गया हो, जब कि वे कालेज न आयी हों और स्वयं वकालत न करने पर भी कोई दिन ही जाता होगा, जब आप कचहरी न जाते हों ।

शान्तिप्रिय—(लंबी साँस लेकर) लेकिन अब ऐसा न होगा, मिस दुर्गा ।

दुर्गा—(कुछ आश्चर्य से) क्यों, कोई भगड़ा हो गया ?

शान्तिप्रिय—(दीर्घ निश्वास छोड़ते हुए) नहीं, नहीं, भगड़े की कोई बात नहीं, लेकिन लेकिन

दुर्गा—कोई न कोई बात तो अवश्य जान पड़ती है । (शान्तिप्रिय का हाथ पकड़, बेंच पर उसे बिठाते और स्वयं बैठते हुए) अच्छा, बैठिए, बैठकर बातें हों ।

कुतिया—भों ! भों ! भों !

दुर्गा—(कुतिया की ओर देखते हुए) क्यों काटेगी क्या ?

शान्तिप्रिय—(कुतिया के सिर पर हाथ फेरते हुए) नहीं, नहीं, यह तो बहुत सीधी है ।

दुर्गा—अच्छा, अब बताइए, मिस जहाँनारा से भगड़ा क्यों हुआ ?

शान्तिप्रिय—भगड़ा कहाँ हुआ, मिस दुर्गा ?

दुर्गा—तब ?

शान्तिप्रिय—कुछ नहीं, जब राय में तफ़ावत होती है तब वैसा मेल-जोल नहीं रहता ।

दुर्गा—ऐसा ! हाँ, यह तो कुछ दिनों से दिख रहा था, कल स्पष्ट हो गया, जब वे पीरबख्श के साथ उठकर गयीं ।

शान्तिप्रिय—उनके उसूलों में अगर फ़र्क पड़ा है तो मेरे उसूलों में भी तो, मिस दुर्गा । मैंने भी तो कल बहस में आपका साथ दिया और फिर आपके साथ ही क्लब छोड़कर चला भी आया । अब अगर मिस जहाँनारा और पीरबख्श का साथ रहेगा तो मिस दुर्गा और शान्तिप्रिय का ।

दुर्गा—(प्रसन्नता से) आप सदृश साथी को पाकर मैं अपने को धन्य मानती हूँ ।

शान्तिप्रिय—‘धन्य’ कहकर तो आप मुझ पर बड़ा वज्रन लाद रही हैं ।

दुर्गा—कभी नहीं, मैं जो कुछ कहती हूँ, समझ-बूझकर ही कहती हूँ; और मुझे दुख यही है कि ‘धन्य’ से बड़ा और कोई शब्द मुझे मिल नहीं रहा है, नहीं तो मैं उसका उपयोग करती । कल जब आपने वाद-विवाद में मेरा साथ दिया और अन्त में मेरे साथ उठकर चले आये, तब मुझे जो प्रसन्नता हुई, वह मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकती, परन्तु मुझे एक भय था ।

शान्तिप्रिय—कौन-सा ?

दुर्गा—यह कि आपका वह सारा कार्य क्षणिक आवेश ही न हो । आज उसमें स्थायित्व देखकर मेरे आनन्द की सीमा नहीं है ।

शान्तिप्रिय—लेकिन, मिस दुर्गा, आपको इस साथ से कोई फ़ायदा भी होगा ?

दुर्गा—मुझे ही नहीं, समस्त हिन्दू जाति को इससे लाभ पहुँचेगा; और कितना लाभ पहुँचेगा, इसकी आज कल्पना भी नहीं की जा सकती । आपके सदृश विद्वान, चरित्रवान व्यक्ति के संग को पाकर आज तो मैं ही अपने को धन्य मानती हूँ, पर . . . पर वह समय समीप है, जब सारी हिन्दू जाति आपके कारण अपने को धन्य मानेगी । और इसका कारण है ।

[शान्तिप्रिय कोई उत्तर न देकर प्रश्न-सूचक दृष्टि से दुर्गा की ओर देखता है ।]

दुर्गा—इसका कारण यह है कि आज हिन्दू जाति पर जैसा संकट आया है, वैसा उसके इतिहास में इसके पहले कभी न आया था ।

शान्तिप्रिय—(उत्सुकता से) ऐसा ?

दुर्गा—हाँ, इस बात के लिए मैं आपको प्रमाण देती हूँ । आप यह तो जानते ही हैं कि मैंने यदि किसी विषय का अध्ययन करने का प्रयत्न किया है तो हिन्दू-धर्म का, हिन्दू-इतिहास का, हिन्दू-सभ्यता और संस्कृति का, हर ऐसी वस्तु का जिससे हिन्दुओं का प्रत्यक्ष या परोक्ष, किसी न किसी प्रकार का सम्बन्ध है ।

शान्तिप्रिय—आप मेरे साथ ही पढ़ी हैं इस बात को मैं भूला नहीं हूँ ।

दुर्गा—यही कारण है कि मैं बी० ए० में फ़ेल होते-होते बची और एम० ए० में मुझे तीसरी श्रेणी मिली ।

शान्तिप्रिय—आप निसाबी किताबें पढ़ती ही नहीं थीं ।

दुर्गा—कैसे पढ़ती, शान्तिप्रिय जी, जिस जाति में जन्म लिया है, हृदय तो उसकी दशा के कारण आठों पहर जला करता था ।

शान्तिप्रिय—धन्य है आपका दिल, जो क्रीम के लिए इस तरह जलता था और आज भी जला करता है ।

दुर्गा—(मुस्कराकर) धन्य कहकर आप कदाचित् मुझे बदला चुका रहे हैं ।

शान्तिप्रिय—(गम्भीरता से) नहीं, मिस दुर्गा, सचमुच आप और वे सभी धन्य हैं, जिनके दिलों में क्रीम के लिए इतनी मुहब्बत है ।

दुर्गा—अब आप भी उन्हीं में से एक हो जायेंगे । (कुछ रुककर) तो . . . तो मैं आपको इसके प्रमाण देती हूँ कि जैसा संकट हिन्दू जाति पर आज आया है, वैसा इसके पहले कभी न आया था । इस जाति पर अब तक जितने संकट आये हैं उनका कारण था अन्य जातियाँ ही न ? देश के बाहर के आक्रमण ही तो ?

शान्तिप्रिय—(विचारते हुए) हाँ, और क्या ?

दुर्गा—पर आज हिन्दू ही हिन्दुओं की आपत्तियों का कारण हैं । हिन्दुओं पर हिन्दुओं का ही आक्रमण हुआ है ।

कुतिया—भों ! भों ! भों !

दुर्गा—(कुतिया की ओर देखकर) यह जिस प्रकार भोंक रही है न, उसी प्रकार हिन्दू-धर्म, हिन्दू-संस्कृति पर आज हिन्दू ही भोंक रहे हैं ।

शान्तिप्रिय—(विचारते हुए) हाँ, यह तो सच है ।

दुर्गा—(कुछ उत्साह से) हिन्दुओं को अपने धर्म और संस्कृति पर विश्वास नहीं है, इतना ही नहीं, वे अपनी हर वस्तु की जड़ खोदकर उसे बहा देना चाहते हैं ।

शान्तिप्रिय—अच्छा ।

दुर्गा—एक ही दृष्टान्त देती हूँ । 'आप जानते हैं पशु से मनुष्य को पृथक करने वाली सबसे पहली वस्तु है उसकी भाषा । इसीलिए हर संस्कृति में भाषा का पहला स्थान है ।

शान्तिप्रिय—हाँ, इसीलिए फ़तह करने वाले फ़तह होने वालों पर अपनी भाषा लादते हैं ।

दुर्गा—ठीक । हमने पहले अपनी भाषा पर ही कुल्हाड़ा चलाना आरम्भ किया है ।

शान्तिप्रिय—कैसे ?

दुर्गा—हिन्दी संस्कृत से निकली है । संस्कृत शब्दों का उसमें रहना एक स्वाभाविक बात है । हिन्दी का एक परिमार्जित रूप हो गया है । अब हम उसके संस्कृत शब्द चुन-चुनकर निकाल रहे हैं और उनका स्थान दे रहे हैं अरबी और फ़ारसी के शब्दों को । हिन्दोस्तानी भाषा बनायी जा रही है, जैसे भाषा कोई बनाने की वस्तु हो ।

शान्तिप्रिय—(विचारते हुए) हाँ, यह तो हो रहा है ।

दुर्गा—भाषा का तो मैंने एक दृष्टान्त दिया है । हर बात में यही हो रहा है । हमारे पूर्वजों ने बाहर से आने वालों को या तो अपने में विलीन कर लिया, या उनसे असहयोग किया । शक, हूण हममें विलीन हो गये ।

शान्तिप्रिय—बिल्कुल ।

दुर्गा—मुसलमानों से हमने असहयोग किया और साधारण असहयोग नहीं, कड़े से कड़ा असहयोग ! आप यदि इस देश के प्राचीन इतिहास को ध्यानपूर्वक देखें तो आपको ज्ञात हो जायगा कि हमारे यहाँ खाने-पीने की जो छुआछूत दीख पड़ती है, वह मुसलमानों के भारत में आने के पूर्व न थी ।

शान्तिप्रिय—अच्छा ।

दुर्गा—मुसलमानों के साथ हमारा किसी प्रकार का भी सम्पर्क न रहे, इसीलिए सामाजिक-व्यवहार की जो पहली वस्तु—खाना-पीना है, उसे हमने धार्मिक रूप दे दिया ।

शान्तिप्रिय—(विचारते हुए) लेकिन यह छुआछूत तो हिन्दू-हिन्दुओं के बीच में भी है ।

दुर्गा—यह तो पीछे से हुआ । देश बहुत बड़ा है, आवागमन के जैसे सुविधे आज हैं, वैसे पहले न थे, इसलिए किसी हिन्दू दिख पड़ने वाले मुसलमान से भूलकर भी खान-पान न हो जाय, इससे पूर्ण परिचित व्यक्ति के अतिरिक्त किसी के भी हाथ का हिन्दुओं ने खाना ही छोड़ दिया था । धीरे-धीरे छुआछूत के प्रधान उद्देश्य को हम भूल गये और आपस में भी छुआछूत आ गयी । यथार्थ में इसका जन्म हुआ था मुसलमानों से असहयोग के कारण ।

शान्तिप्रिय—ऐसा ?

दुर्गा—जी हाँ, ध्यानपूर्वक देखिए इतिहास और आपको ज्ञात हो जायगा कि जो कुछ मैं कह रही हूँ वह अक्षरशः सत्य है ।

[कुछ बेर निस्तब्धता ।]

दुर्गा—एक देश में एक ही राष्ट्र रह सकता है, यह पीरबख्श सर्वथा ठीक कहता था । एक राष्ट्र के प्रधान लक्षण भी उसने ठीक बताये थे ।

शान्तिप्रिय—याने एक मजहब, एक ज़बान और एक तहज़ीब ?

दुर्गा—जी हाँ । इसलिए पारसी, कुछ पश्चिमी छोटी-छोटी अल्पमत जातियों के सिवा या तो इस देश में हिन्दू रह सकते हैं या मुसलमान । वैदिक, बौद्ध, जैन, सिक्ख, इन सब धर्मों का जन्म हिन्दुस्तान में ही हुआ, अतः ये हिन्दू-धर्म के ही अन्तर्गत हैं । हिन्दी, बँगला, मराठी, गुजराती, तैलगू, तामिल आदि भाषाएँ या तो संस्कृत से निकली हैं या प्राचीन द्राविड़ भाषा से, अतः ये सब हिन्दुस्तान की भाषाएँ हैं । संस्कृति तो हमारी एक है ही । बदरिकाश्रम से रामेश्वर तक और . . . और जगदीशपुरी से द्वारकापुरी तक कहीं भी चले जाइए, हिन्दुओं के त्योहार एक, उनकी रीतियाँ एक-सी, उनके सारे कला-कौशल एक प्रकार के ।

शान्तिप्रिय—हाँ, औरतें सब जगह साड़ियाँ पहनती हैं और मर्द धोती ।

दुर्गा—(मुस्कराकर) ठीक । संयुक्त राष्ट्र और संयुक्त संस्कृति का यह विचार ही भ्रम, महान् भ्रम है । आप जानते हैं, बादशाह अकबर

ने जब 'दीनेइलाही' नामक धर्म निकाला, और राजा मानसिंह से उसे स्वीकार करने के लिए कहा, तब मानसिंह ने उसे क्या उत्तर दिया था ?

शान्तिप्रिय—तारीख मेरा मज़मून नहीं रहा है; बताइए।

दुर्गा—मानसिंह ने कहा कि वे या तो हिन्दू-धर्म जानते हैं, या इस्लाम। बादशाह यदि चाहें तो वे हिन्दू-धर्म छोड़कर इस्लाम ग्रहण करने को प्रस्तुत हैं, परन्तु 'दीनेइलाही' क्या है यह उनकी समझ में नहीं आता।

शान्तिप्रिय—(विचारपूर्वक) ठीक।

दुर्गा—तो या तो आप हिन्दू रहकर अपने धर्म, अपनी भाषा, अपनी संस्कृति की उन्नति कर मुसलमानों को उसमें लीन करने का प्रयत्न कीजिए, और या फिर आप स्वयं उनमें लीन हो जाइए।

शान्तिप्रिय—(विचारते हुए) पर वह सब हममें लीन हो जायँगे ?

दुर्गा—सब न भी हुए तो बहुत से हो जायँगे और थोड़े से रह गये तो वे पारसियों तथा अन्य पश्चिमी जातियों के अल्पमत के सदृश पड़े रहेंगे।

शान्तिप्रिय—(गम्भीरता से विचारते हुए) हाँ, उस वक्त वे इस तरह परेशान तो न कर सकेंगे।

दुर्गा—सर्वथा ठीक कहते हैं आप। (कुछ रुककर) हिन्दू-धर्म में गंगा को क्यों इतना महत्त्व है, जानते हैं आप ?

शान्तिप्रिय—मैंने धर्म भी बहुत कम पढ़ा है; आप ही कहिए।

दुर्गा—गंगा में जो हड्डियाँ पड़ती हैं, वे भी कुछ दिनों में उसके भीतर के पत्थरों का रूप ग्रहण कर लेती हैं। उसमें जो नदियाँ मिलती हैं, उनका पानी भी गंगा के सदृश हो जाता है। इसीलिए तो अपनी बराबर की यमुना को भी अपने में विलीनकर, गंगा, गंगा ही रहकर समुद्र में मिलती है।

शान्तिप्रिय—(प्रसन्नता से) क्या खूब !

दुर्गा—(और भी उत्साह से, फ़व्वारे को देखते हुए) और फिर गंगा की धारा इस फ़व्वारे के सदृश निर्बल नहीं, जिसकी बूंद पृथक-पृथक होकर

कुण्ड में अपना अस्तित्व खो रही हैं। उस धारा में शक्ति है, अपने में गिरने और पड़ने वाली समस्त वस्तुओं को बहा ले जाने का बल।

शान्तिप्रिय—(कुतिया को न देखकर, चारों ओर देख) रुबी ! रुबी !
... रुबी रुबी रुबी तु तु तु तु तु

[कुतिया लौटकर आती और दोनों सामने के पैरों को शान्तिप्रिय के घुटनों पर रख, जीभ निकाल हाँफती और दुम हिलाती है।]

दुर्गा—(कुतिया को देखते हुए) इसका नाम रुबी है ?

शान्तिप्रिय—जी हाँ।

दुर्गा—क्षमा कीजिएगा, यदि एक बात कहूँ।

शान्तिप्रिय—आप को अब किसी बात के कहने में भी मुझसे क्षमा माँगने की जरूरत नहीं।

दुर्गा—धन्यवाद। इसका नाम बदलकर सिंहनी रखिए।

शान्तिप्रिय—सिंहनी ?

दुर्गा—जी हाँ, हिन्दू जाति में आज सबसे अधिक किस बात की आवश्यकता है, जानते हैं ?

शान्तिप्रिय—किस चीज़ की ?

दुर्गा—प्रखरता की, तेज की। आज जो हिन्दू हैं, उन पर इस्लाम और मुस्लिम संस्कृति का इतना प्रभाव है कि वे पच्चीस परसैन्ट हिन्दू रह गये हैं और पचहत्तर परसैन्ट हो गये हैं मुसलमान।

शान्तिप्रिय—आप बिल्कुल ठीक कहती हैं, मैं खुद ही ऐसा हूँ।

दुर्गा—और बिना इस प्रखरता और तेज के हिन्दू अब पूरे हिन्दू नहीं बन सकते। उनके पूरे हिन्दू, तेजस्वी हिन्दू हुए बिना वे, अहिंसा का सिद्धान्त प्रतिपादनकर हिन्दुओं की जड़ को और भी खोखली बनाने वाली, मुसलमानों को प्रसन्न करने के लिए संयुक्त भाषा तथा संयुक्त संस्कृति का दम भरने वाली हिन्दुओं की सबसे बड़ी शत्रु और अधर्मी कांग्रेस का सामना नहीं कर सकते। मैंने कहा न, यह समय हिन्दू-जाति के लिए

सबसे अधिक संकट का है। हिन्दू हिन्दुओं की आपत्ति का कारण है, हिन्दुओं पर हिन्दुओं का ही आक्रमण हुआ है अन्यथा जिस कांग्रेस में हिन्दुओं का बहुमत है, उसका कभी यह ढंग हो सकता था ?

[शान्तिप्रिय कुतिया को पुचकारते हुए दुर्गा की तरफ़ देखता है, दुर्गा शान्तिप्रिय की ओर । कुछ देर सन्नाटा ।]

दुर्गा—और फिर एक बात को कभी न भूलिएगा ।

शान्तिप्रिय—कौन-सी ?

दुर्गा—हिन्दुओं को हिन्दुस्तान के बाहर देखने के लिए और कुछ भी नहीं है, पर जहाँ तक मुसलमानों का सम्बन्ध है, हिन्दुस्थान से लगे हुए कितने मुस्लिम राष्ट्र और देश हैं ।

शान्तिप्रिय—हाँ, हाँ, मुसलमानों का बहदने इस्लामी रुख थोड़े ही गया है ।

दुर्गा—मिश्र की स्वाधीनता, फ़िलिस्तीन के अरबों के आन्दोलन, अल-बानिया के इटली की अधीनता में जाने के समय, सभी अवसरों पर हिन्दुस्थान के मुसलमानों ने इस देश में किसी न किसी प्रकार की हलचल की है ।

शान्तिप्रिय—मैं आपकी कुल नसीहत का एक ही निचोड़ निकालता हूँ । अगर हमें मुसलमान नहीं हो जाना है, इस मुल्क पर फिर से मुस्लिम हुकूमत क़ायम नहीं कराना है, तो हमें हिन्दू महासभा का साथ देकर उसे मज़बूत से मज़बूत जमात बना देना चाहिए ।

दुर्गा—कितना सुन्दर सार निकाला है आपने मेरे कथन का । मैंने कहा ही था कि आप सदृश विद्वान और चरित्रवान साथी को पाकर मैं तो धन्य हो ही गयी, पर वह समय दूर नहीं है जब सारी हिन्दू जाति धन्य हो जायगी ।

[दोनों एक दूसरे की ओर देखते हैं ।]

कुतिया—भों ! भों ! भों !

लघु यवनिका

चौथा दृश्य

स्थान—संयुक्तप्रान्त के उत्तरी छोर पर पंजाब की सीमा से लगे हुए एक गाँव का खेत

समय—तीसरा पहर

[दूर पर गाँव के कुछ भोपड़ों का बाहरी भाग दिखायी देता है। उनके बीच-बीच में कुछ पक्के से मकानों के हिस्से भी दिखते हैं। सबसे ऊँचा मन्दिर का एक शिखर और उसके सामने ही मसजिद की दो मीनारें दिखायी पड़ती हैं। खेत की जमीन से जान पड़ता है कि खेत बोया नहीं जा सका और पड़ गया है। खेत में कुछ हिन्दू, मुसलमान किसान और मजदूर बैठे हुए हैं। उनकी वेष-भूषा पंजाब के किसान-मजदूरों की-सी है और हिन्दू-मुसलमानों की वेष-भूषा में कोई फ़र्क़ नहीं। इनमें कुछ युवकों के बाल और कपड़े शहरातियों जैसे हैं। इन्हीं में महफ़ूज़ख़ाँ है। महफ़ूज़ख़ाँ की उम्र २३-२४ वर्ष की दिखती है। वह गेहूँ रंग का, ऊँचा-पूरा, बलिष्ठ युवक है। जान पड़ता है ये युवक गाँव के होते हुए भी शहर से पढ़-लिखकर गाँव को लौटे हैं।]

एक किसान—भगवान को तो इस बरस दोस नहीं दिया जा सकता।

दूसरा किसान—हाँ, खुदा का इस बरस क्या कसूर, चौधरी ?

तीसरा किसान—ठीक बखत पानी बरसा, न जादा न कमती, मुल्ला जी।

चौथा किसान—और बीच-बीच में ठीक बखत खुला भी रहा, चौधरी।

चौधरी—बैल होते तो (खेत की ओर इशाराकर) इस तरह जमीन पड़ती पड़ जाती ?

मुल्ला—कमायी जाती, बोयी जाती।

पहला मजदूर—हमें भी काम मिलता।

दूसरा मजदूर—हाँ, हमारी भी यह हालत थोड़े ही होती।

तीसरा किसान—पर बीज भी पूरा कहाँ था ?

चौथा किसान—हाँ, परसाल हुआ ही क्या ?

पाँचवाँ किसान—और जो हुआ, वह ले गया जमींदार ।

छठवाँ किसान—बचा हुआ चला गया साहूकार के सूद में ।

सातवाँ किसान—और भी जो बचा था सो सरकारी तकाबी में चला गया ।

आठवाँ किसान—जमींदार और साहूकार को देने के बाद भी मैंने तो बड़ी कोसिस से थोड़ा-बहुत बोन के लिए बचाया था ।

पाँचवाँ किसान—फिर वह कहाँ गया ? तुम्हारी जमीन भी तो पड़ गयी ।

आठवाँ किसान—जब खाने को न रहा, और जब बच्चों का बिलखना न देखा गया, तब खा गये उसे सब मिलकर ।

तीसरा किसान—भई, मेरे पास भी थोड़ा-सा अनाज न बचा हो, यह नहीं, पर बदन ढाँकने को चिथड़े भी न बचे थे, औरतों के पास तक कपड़े न थे । अनाज बेचकर कपड़ा लेना पड़ा; इज्जत तो बचानी ही पड़ती ।

चौथा किसान—और मेरे पास भी थोड़ा-सा न बचा हो, ऐसी बात नहीं, पर तुम सब जानते ही हो, घर में दो-दो खाट बिछी हैं । डाक्टर बैद न सही, पर घर की दवा-दारू में भी पैसा तो लगता ही है । मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक; किसान की दौड़ नाज तक । बचा-खुचा दवाई खा गयी और फिर भी बीमारी में कोई फायदा नहीं, शहर ले जाने की आकात कहाँ ?

छठवाँ किसान—सब एक ही नाव में हैं ।

तीसरा मजदूर—हाँ, सब किसान मजदूर ।

पाँचवाँ किसान—और वह नाव अब चल नहीं सकती ।

चौथा किसान—एक छेद हो तो चले ।

तीसरा किसान—ठीक तो है, जमींदार का छेद, साहूकार का छेद ।

एक युवक—और सरकारी छेद नहीं ?

दूसरा युवक—हाँ, सबसे बड़ा छेद तो वह है जो हमारी नाव में ही नहीं, पर जमींदार और साहूकार की नावों में भी है ।

महफूजखाँ—पर जमींदार और साहूकार न हों तो सरकारी छेद से नाव नहीं डूब सकती ।

पहला युवक—(मुस्कराकर) ये बोले साम्यवादी !

चौधरी—साम्य . . . साम्य . . . क्या कहा तुमने ?

पहला युवक—एक मत निकला है, चाचा, उसे साम्यवाद कहते हैं ।

मुल्ला—कोई मजहब है ?

पहला युवक—नहीं, ताऊ, मजहब नहीं एक . . . क्या कहूँ ?

दूसरा युवक—फिरका है . . . फिरका ।

मुल्ला—फिरका ? क्या कहता है यह फिरका ?

दूसरा युवक—वह इतना थोड़ा थोड़े ही है कि दो-चार फ़िक्रों में समझाया जा सके । पुराण और कुरान से भी बड़ी है इनकी किताबें !

महफूजखाँ—किताबें चाहे पुराण और कुरान से भी बड़ी हों, पर साम्यवाद जो कहता है, वह थोड़े से में, बल्कि एक फ़िक्रों में भी, समझाया जा सकता है; उसी तरह जिस तरह सारी रामायण की राम-कथा—‘आदौ राम तपो वनादि गमनम्’, भागवत की कृष्ण-कथा—‘आदौ देव देवकी गर्भ जन्म’ एक-एक श्लोक में आ जाती है, जिस तरह इस्लाम का तमाम सार—‘लाइलाहिलइल्लाह’ एक कलमे में आ जाता है ।

चौधरी—(मुल्ला से) मुल्ला जी, महफूज शहर से कुछ पढ़कर आया है, ऐसे ही नहीं ।

मुल्ला—(मुस्कराकर) हाँ, मालूम तो यही पड़ता है । मैं भी चाहता था, चौधरी, अपने बच्चे को शहर पढ़ने भेज दूँ, पर कहाँ है पैसा

पढ़ाने को । (महफूजखाँ से) अच्छा, एक फिकरे में बताओ क्या कहता है यह फिरका ?

महफूजखाँ—यह फिरका कहता है, ताऊ, जमींदार नहीं होना, साहूकार नहीं होना, पूंजीपति नहीं होना ।

तीसरा किसान—और होना क्या ?

महफूजखाँ—किसान होना, मजदूर होना, और कम से कम अभी कुछ समय तक सरकार होना ।

पहला मजदूर—मजदूर तो होना न ?

महफूजखाँ—मजदूर ? (कुछ सोचकर) बल्कि एक मजदूर ही होना; साम्यवाद यह कहता है, यह भी कह सकते हो ।

पहला मजदूर—(दूसरे से हाथ मिलाते हुए) देखा, नया फिरका यह कहता है—मजदूर होना, एक मजदूर ही होना, और कोई नहीं ।

तीसरा मजदूर—पर, भाई, मैं तो मजदूर नहीं रहना चाहता । अगर मुझे जमीन मिल जाये, या जैसे मेरे दादा, परदादा, कपड़ा बुनते थे, उस तरह का कोई काम मिल जाये, तो मैं तो मजदूरी छोड़ दूँ ।

महफूजखाँ—यह तुम इसलिए कहते हो, काका, कि साम्यवाद में मजदूरी शब्द का जो मतलब है, वह तुम नहीं समझे । जमीन जोतोगे तो, काम तो करना पड़ेगा न ?

तीसरा मजदूर—काम से मैं जी थोड़े ही चुराता हूँ ।

महफूजखाँ—और कपड़ा बुनोगे, या और कोई भी हुनर करोगे तो भी काम तो करना पड़ेगा ?

तीसरा मजदूर—जरूर ।

महफूजखाँ—जमींदार, साहूकार, पूंजीपति को क्या करना पड़ता है ?

तीसरा मजदूर—(बिचार में कुछ रुककर दूसरे मजदूर की ओर देखते हुए) क्यों, भाई, जमींदार, साहूकार और पूंजीपति को क्या करना पड़ता है ?

दूसरा मजदूर—(विचार में कुछ रुककर, पहले मजदूर की तरफ देखते हुए) बताओ न, भाई, जमींदार, साहूकार और पूंजीपति को क्या करना पड़ता है ?

पहला मजदूर—(विचार में कुछ रुककर, चौधरी से) आप बुजरग हैं, आप बताइए जमींदार, साहूकार और पूंजीपति को क्या करना पड़ता है ।

चौधरी—(विचार में कुछ रुककर, मुल्ला से) मुल्ला जी, आप बताइए—जमींदार, साहूकार और पूंजीपति को क्या करना पड़ता है ?

मुल्ला—(विचारते हुए कुछ रुककर) जमींदार, साहूकार और पूंजीपति को क्या करना पड़ता है ? (कुछ रुककर) क्या . . . क्या करना पड़ता है, कुछ समझ में नहीं आता ।

महफूजखाँ—(हँसते हुए) समझ में क्या आये, ताऊ, कुछ करना पड़ता हो, तब तो समझ में आवे; कुछ नहीं करना पड़ता, मुतलक नहीं । करना सब कुछ पड़ता है किसानों को, मजदूरों को । आप लोग बरसात के मूसलाधार बरसते हुए पानी की परवाह न कर उन्हीं पैरों को, जिनकी उँगलियाँ पानी की नमी से पैदा हुई कँदरियों से सड़ी रहती हैं, दिन भर कीचड़ में रखकर ज़मीन को जोतते हैं, जाड़े की बरफ़ीली ठंडी रातों में शरीर ढाकने के लिए पूरा कपड़ा न होने पर भी काँपते और दाँत कटकटाते हुए फ़सल की रक्षा के लिए न जाने कितनी रातें जागते-जागते बिता देते हैं और गरमी की दुपहरी में तन्दूर-सी तपती हुई धरती पर बिना जूते ही खड़े हो झुलसती हुई लू में अनाज उड़ा-उड़ाकर इकट्ठा करते हैं । कार-ख़ानों में भी आपको अपना खून पसीना बनाकर बहाना पड़ता है । आपके कान लगातार मशीनों की आवाज़ सुनते-सुनते बहरे से हो जाते हैं । आपका स्वर मशीनों के कर्कश स्वर-सा हो जाता है । अरे ! आपके दिल और दिमाग़, ताज़ापन क्या है यह तक भूल जाते हैं । जानवरों की गुफ़ाओं से भी बदतर मकानों में आपको रहना पड़ता है । जिसमें किसी तरह का

भी सत नहीं रहता, ऐसा खाना खाना पड़ता है। इस प्रकार की रहन-सहन के सबब से न जाने कितनी बीमारियाँ आपके पीछे लग जाती हैं और कई तो उन मशीनों में एक के दो, और दो क्या, न जाने कितने, होकर देखते-देखते कट-मर जाते हैं। आप किसान मजदूर काम करते हैं, उन कामों को करते हुए बेशुमार अकथनीय कष्ट उठाते हैं। ज़मींदार, साहूकार, पूंजीपति, कोई भी काम नहीं करते; वे तो आपके काम पर ज़िन्दा रहते हैं, और ज़िन्दा रहते हैं मामूली तौर से नहीं, पर गुलछरें उड़ाते हुए। किस तरह इनका जीवन चलता है—महलों और उद्यानों में, वह आप लोगों में से कौन नहीं जानता? और... और यह होता है आपके गटर के समान घरों में रहते हुए, आपके भूख से तड़पते हुए, आपको चिथड़े भी नसीब न होते हुए, अरे! बीमारी तक में आपको दवा न मिलते हुए! जो हाथों से काम करते हैं, चाहे वह कोई भी काम क्यों न हो, उन्हें साम्यवाद मजदूर कहता है। इन्हीं को जीने का हक है और जो काम नहीं करते, उन्हें वह खत्म कर देना चाहता है; सुना आप लोगों ने, समाप्त।

[महफ़ूज़ख़ाँ का यह लम्बा भाषण सारे समुदाय को स्तब्ध-सा कर देता है। कुछ देर सन्नाटा-सा छा जाता है और सब लोग एक दूसरे का मुँह देखते रहते हैं।]

मुल्ला—और तुमने कहा था न, बेटा, कि यह फिरका कहता है—सरकार होना—

महफ़ूज़ख़ाँ—हाँ; ताऊ, यह फिरका कहता है—फ़िलहाल सरकार होना। पर ऐसी विदेशी लूटने वाली डाकू सरकार नहीं, जिसका काम इस देश का सच्चा खून अर्थ को चूस-चूसकर विलायत को लाल बनाना है, जिसने यहाँ के अन्नदाता किसानों को मुट्ठी-मुट्ठी अन्न के लिए मोहताज कर भिख-मंगा बना दिया है, जिसने यहाँ के उद्योगी कलाकारों में से किसी के अँगूठे कटवा तथा किसी को किसी तरह और किसी को किसी तरह की तकलीफ़ें दे-देकर यहाँ के उद्योग-धन्धों को इसलिए नष्ट किया है कि तरह-तरह के

विलायती माल के लिए यह मुल्क एक अच्छा-सा बाज़ार भर रह जावे । यह लुटेरी और डाकू सरकार यहाँ अगर किसी की सच्ची सरकार है तो इन लुटेरे और डाकू ज़मींदारों, साहूकारों, और पूँजीपतियों की । यह सभी जानते हैं कि 'चोर-चोर मौसेरे भाई' होते हैं । साम्यवाद चाहता है इस देश की सरकार और इस देश में भी मजदूरों की सरकार ।

मुल्ला—ऐसा ?

महफूज़ख़ाँ—जी हाँ, मैं तो हाल ही पढ़कर लौटा हूँ, पर आप लोगों की बातों से मालूम हुआ कि गये साल यहाँ फ़सल अच्छी नहीं आयी ।

चौधरी—अच्छी नहीं क्या, बहुत खराब आयी ।

महफूज़ख़ाँ—और इतने पर भी आप लोगों को लगान देना पड़ा ?

पाँचवाँ किसान—हाँ, ज़मींदार ने पटवारी को कुछ दे-लेकर रपट लिखवा दी कि अच्छी फ़सल आयी; लगान लग गया ।

छठवाँ किसान—और साहूकार भी सूद वसूल कर सके, अदालत डिगरियों की जारी मुलतवी न कर दे, इसलिए उसने कोसिसकर लगान के साथ ही सरकारी तकावी की भी वसूली बुलवा दी ।

महफूज़ख़ाँ—मजदूरों की सरकार यह सब नहीं कर सकती । ज़मींदार और साहूकार तो उस सरकार के ज़माने में रह ही नहीं सकते । फिर जो सरकार आपकी होगी, वह कभी आप पर जुल्म कर सकती है ? सोचिए, आपके हाथ में लगान लगाने और माफ़ करने का इस्तेयार हो तो आप ऐसी साल लगान लगायेंगे ?

बहुत से व्यक्ति—(एक साथ) कभी नहीं, कभी नहीं ।

महफूज़ख़ाँ—बल्कि जिस तरह बिना बैलों के ज़मीन न सुधरी, बीज की कमी के सबब बहुत-सी ज़मीन पड़ गयी, यह सब आपकी सरकार के ज़माने में नहीं हो सकता । कठिनाई के समय इन सब बातों का प्रबन्ध सरकार करेगी; इतना ही नहीं, गये साल पानी न बरसने या कम बरसने से जिस तरह फ़सल न आयी, ऐसा भी न होगा ।

पहला युवक—(हँसते हुए) वह सरकार पानी भी बरसा देगी ।

[कुछ लोग हँसने लगते हैं ।]

महफूजखाँ—पानी न बरसायगी, पर आज भी जिस तरह कई गाँवों को नहरों से पानी मिलता है उसी प्रकार उस सरकार के राज्य में हर गाँव में आबपाशी और इसी तरह के दूसरे सुधार होंगे, जिनकी वजह से खराब फ़सल आने के मौक़े नहीं के बराबर रह जायें; और फिर भी अगर कभी फ़सल बिगड़े ही, तो लोगों को सरकार से हर तरह की सहायता मिलेगी ।

तीसरा मजदूर—और हम मजदूरों का क्या होगा, यह बताओ ?

महफूजखाँ—सबसे पहले तो ये कारख़ाने पूँजीपतियों के न रहकर मजदूरों के हो जायेंगे ।

दूसरा मजदूर—(आश्चर्य से) मजदूरों के हो जायेंगे ?

महफूजखाँ—जी हाँ ।

पहला मजदूर—(विचारते हुए) पर मजदूर तो बहुत हैं, सब के कारख़ाने कैसे होंगे ?

महफूजखाँ—कारख़ाने होंगे सरकार के, और सरकार होगी मजदूरों की । आपको तो अच्छा घर, अच्छा खाना, पहनना, बीमारी के वक़्त इलाज, बच्चों की पढ़ाई, यही सब चाहिए न ?

दूसरा मजदूर—हाँ, हाँ, और क्या ?

महफूजखाँ—मजदूरों की सरकार का पहला कर्तव्य होगा कि वह ये सब बातें देखे ।

तीसरा मजदूर—भाई, मुझे तो खुद अपने लिए कोई वैसा पेशा चाहिए जैसे मेरे दादा, पर दादा करते थे ।

महफूजखाँ—(विचारते हुए) एक-एक व्यक्ति को उस तरह का स्वतन्त्र पेशा देना तो साम्यवाद के उसूलों के खिलाफ़ है ।

चौधरी—पर हम सब की जमीन तो हमारी अलग-अलग ही रहेगी न ?

पहला युवक—नहीं, चाचा, यह भी साम्यवाद के सिद्धान्त के खिलाफ़ है ।

चौधरी—तब क्या होगा ?

पहला युवक—जिस तरह कारख़ाने सरकार के हो जायँगे, उसी प्रकार ज़मीन भी सरकार की हो जायगी ।

पाँचवाँ किसान—तो ज़मींदार की ज़मीन न हुई, वह हो गयी सरकार की; हमें क्या फ़ायदा हुआ ? (उत्तेजना से) ऐसी सरकार हमें नहीं चाहिए ।

सातवाँ किसान—(और उत्तेजना से) हाँ, हाँ, नहीं....नहीं चाहिए ।

महफूज़ख़ाँ—(कुछ चिढ़कर) पर आप लोग एक बात तो समझते ही नहीं ।

छठवाँ किसान—(अधीर होकर) कौन-सी ?

महफूज़ख़ाँ—वह सरकार ही जो आपकी होगी ।

[कुछ देर सन्नाटा ।]

आठवाँ किसान—कहो, भाई ! क्या कहना है पंचों का ?

दूसरा युवक—पर सूत, न कपास, जुलाहों में लठा, लठी । कहाँ है वह सरकार ?

चौधरी—(महफूज़ख़ाँ से) बोल, भाई ।

महफूज़ख़ाँ—उसे स्थापित करना ही तो हम लोगों का काम है ।

मुल्ला—ऐसा ? जैसे अब तक हम सुराज की कोसिस करते थे, उसी तरह अब इस तरह की सरकार कायम करने की कोसिस करें ?

महफूज़ख़ाँ—स्वराज्य का सच्चा मतलब ही इस तरह की सरकार की स्थापना है ।

चौधरी—यह सब तो ठीक ही होगा, पर, भाई, हमारे सामने तो कल से खाने का सवाल है ।

मुल्ला—हाँ, कल से ही हम क्या खायेंगे ?

तीसरा किसान—कैसे अपने तन ढाँकेंगे ?

चौथा किसान—कैसे पड़ती जमीन सुधारेंगे ?

पाँचवाँ किसान—हाँ, कहाँ से बैल आयेंगे ?

छठवाँ किसान—और कहाँ से आयगा बीज ?

पहला मजदूर—हमें भी कहाँ काम मिलेगा ?

दूसरा मजदूर—हाँ, कहाँ ?

तीसरा मजदूर—बिना काम के हम भी कैसे जिन्दा रहेंगे ?

[नेपथ्य में मोटर खड़ी होने की आवाज आती है। सब का ध्यान उस ओर आकर्षित होता है। पीरबल्लश का दो अन्य मुसलमान साथियों के साथ प्रवेश। इन्हें देखकर सब खड़े हो जाते हैं। दुआ-सलामें होती हैं।]

पीरबल्लश—बैठिए, बैठिए, (स्वयं बैठते हुए) में भी बैठता हूँ।

एक युवक—कुरसी कुरसी तो यहाँ

पीरबल्लश—कुरसी की क्या जरूरत है, जनाब ? देहात आया हूँ। देहातियों की तरह बैठूँगा।

[सब लोग बैठ जाते हैं।]

महफूजख़ाँ—(पीरबल्लश से) कहिए, कहाँ से आना हुआ; दिल्ली से, मेरठ से, या और कहीं से ?

पीरबल्लश—दिल्ली से आ रहा हूँ, भाई।

महफूजख़ाँ—बड़ी कृपा हुई हमारे गाँव पर।

पीरबल्लश—अब तो, भाई, जो मुल्क और क़ौम की खिदमत करना चाहते हैं, उन्हें गाँव पर ही आना होगा। इस मुल्क के अस्सी फ़ी सदी से ज्यादा इन्सान तो गाँवों में ही रहते हैं।

महफूजख़ाँ—देहातियों के लिए इससे अच्छी और क्या बात हो सकती है कि शहरातियों का ध्यान देहात की तरफ़ खिंचे।

पीरबल्लश—आप देहाती हैं ?

महफूजखाँ—जी हाँ, यहीं जन्मा, बचपन में यहीं रहा, इस दृष्टि से देहाती कहा जा सकता हूँ ।

पहला युवक—क्यों, बी० ए० पासकर फिर यहीं रहने आ गये हो, सच्चे देहाती न होते तो शहर में ही न रम जाते ?

पीरबल्लश—अच्छा आप बी० ए० पास हैं ?

दूसरा युवक—मामूली बी० ए० नहीं, जनाब, बी० ए० आनर्स, और प्रथम श्रेणी । फिर सरकारी ऊँची नौकरी मिलती थी, उसे लात मारकर, देहात में रहने और यहाँ के लोगों की सेवा करने को आये हैं ।

पीरबल्लश—देहात के लिए इससे ज्यादा क्या . खुशकिस्मती हो सकती है कि देहात के रहने वाले ऐसे पढ़े-लिखे हों और इस तरह की कुर्बानियाँ कर देहात में ही रहना तय करें ।

महफूजखाँ—पहले मैं भी ऐसा ही समझता था और इसीलिए किसी प्रकार विद्यार्थियों को पढ़ा लिखा, गुजर बसर चला, इम्तहान पास किये, पर यहाँ आने के बाद तो इस सम्बन्ध में मेरी राय बदल गयी है ।

पीरबल्लश—(कुछ आश्चर्य से) अच्छा, तो आपकी राय में देहातियों को पढ़ने-लिखने की जरूरत ही नहीं है ?

महफूजखाँ—देहातियों को पढ़ने-लिखने की जरूरत ही नहीं है, यह मैं नहीं कहता, पर जैसी शिक्षा हमें दी जाती है, वैसी शिक्षा-पद्धति से इतनी दूर तक पढ़ने-लिखने की आवश्यकता देहातियों को नहीं है । इस विद्या का देहात में कोई व्यवहारिक उपयोग नहीं होता ।

पीरबल्लश—इस मसले के तो मुआफ़िक़ और खिलाफ़ बहुत कुछ कहा जा सकता है । ख़ैर । आपसे नियाज़ हासिल कर अज़हद खुशी हुई । आपका इस्म शरीफ़ पूछ सकता हूँ ?

महफूजखाँ—लोग मुझे महफूजखाँ कहते हैं ।

पीरबल्लश—(अत्यन्त आश्चर्य से) आप मुसलमान हैं ?

महफूजख़ाँ—(मुस्कराकर) मेरे मुसलमान होने से आपको क्या कोई ताज्जुब हुआ ?

पीरबल्लश—(कुछ सहमे हुए स्वर में) नहीं, ताज्जुब . . . ताज्जुब तो नहीं, लेकिन आपको देखकर, आपकी ज़बान को सुनकर, आप मुसलमान हैं, यह . . . यह कहना मुश्किल है ।

महफूजख़ाँ—मुसलमान और हिन्दू में यदि पहचान न हो सके और दोनों एक से दिखें तो इससे अच्छी और क्या बात हो सकती है ?

पीरबल्लश—आप समझते हैं, यह होना चाहिए ? हिन्दू और मुसलमान दो क़ौमों हैं । आपने शायद अपने को इस तरह बनाने की कोशिश की है, जिससे आपको देखकर और आपकी ज़बान सुनकर यह शनाख़्त करना मुश्किल हो जाय कि आप मुसलमान हैं । यह कोशिश उन कोशिशों का नमूना है जो इन दो क़ौमों को मिलाने के लिए की गयी हैं । पर इन कोशिशों का नतीजा उल्टा ही निकला है । जितनी-जितनी मिलाने की कोशिशें हुई हैं उतने-उतने ही भगड़े बड़े हैं; या फिर मुसलमान मुसलमान नहीं रह गये; जैसे आप ।

महफूजख़ाँ—लेकिन दो क़ौमों हैं कहाँ ? दो मज़हबों के मानने वाले एक ही देश में एक ही क़ौम के लोग सैकड़ों वर्षों से रह रहे हैं ।

पीरबल्लश—यही तो ग़लतफ़हमी है । हिन्दू-मुसलमानों की न एक क़ौम है और न हिन्दोस्तान एक मुल्क ही है ।

महफूजख़ाँ—समझा, तो जनाब मुस्लिम लीग के ।

पीरबल्लश—जी हाँ, और इस मामले के मुताल्लिक़ हाल ही में पाकिस्तान की जो तहरीक़ मुस्लिम लीग ने पास की है, वह देहात के लोगों को समझाने के लिए ही मैं दिल्ली से निकला हुआ हूँ ।

महफूजख़ाँ—तो जहाँ किसी तरह का भगड़ा-भंभट नहीं है, वहाँ भी आप भगड़ा पैदा कराने के लिए तशरीफ़ लाये हैं ।

पीरबल्लश—(चिढ़कर) आप क्या बक रहे हैं, जनाब ? मैं भगड़ा पैदा कराने के लिए आया हूँ या भगड़ा मिटाने के लिए । मुस्लिम लीग की पाकिस्तान की इस तजवीज़ के मुताबिक़ अगर मुल्क के दो हिस्से कर, हिन्दू और मुसलमान दोनों क़ौमों को अलग-अलग अपनी-अपनी हुकूमत के नीचे रहना तय कर दिया जाय तो हिन्दू-मुस्लिम भगड़ा ही ख़त्म न हो जायगा, बल्कि मुल्क फ़ौरन आज़ाद हो जायगा और गुलामी की वजह से ग़रीबी वग़ैरह की जो बेशुमार तकलीफ़ें हैं, वह सब रफ़ा हो जायँगी ।

महफ़ूज़ख़ाँ—मुल्क आज़ाद कैसे हो जायगा, यह तो मुनूँ ?

पीरबल्लश—कांग्रेस और मुस्लिम लीग की मिली हुई माँग को ब्रिटिश गवर्नेमेन्ट पूरी न करे, यह हो सकता है ?

महफ़ूज़ख़ाँ—और हिन्दू महासभा कहाँ जायगी ? देशी रियासतों के प्रश्न का क्या होगा ? जनाब, छोड़िए ये सब बातें । आज़ादी मिलने का और ग़रीबी दूर करने का लोभ देकर एक नया ज़हर न फैलाइए । यह तो काँटे में चारे को लगाकर मछलियाँ फँसाना है ।

पीरबल्लश—(अत्यन्त क्रोध से) आप जैसे आधे तीतर और आधे बटेर, देहाती और शहराती, हिन्दू और मुसलमान एक ही में मिले हुए आदमियों से बातें करने मैं नहीं आया, मैं आया हूँ सच्चे देहातियों से बात करने ।

महफ़ूज़ख़ाँ—बैठे तो हैं आपके सामने सच्चे देहाती, कीजिए न बात उनसे । मैं क्या आपको रोक रहा हूँ ।

पीरबल्लश—(मुल्ला से) आप मुसलमान हैं ?

[मुल्ला पीरबल्लश को कोई जवाब न देकर महफ़ूज़ख़ाँ की ओर देखता है ।]

महफ़ूज़ख़ाँ—हाँ, ताऊ, बात करो न इनसे, मुझे कोई उज्र थोड़े ही है ।

कुछ हिन्दू—(एक साथ) हाँ, करो . . . करो न बात, ताऊ ।

मुल्ला—(पीरबल्लश से) हाँ, मुसलमान तो हैं।

पीरबल्लश—तो फिर (हिन्दुओं की ओर संकेतकर) इनके ताऊ कैसे हो गये ?

[बहुत से व्यक्ति हँस पड़ते हैं।]

पीरबल्लश—(चिढ़कर) हाँ, बताइए न, आप मुसलमान, यह हिन्दू, आप इनके ताऊ कैसे हो गये ?

मुल्ला—(विचारते हुए) यह... यह तो मैं नहीं जानता कि ताऊ हुआ कैसे, पर इनका ताऊ मैं हूँ जरूर; और सिर्फ़ इनका ही नहीं, पर इस गाँव के तमाम हिन्दू-मुसलमानों का।

चौधरी—और मैं सब का चाचा हूँ।

[बहुत से व्यक्ति फिर हँस पड़ते हैं।]

पीरबल्लश का एक साथी—अच्छे ताऊ और अच्छे चाचा ! (अजी जनाब, हिन्दू और मुसलमान दो क़ौमों हैं, एक हो नहीं सकती। इन्सान के लिए खाना और कपड़ा दो सबसे बड़ी जरूरीयात हैं। इन्हीं दो चीज़ों के मुताल्लिक़ देख लीजिए दोनों क़ौमों में कितना फ़र्क़ है। मुसलमानों के पुलाव कोरमा वगैरह के मुआफ़िक़ हिन्दुओं का कोई खाना नहीं। उनके आबा, खाबा वगैरह के मुआफ़िक़ हिन्दुओं की कोई पोशाक नहीं। और इतने पर भी हिन्दू कहते हैं दोनों क़ौमों एक हैं।)

पीरबल्लश—भाई, यह अजीब गाँव है।

(महफूज़ख़ाँ—(पीरबल्लश से) क्षमा कीजिएगा, मैं फिर बोलता हूँ। आपने कभी कोई गाँव देखा है ?

पीरबल्लश—जी नहीं, लेकिन...लेकिन अगर सभी गाँवों का यह हाल है, तो यह है हिन्दुओं की एक बहुत बड़ी साज़िश। मुसलमानों के हाथ का खाना हिन्दू न खायेंगे, उनको छूकर कोई हाथ धोयेगा और कोई नहायेगा, उनके मकान पर आने से कोई बिछायात धुलवायेगा और कोई मकान ही, उनका इस तरह का कमीने से कमीना बाँयकॉट करके

रखेंगे और उन्हें कहेंगे ताऊ । हर तरह उनकी बेइज्जती करने के बाद भी, उनसे जायज और नाजायज सब तरह के फ़ायदे उठाने के लिए, उन्हें भुलावे में रखने के लिए यह तरीक़े इस्त्यार किये गये हैं ।

पहला युवक—(क्रोध से) यह सब क्या कह रहे हैं आप ? सहभोज तो हिन्दू-हिन्दू में भी नहीं । यहाँ सब मर रहे हैं अपनी गरीबी के कारण, खाने और कपड़े के लाले पड़े हुए हैं, आप जायज और नाजायज फ़ायदे और भुलावे में रखने की बातें कर रहे हैं ।

दूसरा युवक—हाँ, हाँ, मैं मुसलमान हूँ, पाँचों नमाज़ पढ़ता हूँ, मैं यह कहता हूँ कि यहाँ के हिन्दू चाहे हमारे हाथ का न खाते हों, यह तो उनके मज़हब की बात है, लेकिन यह हमें माँ जाये भाइयों से कम नहीं समझते । चाहे हिन्दू मन्दिर में पूजा करें और हम मसजिद में इबादत, पर हर तरह के आराम व तकलीफ़ में हम एक दूसरे के काम आते हैं; एक दूसरे को ब्याह-शादी में, एक दूसरे के मरने-जीने में, एक दूसरे के त्योहारों में शरीक होते हैं ।

पीरबख्श—(गला साफ़ करते हुए) लेकिन लेकिन

महफ़ूज़ख़ाँ—देखिए, यहाँ सब खेती करने वाले हैं, या मज़दूरी । हिन्दू भी वही करते हैं, मुसलमान भी वही, रोटी का सवाल सब के लिए एक-सा है और वही इस दुनिया में एक दूसरे को एक सूत्र में बाँधता है । मज़हब की दूसरी बात है, वह इस संसारकी नहीं, दूसरी दुनिया की चीज़ है ।

पीरबख्श—(क्रोध से) जनाब, मज़हब का इस दुनिया से भी उतना ही ताल्लुक है, जितना दूसरी दुनिया से, पर बीच-बीच में बोलकर आप तो मुझे बात ही नहीं करने देंगे । कांग्रेस से कुछ तनख्वाह मिलती दिखती है ।

दूसरा युवक—(अत्यन्त क्रोध से) अच्छा, आपने तो हमारे एक अजीज़ को गाली देना शुरू कर दिया । मैं आपसे दरखास्त करूँगा कि आप यहाँ से तशरीफ़ ले जायँ ।

पहला युवक—(अत्यन्त क्रोध से) हाँ, हाँ, फ़ौरन चल दीजिए ।

मुल्ला—(क्रोध से) नहीं तो कोई न कोई वारदात हो जायगी ।

चौधरी—ज़रूर ही....ज़रूर ही....

महफ़ूज़ख़ाँ—अरे ! यह आप लोग क्या कर रहे हैं....आप लोगों के....थोड़ा धीरज.....

[महफ़ूज़ख़ाँ की बात कोई नहीं सुनता । हल्ला होने लगता है । पीरबल्लश को जाते न देख कुछ किसान मजदूर अपनी लाठियाँ सँभालते हैं और कुछ आस्तीनों को ऊपर चढ़ाते हैं ।]

पीरबल्लश का एक साथी—(पीरबल्लश से) चलिए, चलिए !

पीरबल्लश का दूसरा साथी—हाँ, हाँ, हमें चल ही देना चाहिए !

महफ़ूज़ख़ाँ—(देहातियों से) देखिए....

[पीरबल्लश का अपने साथियों के साथ प्रस्थान । कई किसान और मजदूर जोर से हँस पड़ते हैं ।]

यवनिका

दूसरा अंक

पहला दृश्य

स्थान—दिल्ली में पीरबख्श के बँगले का दफ्तर

समय—तीसरा पहर

[कमरा आधुनिक ढंग से सजा हुआ दफ्तर दिखायी पड़ता है। लिखने-पढ़ने की मेज रखी है। आये हुए तारों को टेबिल पर ढेर-सा लगा हुआ है। घूमने वाली कुर्सी पर बैठा हुआ पीरबख्श टैलीफोन-रिसीवर को कान में लगाये हुए बात कर रहा है।]

पीरबख्श—थैंक्स मैनी, मैनी थैंक्स। यस यस इट वाज इनएवीटेबिल एक्सल्यूटली इनएवीटेबिल। (रिसीवर फ़ोन पर रखकर टेबिल पर के कुछ बन्द तारों को खोलकर पढ़ने लगता है। फिर फ़ोन की घंटी बजती है। रिसीवर उठाकर) हलो ! हलो ! यस, पीरबख्श स्पीकिंग। थैंक्स थैंक्स। एक म्यान में दो तलवार वाली हिन्दोस्तानी मसल बिलकुल सही है। हाँ, ... हाँ, ... कैसे दो कौमें एक साथ रह सकती हैं ? (रिसीवर रखता है और फिर तार पढ़ने लगता है। फ़ोन की घंटी फिर बजती है। रिसीवर उठाकर) यस स्पीकिंग। यस यस रोज़मर्रा का भगड़ा। हाँ, दशहरा हो तो भगड़ा। मुहर्रम हो तो भगड़ा। होली हो तो भगड़ा। ईद हो तो भगड़ा। बेशक बेशक दो अलग-अलग दो अलाहिदा-अलाहिदा कौमें हैं। ज़रूर ज़रूर राइल-आम लेते ही खत्म हो जायगा, ... हमेशा के लिए खत्म हो जायगा अब यह सब फ़साद। (रिसीवर रखता है। एक

चपरासी का प्रवेश । वह एक तश्तरी में कुछ तारों को लिये है । तार टेबिल पर रखकर वह जाता है । नये तारों के लिफाफे देखता है । फ़ोन की घंटी फिर बजती है । रिसीवर उठाकर) यस यस हाँ, मैं ही हूँ पीरबख्श । थैंक्स थैंक्स । ह, ह, ह, ह, ... ठीक ठीक आपरेशन की ठीक मिसाल दी तुमने । हाँ, जब मल्हम-पट्टी से फोड़ा अच्छा नहीं होता, तब चीराफाड़ी करनी ही पड़ती है । बेशक सूबों को अलाहिदा होने के इस्त्थार का उसूल मंजूर होना आपरेशन ही हुआ है बड़े से बड़ा आपरेशन । ह, ह, ह, ह, मुस्लिम अक्सीरियत के सूबे अलाहिदा होंगे ही ? हाँ, हाँ, मालूम मालूम तो ऐसा ही होता है । (रिसीवर रखता है और नये तारों को लिफाफों में से निकालना शुरू करता है । फ़ोन की घंटी फिर बजती है । रिसीवर उठाकर) ह, ह, ह, ह, ... में पाकिस्तान का वजीरे आजम ! क्या क्या कहते हो ? मेरा हक है ? हक इसमें हक की बात नहीं है, ... लायक कौन है, यह सवाल उठेगा । मेरा ही हक है और मैं ही लायक भी हूँ ? ह, ह, ह, ह, ... दोस्ताने की वजह से मेरे लिए तुम्हारा यह कहना है । नहीं ? क्यों, भाई, नहीं क्यों ? अच्छा अच्छा, ... जरूर जरूर मिलना । कब ? ज़रा एक दो दिन ठहर कर । (रिसीवर रखता है । नये तारों को देखना शुरू करता है । फ़ोन की घंटी फिर बजती है । रिसीवर उठाकर) यस यस पीरबख्श ही बोल रहा है । मुबारकबादी तो तुम्हें भी है, भाई । (रिसीवर रखता है । चपरासी फिर तार लेकर आता है और टेबिल पर रखकर जाता है । नये तारों के लिफाफों को पहले आये हुए तारों के लिफाफों के नीचे रखता है और तार पढ़ने लगता है । फ़ोन की घंटी फिर बजती है । रिसीवर उठाकर) हलो ! हलो ! यस यस यू वान्ट पीरबख्श ? पीरबख्श स्पीकिंग । (जहाँनारा

का प्रवेश। जहाँनारा को देखकर) थैंक्स थैंक्स। कुछ देर बाद फ़ोन कीजिए। (खड़े होते हुए) हाँ, इस वक्त में बहुत बहुत ज्यादा मशगूल हूँ। (रिसीवर रख जहाँनारा की ओर बढ़ते हुए) आइए, तशरीफ़ लाइए।

जहाँनारा—(मुस्कराते हुए) इस कामयाबी पर मुबारिकबाद।

पीरबल्लश—शुक्रिया; और आपकी दी हुई मुबारिकबाद से हज़ार दर्जे बड़ी मुबारिकबाद आपको। बैठिए, तशरीफ़ रखिए।

[पीरबल्लश अपनी कुर्सी पर बैठता है और जहाँनारा उसके सामने की एक कुर्सी पर बैठती है।]

जहाँनारा—(हँसते हुए) तो क्या मेरी मुबारिकबाद कम दरजे की थी ?

पीरबल्लश—(जल्दी से) नहीं, नहीं भला आप यह क्या कह रही हैं ?

[फ़ोन की घंटी फिर बजती है। पीरबल्लश रिसीवर उठाकर नीचे रख देता है।]

जहाँनारा—आप बात कर लीजिए, मुझे कोई जल्दी नहीं है।

पीरबल्लश—कहाँ तक और किस-किस से बात करूँ ? टेलीफ़ोनो की तो बारिश-सी हो रही है। कुछ देर रिसीवर पड़ा रहने दीजिए; फ़ोन करने वाले समझेंगे, कोई दूसरा बात कर रहा है, नहीं तो आपसे बातचीत ही न हो सकेगी।

जहाँनारा—(टेबिल पर से तारों को देखते हुए) और तारों की भी तो बरसात सी हुई है। होना भी यही चाहिए। इतनी बड़ी कामयाबी मिलने पर भी फ़ोन और तार न आवें तो कब आवें ? आपने तारीख़ बनायी है तारीख़।

पीरबल्लश—(विचारते हुए) तारीख़ तारीख़ मैंने अकेले क्या बनायी है, मिस जहाँनारा, आपका भी इसके बनाने में कितना बड़ा हाथ है।

जहाँनारा—मेरा हाथ ?

पीरबल्लश—बेशक । (कुछ रुककर) और फिर तारीख बनने का मौका भी आ गया था । हिन्दुओं ने जल्दी न की होती तो, यह न होता, जो हुआ ।

जहाँनारा—हाँ, यह तो ठीक है ।

पीरबल्लश—हिन्दू जानते थे, मिस जहाँनारा, कि बिना मुसलमानों की मदद के इस मौके पर भी वह अकेले आजादी हासिल नहीं कर सकते, और हम जानते थे कि आजादी की जो कीमत भी माँगी जायगी, वह हिन्दू इस वक्त जरूर देंगे । हम भी मुल्क को आजाद करने के लिए हिन्दुओं से कम स्वाहिशमन्द नहीं थे ।

जहाँनारा—मुसलमानों के तो खून में आजादी है ।

पीरबल्लश—ठीक; और इसीलिए मुल्क के साथ ही हम मुस्लिम क़ौम की भी सच्ची आजादी चाहते थे ।

जहाँनारा—हाँ, अंग्रेज़ों की गुलामी से निकलकर हिन्दुओं की गुलामी हमें मंज़ूर न थी ।

पीरबल्लश—कितना ठीक फ़र्माया आपने । इसीलिए तो हम अपनी बात पर अड़े रहे । हमने जल्दबाज़ी न की । ठीक वक्त पाँसा फेंका गया और दाँव में हमारी दुहरी जीत हो गयी ।

[चपरासी का फिर कुछ तार लिये हुए प्रवेश । वह तारों को टेबिल पर रखकर जाता है । कुछ देर सन्नाटा । पीरबल्लश जहाँनारा की ओर देखता रहता है; जहाँनारा बाहर की तरफ़ ।]

जहाँनारा—अच्छा, अब क्या करना है ?

पीरबल्लश—असली काम तो अब शुरू होगा, मिस जहाँनारा, अभी हुआ ही क्या है ? अभी तो जो सूबे चाहें वह अलाहिदा होकर अपनी अलग मरकज़ी हुकूमत बना सकते हैं, इतना ही तय हुआ है । इस मामले पर राइल-ग्राम तो अब होगी और राइल-ग्राम का नतीजा अगर कुछ सूबों के

का प्रवेश। जहाँनारा को देखकर) थैंक्स थैंक्स । कुछ देर बाद फ़ोन कीजिए। (खड़े होते हुए) हाँ, इस वक़्त में बहुत बहुत ज्यादा मशगूल हूँ। (रिसीवर रख जहाँनारा की ओर बढ़ते हुए) आइए, तशरीफ़ लाइए।

जहाँनारा—(मुस्कराते हुए) इस कामयाबी पर मुबारिकबाद।

पीरबल्लश—शुक्रिया; और आपकी दी हुई मुबारिकबाद से हज़ार दर्जे बड़ी मुबारिकबाद आपको। बैठिए, तशरीफ़ रखिए।

[पीरबल्लश अपनी कुर्सी पर बैठता है और जहाँनारा उसके सामने की एक कुर्सी पर बैठती है।]

जहाँनारा—(हँसते हुए) तो क्या मेरी मुबारिकबाद कम दरजे की थी ?

पीरबल्लश—(जल्दी से) नहीं, नहीं भला आप यह क्या कह रही हैं ?

[फ़ोन की घंटी फिर बजती है। पीरबल्लश रिसीवर उठाकर नीचे रख देता है।]

जहाँनारा—आप बात कर लीजिए, मुझे कोई जल्दी नहीं है।

पीरबल्लश—कहाँ तक और किस-किस से बात करूँ ? टेलीफ़ोनों की तो बारिश-सी हो रही है। कुछ देर रिसीवर पड़ा रहने दीजिए; फ़ोन करने वाले समझेंगे, कोई दूसरा बात कर रहा है, नहीं तो आपसे बातचीत ही न हो सकेगी।

जहाँनारा—(टैबिल पर से तारों को देखते हुए) और तारों की भी तो बरसात सी हुई है। होना भी यही चाहिए। इतनी बड़ी कामयाबी मिलने पर भी फ़ोन और तार न आवें तो कब आवें ? आपने तारीख़ बनायी है तारीख़।

पीरबल्लश—(विचारते हुए) तारीख़ तारीख़ मैंने अकेले क्या बनायी है, मिस जहाँनारा, आपका भी इसके बनाने में कितना बड़ा हाथ है।

जहाँनारा—मेरा हाथ ?

पीरबल्लश—बेशक । (कुछ रुककर) और फिर तारीख बनने का मौका भी आ गया था । हिन्दुओं ने जल्दी न की होती तो, यह न होता, जो हुआ ।

जहाँनारा—हाँ, यह तो ठीक है ।

पीरबल्लश—हिन्दू जानते थे, मिस जहाँनारा, कि बिना मुसलमानों की मदद के इस मौके पर भी वह अकेले आज़ादी हासिल नहीं कर सकते, और हम जानते थे कि आज़ादी की जो कीमत भी माँगी जायगी, वह हिन्दू इस वक्त जरूर देंगे । हम भी मुल्क को आज़ाद करने के लिए हिन्दुओं से कम ख्वाहिशमन्द नहीं थे ।

जहाँनारा—मुसलमानों के तो खून में आज़ादी है ।

पीरबल्लश—ठीक; और इसीलिए मुल्क के साथ ही हम मुस्लिम क्रोम की भी सच्ची आज़ादी चाहते थे ।

जहाँनारा—हाँ, अंग्रेज़ों की गुलामी से निकलकर हिन्दुओं की गुलामी हमें मंज़ूर न थी ।

पीरबल्लश—कितना ठीक फ़र्माया आपने । इसीलिए तो हम अपनी बात पर अड़े रहे । हमने जल्दबाज़ी न की । ठीक वक्त पाँसा फेंका गया और दाँव में हमारी दुहरी जीत हो गयी ।

[चपरासी का फिर कुछ तार लिये हुए प्रवेश । वह तारों को टेबिल पर रखकर जाता है । कुछ देर सन्नाटा । पीरबल्लश जहाँनारा की ओर देखता रहता है; जहाँनारा बाहर की तरफ़ ।]

जहाँनारा—अच्छा, अब क्या करना है ?

पीरबल्लश—असली काम तो अब शुरू होगा, मिस जहाँनारा, अभी हुआ ही क्या है ? अभी तो जो सूबे चाहें वह अलाहिदा होकर अपनी अलग मरकज़ी हुकूमत बना सकते हैं, इतना ही तय हुआ है । इस मामले पर राइल-ग्राम तो अब होगी और राइल-ग्राम का नतीजा अगर कुछ सूबों के

अलाहिदा होने के हक़ में गया तो हिन्दू और मुस्लिम दो वफ़ाक़ बना दिये जायेंगे ।

जहाँनारा—लेकिन राइल-आम का क्या नतीजा निकलेगा, यह तो हम मुसलमान ही नहीं, हिन्दू भी जानते हैं ।

पीरबल्लश—हाँ, बहुत हद तक तो यही उम्मीद है कि राइल-आम के बाद दो मरकज़ी हुकूमतें बन ही जायँगी, लेकिन, मिस जहाँनारा, अभी एक मर्तबे हिन्दू और जी-जान से कोशिश करेंगे कि राइल-आम हमारे खिलाफ़ जाय ।

जहाँनारा—पर इस मामले में हमने अब तक जिस तरह की कोशिशें की हैं, उससे मुझे यकीन है कि हिन्दुओं की अब कोई भी मुसलमान सुनने वाला नहीं ।

पीरबल्लश—पर अभी कुछ मुसलमान भी तो ऐसे हैं जो हिन्दुओं के साथ हैं ।

जहाँनारा—दाल में नमक के बराबर भी नहीं; और अगर गिन्ती के कुछ हैं भी तो उनकी भी मुसलमान मानने वाले नहीं ।

पीरबल्लश—(विचारते हुए) मिस जहाँनारा, मुस्लिम लीग की 'पाकिस्तान की तजवीज़ को देहातियों को समझाने के लिए जब मैं दौरे पर निकला था उस वक़्त पहले दिन जो हुआ था, उसे मैं अब भी नहीं भूल सका हूँ ।

जहाँनारा—हाँ, आपने मुझे यू० पी० की शुमाली सरहद के किसी गाँव का, जिसमें महफूज़ख़ाँ नाम का कोई ग्रेजुएट रहता था, एक वाक़या बताया था; वही ?

पीरबल्लश—हाँ, वही । वहाँ के हिन्दू ही नहीं, मुसलमान भी मुझे पीटने पर उतारू हो गये थे । ज़िन्दगी में उसके पहले मैं किसी गाँव को गया ही न था । कितनी नाउम्मीदी हुई थी, वहाँ से लौटकर मुझे !

जहाँनारा—लेकिन आप अपने मक़सद पर अड़े रहे और नतीजा आखिर आपके हक़ में निकला ।

पीरबल्लश—पक्का तो यह राइल-आम के बाद ही होगा, लेकिन उम्मीद

जहाँनारा—(बीच ही में) उम्मीद की बात न कीजिए, यह तो यक़ीन का मामला है ।

पीरबल्लश—(कुछ रुककर) दूसरों से तो मैं भी यही कहता हूँ कि सब कुछ हो गया, नहीं तो उनमें पस्त हिम्मती आ जायगी, लेकिन आपके और मेरे बीच की बात तो दूसरी ठहरी । जो दिल में उठता है, आपसे ही न कहूँ तो कहूँ किससे ? अभी हिन्दू न जाने कितने सवाल उठाने की कोशिश करेंगे ।

जहाँनारा—मसलन ?

पीरबल्लश—मसलन यह कि पंजाब और बंगाल की जिन जगहों में मुसलमान अकल्लियत में हैं, उन जगहों को इन सूबों से अलग कर दिया जाय । सिक्खों का सवाल भी पूरी तरह खत्म नहीं हुआ है । रियासतों का सवाल भी अभी खड़ा-सा ही है, खासकर काश्मीर और हैदराबाद का । फिर जिन सूबों में मुस्लिम अकल्लियत में हैं, उन सूबों

जहाँनारा—(बीच ही में) यह राइल-आम तो उन सूबों में ही ली जानी है न, जिनमें मुसलमानों की कसरतराय है ?

पीरबल्लश—हाँ, लेकिन हिन्दू इन सब बातों को उठाकर मुस्लिम अक्सीरियत वाले सूबों के मुसलमानों पर भी असर डालने की कोशिश करेंगे ।

जहाँनारा—और उनका ज़रा भी असर पड़ने वाला नहीं है ।

पीरबल्लश—(मुस्कराते हुए) उम्मीद तो मुझे भी यही है, लेकिन आप जानती हैं कि छोटे-छोटे रोड़े भी मुझे बड़े-बड़े पहाड़ नज़र आते हैं ।

जहाँनारा—तभी तो आपको इस तरह की कामयाबियाँ हासिल होती हैं। एक छोटी-सी गिट्टी को कुचलने के लिए आपका स्टीम रोलर चलता है। एक छोटे से भुंगे को मारने के लिए दुनाली बन्दूक।

[**पीरबल्लश** हँस पड़ता है। चपरासी का फिर कुछ तार लेकर प्रवेश। वह तारों को टेबिल पर रखकर जाता है।]

जहाँनारा—राइल-ग्राम और दो मरकजी हुकूमतें क्रायम होने तक का मामला तो अब तय-शुदा समझिए। उसके बाद क्या करना है, यह बताइए।

पीरबल्लश—उसके बाद के काम तो और भी बड़े हैं।

जहाँनारा—अच्छा।

पीरबल्लश—हमें इस्लाम और मुस्लिम तहज़ीब की फ़ज़ीलत तमाम दुनिया को सुबूत कर देना है। सच तो यह है कि इसी एक खयाल के अन्दर हमारा सारा प्रोग्राम आ जाता है, मिस जहाँनारा। पाकिस्तान में मुस्लिम क़ौम की हर तरह की तरक्की तो होगी ही, लेकिन हमें पाकिस्तान की अकल्लियतों की भी हर तरह की तरक्की करनी होगी; उनके हुकूक की भी हर तरह से हिफ़ाज़त।

जहाँनारा—(प्रसन्नता से) बहुत अच्छा ! बहुत अच्छा !

पीरबल्लश—इस बँटवारे की हलचल में पाकिस्तान में अकल्लियतों पर कैसे-कैसे जुल्म होंगे, इसके हिन्दुओं, सिक्खों वगैरह ने बड़े-बड़े ऐलान किये हैं। हमें बता देना है कि उनके वह तमाम ख़ौफ़ एकदम बेबुनियाद थे।

जहाँनारा—(और भी प्रसन्नता से) ठीक। बिल्कुल ठीक।

पीरबल्लश—मिस जहाँनारा, इस्लाम में अपने ज़िम्मी के साथ जैसा ताल्लुक रखने को कहा गया है, वैसा किसी मज़हब में नहीं। मुस्लिम तहज़ीब इस वज़ह से भी दुनिया की तमाम तहज़ीबों में ख़ुसूसियत रखती है। . . . पाकिस्तान की अकल्लियतें दरअसल हमारी ज़िम्मी होंगी और उनके साथ हमारा जैसे सलूक होगा, उसी पर दुनिया हमारी जाँच करेगी।

जहाँनारा—बेशक । और आप इन कुल कामों को करेंगे पाकिस्तान के वज़ीरे-आज़म की हैसियत से ।

पीरबल्लश—क्या कहती हैं आप ?

जहाँनारा—मैं क्या, सभी कहते हैं; और सबका यह कहना मुनासिब ही है । आप को ही प्रीमियर होने का हक़ है ।

पीरबल्लश—यह हक़ का सवाल नहीं है ।

जहाँनारा—तब काहे का सवाल है ?

पीरबल्लश—क्लाबलियत का, मिस जहाँनारा ।

जहाँनारा—आपसे ज़्यादा क्लबलियत भी कौन रखता है ? फिर यहाँ तक तमाम स्कीम को कामयाब बनाने में आपने कितनी कोशिश की है । मि० जिन्ना तो बहुत बूढ़े हो गये, आप ही वज़ीरे-आज़म हो सकते हैं ।

पीरबल्लश—(कुछ रुककर) एक बात कहे देता हूँ ।

जहाँनारा—कहिए ।

पीरबल्लश—अगर मुझे प्रीमियर होना ही पड़ा तो आपको मेरी कैबिनेट में रहना पड़ेगा ।

जहाँनारा—(एकदम आश्चर्य से) क्या कहते हैं आप ?

पीरबल्लश—क्या मेरे 'क्या कहती हैं आप' का आप जवाब दे रही हैं ?

जहाँनारा—(मुस्कराकर) सच मानिए, आपने क्या कहा था, यह मुझे याद ही नहीं था, लेकिन लेकिन

पीरबल्लश—अगर मगर , लेकिन कुछ नहीं, मिस जहाँनारा, आप शायद एक बात नहीं जानतीं ?

जहाँनारा—कौन-सी ?

पीरबल्लश—(प्रेम भरे स्वर में) इतने दिनों तक आपके साथ काम करने के बाद अब मैं बिना आपके, अकेले, कोई काम नहीं कर सकता, उसके मैं लायक ही नहीं रह गया हूँ ।

[जहाँनारा सिर झुका लेती है । पीरबल्लश प्रेम भरी दृष्टि से जहाँनारा की ओर देखता है । कुछ देर निस्तब्धता । चपरासी का तश्तरी में कई मुलाकाती कार्ड लिए हुए प्रवेश । पीरबल्लश कार्डों को देखता है ।]

पीरबल्लश—(प्रसन्नतापूर्वक जहाँनारा से) ज्यादातर हम लोगों के साथी हैं । सब शायद मुबारिकबाद देने आये हैं । (चपरासी से) भेज दो सब को यहीं !

[चपरासी का प्रस्थान । कई मुसलमानों का प्रवेश । अलग-अलग उम्र और रंग के मनुष्य हैं । कोई मोटा, कोई दुबला, कोई ऊँचा, कोई ठिगना । वस्त्र भी सब के भिन्न-भिन्न प्रकार के हैं । कोई शेरवानी और चूड़ीदार पाजामा, कोई अचकन और ढीला पाजामा, कोई सिर्फ़ कुरता और पाजामा पहने हैं । टोपियाँ भी कई तरह की हैं—कोई लाल तुर्की, कोई काली बालदार और कोई दुपलिया लगाये हैं । किसी के दाढ़ी हैं, किसी के सिर्फ़ मूँछें ही । सब के मुखों पर उत्साह और उल्लास के चिह्न हैं । पीरबल्लश और जहाँनारा खड़े हो, थोड़ा-सा आगे बढ़, सब का स्वागत करते हैं । सब लोग पहले पीरबल्लश और फिर जहाँनारा का आदाब बजाते हैं । 'मुबारिक हो ।' 'मुबारिक हो ।' शब्दों से कमरा गूँज उठता है । पीरबल्लश किसी को गले लगाता है । किसी के दोनों हाथ पकड़कर हाथ मिलाता है, किसी का एक हाथ पकड़कर हाथ मिलाता है ।]

पीरबल्लश—बैठिए . . . बैठिए, . . . तशरीफ़ रखिए . . . तशरीफ़ रखिए ।

[पीरबल्लश अपनी कुर्सी पर, जहाँनारा उसके नजदीक की एक कुर्सी पर और बाक़ी सब लोग भी दूसरी कुर्सियों पर बैठते हैं । चपरासी फिर तार लेकर आता है और तारों को रखकर जाता है ।]

पीरबल्लश—बड़ी . . . बड़ी इनायत की आप सब हज़रात ने ।

एक—इनायत ? क्या फ़रमा रहे हैं आप ! हमारा फ़र्ज़ था कि यह खुश ख़बरी सुनते ही हम फ़ौरन ख़िदमत में हाज़िर होते ।

दूसरा—बेशक ! बेशक !

तीसरा—आज के दिन अपने सदर को मुबारिकबाद देने आने से बड़ा हमारा कौन-सा फ़र्ज़ हो सकता है ?

चौथा—आज के दिन से बड़ा दिन ही हमारी ज़िन्दगी में नहीं आ सकता ।

पाँचवाँ—हमारी ज़िन्दगी में ? हमारी ज़िन्दगी में क्या, जनाब, मुस्लिम क्रौम की तारीख़ में नहीं आ सकता ।

पीरबल्लश—लेकिन, बिरादरान, अभी तो बहुत काम बाक़ी है ।

छठवाँ—अब क्या बाक़ी है, हुज़ूर ?

सातवाँ—हाँ, सरकार, अब क्या बाक़ी हो सकता है ?

पीरबल्लश—वोट तो मुस्लिम क्रौम के अब लिये जायेंगे ।

आठवाँ—(बेपरवाही से) अरे, वोट ! वह अब जब चाहिए तब ले लीजिएगा ।

छठवाँ—हाँ, आधीरात को सोते हुए किसी भी मुस्लिम को आप जगाकर पूछेंगे कि पाकिस्तान के मुताल्लिक़ तुम्हारी क्या राय है, तो पूरे होश में आने के पहले ही वह कह देगा कि हम हिन्दू-राज से बाहर जाने के हक़ में हैं ।

सब—(एक साथ) बेशक । बेशक ।

जहाँनारा—मैंने आप लोगों के तशरीफ़ लाने के पहले ही अर्ज़ कर दिया था कि इस मामले में फ़िक़र करने की गुंजाइश ही नहीं है ।

सब—(एक साथ) बिल्कुल ठीक बिल्कुल वजा ।

पीरबल्लश—(जैसे कुछ याद आ गया हो, जहाँनारा से) हाँ, अब फ़ोन का रिसीवर रख देता हूँ । (रिसीवर रखता है ।)

जहाँनारा—न जाने इतनी देर में कितने फ़ोन करने वालों को नाउम्मीदी हुई होगी ।

[फ़ोन की घंटी बजती है ।]

पीरबल्लश—(मुस्कराकर) यह लीजिए, रखने भर की देर थी।
(रिसीवर उठाकर कान पर लगाते हुए) हलो ! हलो !

[चपरासी फिर कुछ तार लेकर आता है।]

लघु यवनिका

दूसरा दृश्य

स्थान—दिल्ली में शान्तिप्रिय के बँगले का बैठकखाना

समय—प्रातःकाल

[कमरा पश्चिमी ढंग से सजा हुआ है। शान्तिप्रिय एक सोफे पर बैठा हुआ, हाथ में एक नोट बुक लिये, उसमें से कुछ याद कर रहा है। रुबी एक कुर्सी पर सो रही है।]

शान्तिप्रिय—मुल्क माने देश, मुल्क माने देश, मुल्क माने देश।
(कुछ रुककर) यह यह तो नहीं भूला जा सकता। मक्सद माने उद्देश, मक्सद माने उद्देश, मक्सद माने उद्देश। (कुछ रुककर) यह यह याद नहीं हो सकता। इस उम्र में नहीं, नहीं, इस अवस्था में रटाई, घुटाई यह तो बड़ी मुश्किल उफ़ ! . . . मुश्किल नहीं, ... फिर क्या ? (कुछ सोचकर) कठिन हाँ, हाँ, कठिन बात है। (कुतिया की तरफ़ देखकर) टाइग्रेस ! ओ टाइग्रेस ! (जब कुतिया नहीं आती, तब उसके पास जाते हुए) कभी टाइग्रेस कहने से नहीं सुनेगी। रुबी ! ओ रुबी !

[कुतिया आँख खोलकर शान्तिप्रिय की ओर देखती है।]

शान्तिप्रिय—रुबी ! रुबी ! रुबी रुबी रुबी

.

[कुतिया उठकर कुर्सी पर से कूद दुम हिलते हुए शान्तिप्रिय के नज़दीक आती है।]

शान्तिप्रिय—(फिर से सोफ़ा पर बैठते हुए, कुतिया से, जो साथ-साथ आती है।) क्यों, टाइग्रेस, तुम लोगों में भी विलायती कुत्तों की ज़बान
 उह फिर गड़बड़ हो गया। ज़बान नहीं, भाषा, ...
 हाँ, विलायती कुत्ते की भाषा एक तरह की, देशी कुत्तों की दूसरी तरह की, इस तरह का कोई अन्तर (अपनी पीठ को थपथपाते हुए)
 हाँ, ... अन्तर हो तो कहना—भों ! भों ! भों ! नहीं तो चुप रहना। (चुप होकर कुतिया की ओर देखता है। वह कुछ नहीं बोलती, सिर्फ़ दुम हिलाती रहती है।) कोई अन्तर नहीं है। तब इन्सान उफ़ ! इन्सान नहीं, मनुष्य, हाँ, मनुष्यों में एक दूसरे की भाषा में क्यों अन्तर है ? मनुष्य को अंग्रेज़ी में सोशल एनीमल कहा है, पर सोशल एनीमल एक दूसरे के साथ मिल-जुलकर रहने के कारण (फिर अपनी पीठ ठोकते हुए) कारण या एक दूसरे के साथ लड़ने के कारण ? और भाषा भाषा भी लड़ाई का एक कारण; वह वह भाषा जो इन्सान को हैवान से अलाहिदा करने की पहली उफ़ ! इन्सान ! हैवान ! अलाहिदा !
 यह सब क्या हुआ ? (नोटबुक को ज़मीन पर पटकते हुए) जब जहाँनारा ने अलिफ़, बे, सिखाया, तब दुधमुहाँ बच्चा था; सीख जाता था, जो वह सिखाती थी उसे फ़ौरन, लेकिन इस इस उम्र में, रुबी, ... टाइग्रेस

कुतिया—भों ! भों ! भों !

शान्तिप्रिय—ठीक यह कोशिश भोंकने हाँ, भोंकने के बतौर होगी। (कुछ रुककर) और और, रुबी, जो बात ज़बान के मुताल्लिक़ मालूम होती है, वही हाँ, वही आगे चलकर दो क़ौमी नज़रिये की दूसरी बातों के मुताल्लिक़ भी तो नहीं मालूम होगी ?

(कुछ रुककर) पहले कब कोई फ़र्क़ जान पड़ता था मुझे अपने में और जहाँनारा में ? वह बहन-सी ही नहीं, माँ-सी भी मालूम होती थी। मुसलमान....हाँ, मुसलमान थी वह, हिन्दू था मैं ! लेकिन.... लेकिन, रुबी,.... (कुतिया अपने दोनों पैर शान्तिप्रिय के घुटनों पर रखकर दुम हिलाने लगती है।)....और....और दुर्गा हिन्दू.... हाँ, हिन्दू है, मैं हिन्दू हूँ, पर....पर.... (फिर कुछ रुककर) पर उस वक़्त मैं पचहत्तर परसेन्ट मुसलमान जो था।....हिन्दुओं में गंगा को इसलिए महत्त्व है कि जो नदियाँ उसमें मिलती हैं उनका पानी गंगा के सदृश हो जाता है।....उस धारा में शक्ति है अपने में गिरने और पड़ने वाली सारी वस्तुओं को बहा ले जाने की।....मेरी, हाँ, मेरी उस शक्ति का लोप हो गया था।....मैं जहाँनारा के सदृश होता जाता था।.... वह....वह मुझे बहाये लिये जाती थी। (कुछ रुककर) फिर.... फिर अब तो बात और आगे बढ़ गयी।....अब तक दो क़ौमें रही हों या न रही हों लेकिन अब तो होकर रहेंगी। राइल-आम का नतीजा तो जानी समझी-सी चीज़ है।

कुतिया—भों ! भों ! भों !

शान्तिप्रिय—हाँ, कौन....कौन सुनता है, इस भों भों में दलीलों को ?....जहाँनारा ने भी क्या कम भोंका है और दुर्गा ने भी क्या कम भोंका ?....और....और अगर दो क़ौमें ही होना है, इस.... इस.... कमबख्त मुल्क के दो टुकड़े होना नहीं रोका जा सकता, तो....तो, टाइम, हिन्दुओं को भी ज़िन्दा तो रहना ही पड़ेगा। (कुछ रुककर, जोश से) और....और वह....वह ज़िन्दा रहेंगे गंगा.... हाँ, गंगा की उस धारा....धारा....

[दुर्गा का प्रवेश। उसका मुख एकदम उतरा हुआ है और अंग भी शिथिल से जान पड़ते हैं। उसे देख शान्तिप्रिय खड़े हो उसका स्वागत करता है। दोनों सोफ़ा पर बैठते हैं।]

शान्तिप्रिय—(कुतिया से) गो अवे, रुबी, गो अवे फ़ॉर सम टाइम ।

[कुतिया धीरे-धीरे बाहर जाती है ।]

दुर्गा—(नीचे पड़ी हुई नोटबुक को देखकर) अच्छा, बड़ा क्रोध आया दिखता है इस बेचारी पर ।

शान्तिप्रिय—(सहमें हुए स्वर में) इस पर नहीं, मिस दुर्गा, क्रोध तो आया था मुझे अपने आप पर; इस पर निकाला गया है ।

दुर्गा—भाषा के पीछे आप इतने पड़े ही क्यों हैं ? भाषा तो आपकी अपने आप ठीक हो जायगी ।

शान्तिप्रिय—कभी न होगी ।

दुर्गा—नहीं, नहीं, अवश्य हो जायगी । हिन्दी-उर्दू के सम्बन्ध में तो यह बात है कि जैसा संग होता है, वैसे ही शब्द मुंह से निकलने लगते हैं, उठना-बैठना मुसलमानों के साथ रहेगा, तो अरबी फ़ारसी के अधिक शब्द निकलेंगे, हिन्दुओं के साथ रहेगा, तो संस्कृत के । और आपकी भाषा ठीक न भी हुई तो कोई बड़ा भारी अनर्थ न हो जायगा । (लम्बी साँस लेकर) अनर्थ तो हो गया, शान्तिप्रिय जी, बड़े से बड़ा अनर्थ !

शान्तिप्रिय—(दुर्गा की ओर देखते हुए) आज भी आप बहुत ही उदास दिख रही हैं ।

दुर्गा—मैं अब भी जीवित हूँ यही बड़ी बात है । हिन्दुओं के बहुमत ने जिस विषय पर मुसलमानों को सर्व-जन-मत का अधिकार देकर उनसे समझौता किया है, वह देश का विभाजन करके रहेगा । इस धक्के से ही मेरी मृत्यु हो जानी चाहिए थी, शान्तिप्रिय जी, मृत्यु !

शान्तिप्रिय—लेकिन यह न हो, इसके लिए आप जो कुछ कर सकती थीं, आपने सब कुछ किया; और आप कर ही क्या सकती थीं ?

दुर्गा—ठीक है, परन्तु गीता में जिस स्थितप्रज्ञ का वर्णन है, मैं वह तो नहीं हूँ, न, शान्तिप्रिय जी । मेरी स्थिति गीता में कहे हुए—‘दुःखेष्व-

नुद्विग्नमनाः सुखेशु विगत स्पृहः'—सुख-दुख में समभाव वाली नहीं हो गयी है। हिन्दू जाति ने स्वतन्त्रता रूपी मृग-मरीचिका के लालच में घोर से घोर अनर्थ किया है। माता का हिमालय रूपी किरीट अब खंडित हो जायगा। माता की गंगा और यमुना रूपी मेखला अब टूट जायगी और उसके मोती यत्र-तत्र बिखर जायँगे। माता के चरणों में रत्नाकर अपनी लहरों के जो नूपर पहनाया करता है, वे चरण ही खंडित प्रतिमा के चरण हो जायँगे। अपनी मातृभूमि के शरीर के टुकड़े करने के सिद्धान्त को स्वीकारकर हिन्दू जाति ने अपनी माता की ही चिता तैयार नहीं करायी है, किन्तु इस चिता की ज्वालाओं में यह जाति भी भुलस जायगी, और ऐसी भुलसेगी, कि जब तक यह जीवित रहेगी, तब तक इस भुलस के जले हुए वृणों को धोते-धोते और इन्हीं का उपचार करते-करते इसका सारा समय व्यतीत हो जायगा। शान्तिप्रिय जी, स्वतन्त्रता तो मिलती ही, आज न मिलती, कल मिलती। चालीस करोड़ मानवों के राष्ट्र को सदा कोई पराधीन रख सकता था; और फिर ऐसे राष्ट्र को, जिसने सदा ही स्वतन्त्र होने का प्रयत्न किया है ? ऐसे प्राचीन राष्ट्र के लिए सौ-पचास वर्ष क्या हैं ? और . . . और अभी क्या हम स्वतन्त्रता की ओर बढ़ न रहे थे ? पर . . . पर हाय ! यह . . . यह क्या हुआ ? जो एक सहस्र वर्ष के दासत्व में न हुआ था, वह . . . वह आज हम थोड़ी-सी शीघ्रता के कारण कर बैठे। यह . . . यह, शान्तिप्रिय जी, स्वातन्त्र्य-प्रेम नहीं है, यह है विवेक-हीनता; बड़ी से बड़ी विवेकहीनता। और और इसका अन्तिम परिणाम क्या निकलेगा, यह . . . यह भविष्य वाणी करना, आज किसी के लिए भी सम्भव नहीं है।

[दुर्गा के इस लम्बे भाषण के चलते हुए शान्तिप्रिय के मुख पर आने-जाने वाले रंगों से उसके पल-पल पर बदलते हुए भावों का पता लगता है। भाषण का अन्त होते-होते उसके गाल आँसुओं से भीग जाते हैं। कुछ बेर सझाटा रहता है।]

दुर्गा—और, शान्तिप्रिय जी, यह सब हुआ है आत्मनिर्णय के सिद्धान्त पर। आत्मनिर्णय के सिद्धान्त पर किसी व्यक्ति को आत्महत्या करने का अधिकार नहीं है। आत्महत्या के प्रयत्न करने वाले को न्यायालय दंड देता है, परन्तु आत्मनिर्णय के सिद्धान्त पर एक राष्ट्र को आत्महत्या करने का अधिकार दे दिया गया है। आत्मनिर्णय के सिद्धान्त पर लोगों का शराब पीना ठीक नहीं समझा जाता। कांग्रेस मन्त्रिमंडलों ने भी शराबबन्दी की नीति को कार्यरूप में परिणत भी किया था, परन्तु साम्प्रदायिक मद से मदनोन्मत्त एक जाति को आत्मनिर्णय सिद्धान्त के अनुसार इतने बड़े प्रश्न पर मत देने का अधिकार दिया गया है।

शान्तिप्रिय—(गला साफ़ करते और आँखें पोंछते हुए) और सर्व-जन-मत के नतीजे की कोई अच्छी उम्मीद रखना तो अपने आपको धोका देना है ?

दुर्गा—बड़े से बड़ा धोका। इस सर्व-जन-मत में सिर्फ़ मुसलमानों को मत देने का मन्तव्य भी जो मान लिया गया है। याने पंजाब और बंगाल की प्रायः आधी जनसंख्या इस सम्बन्ध में वोट ही न दे सकेगी। दूसरे शब्दों में पचपन परसेन्ट मुसलमानों में आधे से यदि एक भी अधिक ने विभाजन के पक्ष में मत दिया तो विभाजन हो जायगा, अर्थात् पंजाब और बंगाल के कुल निवासियों में यदि अट्ठाइस प्रतिशत लोग विभाजन के पक्ष में हो गये तो माता के शरीर के टुकड़े ! घोर अन्याय है, घोर ! मेरी समझ में नहीं आता कि अमरनाथ सदृश समझदार व्यक्ति मुसलमानों को अब समझाने की कैसी आशा रखते हैं ?

शान्तिप्रिय—तो आप इस सर्व-जन-मत के मुताल्लिक कुछ करने वाली नहीं हैं ?

दुर्गा—जब मैं हिन्दुओं का मत अपनी ओर न कर सकी, और उन्होंने ऐसे प्रश्न को मुसलमानों के सर्व-जन-मत पर छोड़ दिया, तो मैं मुसलमानों से क्या आशा कर सकती हूँ ?

[फिर कुछ बेर निस्तब्धता ।]

शान्तिप्रिय—(लम्बी साँस लेकर) तो मुल्क के टुकड़े होकर हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के दो फ़ेडरेशन अब तयशुदा बात समझ लेनी चाहिए ।

दुर्गा—एक बार तो अब यह होकर रहेगा ।

शान्तिप्रिय—और इसके बाद हम क्या करेंगे ?

दुर्गा—हाथ पर हाथ रख कर तो हम बैठ नहीं सकते, वह तो हिन्दू-जाति के अब तक के सिद्धान्तों, इतिहास इत्यादि सबके विरुद्ध होगा ।

शान्तिप्रिय—तब ?

दुर्गा—उस समय का कार्यक्रम व्योरेवार तो नहीं बनाया जा सकता, किन्तु जिस दिन से यह सर्व-जन-मत लेना निर्णय हुआ है, उस दिन से मेरे मस्तिष्क में यही विषय घूम रहा है । (कुछ रुककर) शान्तिप्रिय जी, देश के विभाजन का यह प्रश्न कुछ तो स्वार्थी मुसलमानों ने उठाया, जो अपना नेतृत्व चाहते थे और अपने अन्य प्रकार के भी अगणित स्वार्थी की पूर्ति, किन्तु यह भी अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि कुछ के हृदय में, और इनमें मुस्लिम जनता ही अधिक थी, बहुमत-हिन्दू-राज्य से सचमुच का भय भी था । मानते हैं न ?

शान्तिप्रिय—हाँ, यह तो सच है ।

दुर्गा—हिन्दुओं की हर प्रकार की समृद्धि और संघटन करते हुए हमारा यह भी कर्त्तव्य होगा कि हम हिन्दुस्थान में रहने वाले मुसलमानों की समृद्धि के लिए भी उतना ही प्रयत्न करें, साथ ही उनके उचित अधिकारों की हर प्रकार से रक्षा ।

शान्तिप्रिय—(प्रसन्नता से) बिल्कुल ठीक ।

दुर्गा—किसी भी राज्य की सुव्यवस्था तभी रह सकती है, जब उसकी सारी प्रजा समृद्धिशाली रहे, क्योंकि 'बुभुक्षितः किं न करोति' पाप' के अनुसार जो भी भूखा रहेगा, वह कोई भी पाप कर सकता है और 'क्षीणा-

जना निष्करुणा भवन्ति' के अनुसार इस प्रकार क्षुधा से क्षीण मनुष्य के हृदय में करुणा भी नहीं रह जाती; वह पाषाणवत् हो जाता है।

शान्तिप्रिय—(और भी प्रसन्नता से) बिल्कुल ठीक कह रही हैं आप।

दुर्गा—फिर, शान्तिप्रिय जी, हमारे धर्म और संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता क्या है, आप जानते हैं ?

शान्तिप्रिय—कहिए।

दुर्गा—सहिष्णुता, धार्मिक-सहिष्णुता, सामाजिक-सहिष्णुता, हर प्रकार की सहिष्णुता। हमें मुसलमानों को यह सिद्ध कर देना है कि उन्हें हमसे भयभीत होने की आवश्यकता ही न थी और जो विभाजन उन्होंने एक मिथ्या भय के कारण कराया है, उसे मिटाकर पुनः देश को एक कर देने में हानि नहीं, वरन् उन्हें हर प्रकार का लाभ ही है।

शान्तिप्रिय—(अत्यन्त प्रसन्नता से) आपके दिल की इस तरह की रद्दोबदल देखकर, मुझे जितनी खुशी हो रही है, वह मैं लफ्जों में ब्यान नहीं कर सकता।

दुर्गा—(कुछ आश्चर्य से) दिल की रद्दोबदल !... कैसा परिवर्तन, शान्तिप्रिय जी ? मेरे विचार तो सदा ही ऐसे रहे हैं। मैं मुसलमानों पर अत्याचार थोड़े ही करना चाहती थी। हिन्दू जाति में मुसलमानों का विलीन होना मैं एक स्वाभाविक बात मानती थी, आज भी मानती हूँ, और यह हिन्दू संस्कृति की विशालता के कारण, स्वाभाविक ढंग से, किसी बल के उपयोग से नहीं। भारतवर्ष, हिन्दू धर्म, हिन्दू संस्कृति की मैं भक्त हूँ। भारतवर्ष को एक देश रखना चाहती हूँ और संसार के सामने यह सिद्ध करना चाहती हूँ कि हिन्दू धर्म से महान् धर्म, हिन्दू संस्कृति से बड़ी संस्कृति, अन्य कोई नहीं।

शान्तिप्रिय—(विचारते हुए) हाँ, यह तो ठीक ही है।

[कुछ बेर सझाटा।]

दुर्गा—(प्रेमपूर्वक शान्तिप्रिय की ओर देखते हुए) शान्तिप्रिय जी, एक बात और जानते हैं ?

शान्तिप्रिय—कौन-सी ?

दुर्गा—मैं अब आपके संग के बिना कोई काम ही नहीं कर सकती ।

शान्तिप्रिय—ऐसा ?

दुर्गा—जी हाँ, और . . . और यदि हिन्दुस्थान की सरकार हमारे हाथ में आयी तो हम दोनों मिलकर उसे चलाएँगे ।

शान्तिप्रिय—आप तो सब तरह से उसके लायक हैं, लेकिन . . . लेकिन मैं तो . . .

दुर्गा—(हँसते हुए) पर आपके बिना तो अब मैं नालायक हो जाऊँगी न ? (कुछ रुककर) और देखिए, हम दोनों मिलकर इस प्रकार से कार्य करेंगे कि मुसलमान ही दूसरे सर्व-जन-मत की प्रार्थना करेंगे, जिसमें इस अस्वाभाविक और नाशकारी विभाजन का अन्त होगा । (कुछ रुककर) शान्तिप्रिय जी, अभी . . . अभी भी मैं सर्वथा निराश नहीं हूँ ।

[शान्तिप्रिय दुर्गा की ओर देखता है और दुर्गा शान्तिप्रिय की ओर ।]

लघु यवनिका

तीसरा दृश्य

स्थान—दिल्ली में अमरनाथ के बँगले का बैठकखाना

समय—दोपहर

[बैठकखाना यद्यपि आधुनिक ढंग का बना है, तथापि बैठकखाने में कुर्सियाँ, टेबिलें इत्यादि नहीं हैं । ज़मीन पर बैठने का इन्तज़ाम है । खादी की सुन्दर छपी हुई जाजिम पर सफ़ेद खादी की चादर से ढकी हुई गद्दी है और उस पर खादी की सफ़ेद खोलियों से आच्छादित कई मसनद । अमरनाथ गद्दी पर बैठा है । उसके पास, तथा उसके सामने, उसके कई

साथी कार्यकर्ता बैठे हैं, इनमें से कुछ मुसलमान भी हैं। पीरबख्श के साथियों के समान ये भी अलग-अलग उम्र और रंग के हैं। शरीर में भी सब भिन्न-भिन्न प्रकार के, लेकिन कपड़े सब खादी के पहने हैं। बातचीत चल रही है।]

अमरनाथ—हाँ, मैं जनता को जनार्दन का रूप मानता हूँ। जो हिन्दू-मुस्लिम समझौता हुआ है, वह आत्मनिर्णय के उसूल के अनुसार बिल्कुल सही है, लेकिन जो ग़लत भावनाएँ नेताओं के दिलों में हैं वे ही जनता के दिलों में होंगी, यह मैं नहीं मानता। सर्व-जन-मत का नतीजा कुछ प्रान्तों के अलग होने के पक्ष में ही निकलेगा, पहले से ही यह समझ लेना, करोड़ों इन्सानों की बुद्धि को लांछन लगाना है।

एक—आप में जबर्दस्त आशावाद है।

अमरनाथ—बेशक। और मैं चाहता हूँ कि आप सब लोग भी इसी तरह आशावादी रहें। इन्सान ने जहाँ नाउम्मीदी की शरण ली कि उसने उसे दबोचा। आशा देवी है और निराशा राक्षसी। आशा की शरण मनुष्य को काम करने की कूबत देती है, क्योंकि उसका दिल और दिमाग उत्साह से भर जाता है। निराशा का पंजा आदमी को निकम्मा बना देता है, क्योंकि उसकी तमाम उमंगें पहले से ही खत्म हो जाती हैं।

दूसरा—लेकिन आप समझते हैं कि इस सर्व-जन-मत का नतीजा सूबों के अलग होने के खिलाफ़ जायगा ?

अमरनाथ—जितनी आशा उसके हक़ में जाने की है उतनी ही खिलाफ़ जाने की भी। इस सर्व-जन-मत के पहले हमें हर शहर और हर गाँव में घूम-घूमकर लोगों को समझाना चाहिए कि दरअसल हिन्दुस्तान एक ही देश है। एक ही क़ौम यहाँ रहती है। दो धर्मों का अर्थ दो राष्ट्र नहीं हो सकता। एक राष्ट्र में मुस्लिम मजहब मानने वाले रह सकते हैं। जबान, तहज़ीब, राजनैतिक और आर्थिक सवाल तमाम मुल्क के एकसाँ हैं; साथ ही हमें यह द्विराष्ट्र सिद्धान्त इस देश में कहाँ से आया, यह बताना चाहिए। सूडेटन जर्मनों

ने जैसे सवाल उठाये थे करीब-करीब वैसे ही इस द्विराष्ट्र सिद्धान्त मानने वालों ने उठाये हैं। सूडेटन जर्मनों का ऐलान लोगों को दिखाकर, उसमें सूडेटन जर्मनों के स्थान पर मुस्लिम शब्द रखकर, हमें अपनी बात की सचाई का लोगों को सुबूत देना चाहिए। फिर हमें उन्हें यह समझाना चाहिए कि देश के विभाजन से भी हिन्दू-मुस्लिम समस्या हल नहीं हो सकती, हिन्दुस्तान के मुसलमानों में से करीब-करीब एक तिहाई हिन्दू बहुमत वाले सूबों में रहेंगे, इनमें से अधिकांश का अपने जन्म स्थानों और जायदादों को छोड़कर मुस्लिम बहुमत वाले सूबों में जाकर रहना असम्भव कल्पना है; फिर यह करने का यदि प्रयत्न भी किया जाय तो उसमें जो खर्च पड़ेगा उसे देखते हुए यह सिद्ध हो जाता है कि यह गरीब देश इतना खर्च नहीं कर सकता। यूनान में यह कोशिश हुई थी कि तुर्की में बसे हुए यूनानी तुर्की छोड़कर यूनान में बस जायँ, तुर्की में बसे हुए यूनानियों की संख्या सिर्फ़ तेरह लाख थी और इन तेरह लाख यूनानियों को यूनान में लाकर बसाने में एक करोड़ पाउंड खर्च हुआ। इन सब कारणों से विभाजन नहीं, पर एक साथ रहना ही इस समस्या को हल कर सकता है, यह सिद्ध करने की कोशिश करनी चाहिए। और देश के टुकड़े होने से देश कितना कमजोर हो जायगा, गत लड़ाई में कमजोर मुल्कों की क्या हालत हुई, यह भी बताना चाहिए। और अन्त में हमें मुसलमानों को खास तौर पर एक बात और भी बतानी होगी।

एक मुसलमान—कौन-सी ?

अमरनाथ—यह कि देश के टुकड़े होने से मुसलमानों को उल्टी ाहानि पहुँचेगी।

दूसरा मुसलमान—कैसे ?

अमरनाथ—पहला कारण तो यह है कि जब कोई भी जमात एक दायरे के अन्दर बन्द हो जाती है तब उसका सारा राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक विकास रुक जाता है। इस्लाम का सारा इतिहास बताता

है कि उसने अपनी संख्या की कभी भी परवाह न कर हर स्थान में हर प्रकार से अपना विस्तार ही किया है। पाकिस्तान इसे रोक देगा।

तीसरा मुसलमान—हाँ, यह तो ठीक है।

अमरनाथ—दूसरी वजह यह है कि जो टुकड़ा पाकिस्तान में जायगा उससे करीब सात करोड़ और जो हिस्सा हिन्दुस्तान में जायगा उससे बावन करोड़ टैक्स में मिलते हैं। खर्च होता है हिन्दू-मुसलमान सबों पर समान रूप से। टैक्स का बोझ इस समय भी पाकिस्तान जोन के लोगों पर अधिक है। व्यक्तिशः पाकिस्तान जोन का टैक्स है ७.२ और हिन्दुस्तान जोन का ५.३। फिर सरहद्दी प्रान्त को चलाने के लिए केन्द्रीय सरकार एक करोड़ देती है, और सिन्ध को चलाने के लिए एक करोड़ पाँच लाख। बलूचिस्तान को तो केन्द्रीय सरकार ही चलाती है। यह सारा बोझ पाकिस्तान की केन्द्रीय सरकार के मत्थे पड़ेगा। यही सबब है कि जिन प्रान्तों में मुसलमानों का बहुमत है जैसे बंगाल, पंजाब, सिन्ध, सरहद्दी प्रान्त, बलूचिस्तान वहाँ मुस्लिम लीग का इतना जोर नहीं रहा, जितना उन प्रान्तों में रहा है, जहाँ मुसलमान अल्प मत में हैं, और जहाँ के मुसलमानों का पाकिस्तान से बहुत बड़ा नुकसान पहुँचेगा। सर्व-जन-मत होगा उन प्रान्तों में जहाँ मुसलमान बहुमत में हैं; इसीलिए तो इस सर्व-जन-मत के मुस्लिम लीग के खिलाफ़ जाने की मुझे और अधिक आशा है।

तीसरा—आप समझते हैं मुसलमान यह सब सुनेंगे, शान्ति से सुनेंगे ?

अमरनाथ—ज़रूर सुनेंगे, शान्ति से न सुनें तो खुद अशान्त न होकर पूरी-पूरी अहिंसात्मक शान्ति रखकर दूसरों की अशान्ति को हिम्मत से हमें बर्दाश्त कर लेना चाहिए।

चौथा—हिन्दुओं की बात तो मुसलमान सुनेंगे नहीं; (मुसलमान कार्यकर्त्ताओं की ओर देखकर) मुसलमानों की बातें शायद सुन लें।

अमरनाथ—न जाने इन दिनों में यह भावना इस मुल्क में कहाँ से आ गयी है कि हिन्दू हिन्दुओं की ही बात सुनेंगे और मुसलमान मुसलमानों

की। पहले यह बात नहीं थी। अगर हम पुराने इतिहास को देखें तो हमें जान पड़ता है कि वाजिब और महत्त्व की बातों को, चाहे वे हिन्दू ने कही हों या मुसलमान ने, सब ने सुना है। इतना ही नहीं, हिन्दुओं की मातहती में मुस्लिम फ़ौजों ने और मुसलमानों की मातहती में हिन्दू सेनाओं ने जंग तक किये हैं। सन्त कबीर मुसलमान थे। कितने हिन्दू उनके उपदेश सुनते थे। तानसेन मुसलमान थे। कितने हिन्दू उनके गाने सुनते थे। बल्लभाचार्य हिन्दू थे। कितने मुसलमान उनके शिष्य हुए थे। चैतन्य महाप्रभु हिन्दू थे। कितने मुसलमान उनके संग घूमते थे। अरे ! हाल ही में स्वामी विवेकानन्द और रामतीर्थ के भाषणों में कितने मुसलमान जाते थे। गान्धीजी को भी कम मुसलमानों ने अपना नेता नहीं माना और मौलाना मुहम्मदअली के कम हिन्दू अनुयायी नहीं रहे। जब से हिन्दुओं के मन में यह आया कि उनकी बात मुसलमान नहीं सुनेंगे, और जब से मुसलमानों के मन में यह आया कि उनका कहना हिन्दू नहीं, तभी से परिस्थिति बिगड़ते-बिगड़ते वर्तमान अवस्था को पहुँची। जो बात हम ठीक समझते हैं, हमारी आत्मा ठीक समझती है, उसे हम हिन्दू और मुसलमान ही नहीं, दुनिया के हर इन्सान से कहेंगे। (कुछ रुककर) फिर एक बात और है।

पाँचवाँ—कौन-सी ?

अमरनाथ—हमें इस मामले पर सिर्फ़ मुसलमानों से ही बात करने की ज़रूरत है, यह नहीं समझना चाहिए।

एक मुसलमान—तब ?

अमरनाथ—हिन्दू और मुसलमान दोनों से ही हमें बातें करनी हैं, और बिलकुल साफ़-साफ़, बिना किसी लाग-लपेट के।

दूसरा मुसलमान—लेकिन राइल-ग्राम में वोट तो सिर्फ़ मुसलमान देंगे ?

अमरनाथ—ठीक है, लेकिन स्थानीय हिन्दुओं के व्यवहार का भी तो मुसलमानों पर असर पड़ता है, बल्कि सबसे ज़्यादा। यह दो क़ौमों

की बात यद्यपि बाहर से आयी है, पर यहाँ का वायुमंडल अगर इसके पनपने लायक न होता, तो यह इस तरह पनप थोड़े ही सकती थी। मुसलमानों के साथ हिन्दुओं का जैसा बर्ताव होना चाहिए वैसा न था, न आज है ही। किसी जगह जाकर अगर हम मुसलमानों को समझा-बुझाकर, ठीक-ठाक करके भी चले आवें, तो भी उसका तब तक कोई नतीजा नहीं निकल सकता, जब तक हम वहाँ के हिन्दुओं को भी सारा मामला अच्छी तरह न समझा आवें और दोनों के आपसी सम्बन्ध को भी ठीक न करा आवें। (कुछ रुककर) जहाँ के मुसलमानों को सर्व-जन-मत में वोट नहीं देना है, वहाँ के हिन्दू-मुसलमानों के पास भी हमें जाना होगा।

छठवाँ—यह क्यों ?

अमरनाथ—रिश्तेदारियों और दोस्ताने तो दूर-दूर तक फैले हुए हैं न। (कुछ रुककर) हमें सब जगह अच्छी तरह समझा देना है कि हिन्दू और मुसलमान दोनों ही पहले हिन्दुस्तानी हैं और बाद में हिन्दू या मुसलमान। हिन्दुस्तान की जनता भाव-प्रधान है तभी तो यहाँ झंडों, नारों, राष्ट्रीय गानों वगैरह का इतना महत्त्व है। ठीक है न ?

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) हाँ, हाँ, यह तो ठीक है।

अमरनाथ—हिन्दू और मुसलमान दोनों में भावुक कौन ज्यादा हैं, यह कहना मुश्किल है। दलीलों से उनके दिमागों को ठीक करने के बाद हमें उनके दिलों में यह भर देने की कोशिश करनी है कि वे हिन्दुस्तानी हैं। जहाँ एक बार इस भावना ने उनके दिलों पर असर किया कि अलाहदा होने की सारी प्रवृत्ति खत्म हो जायगी। हाँ, इसके लिए एक बात और जरूरी होगी।

पहला मुसलमान—क्या ?

अमरनाथ—खासकर मुसलमानों को इस बात का विश्वास कि उनके मजहबी तथा दूसरे ऐसे मामलात में, जो सिर्फ मुसलमानों से ताल्लुक रखते हैं, उन्हें इंडियन फ्रेडरेशन में हर तरह की आज्ञादियाँ रहेंगी। इस

संरक्षण के लिए भारतीय विधान में ही ऐसी धाराएँ रहेंगी कि उनमें रद्दोबदल फ़ेडरेशन के सिर्फ़ मुस्लिम मेम्बर ही कर सकेंगे, दूसरी जातियों को इस तरह की वैधानिक धाराओं में दखल देने का कोई हक़ न होगा। फिर न्यायालय राजनैतिक दबाव से मुक्त और स्वतन्त्र रहेंगे, जिससे विधान के मुताल्लिक वे अपने निष्पक्ष निर्णय दे सकें। इस तरह के संरक्षण का विश्वास बहुत ज़रूरी है। पृथक्करण की भावना के जन्म और पोषण में अविश्वास एक बहुत बड़ा कारण है।

दूसरा मुसलमान—और फिर मुसलमानों को यह भी तो समझना चाहिए कि अलग होने पर पाकिस्तान में भी वे तब तक न तसल्ली के साथ रह सकते और न अपनी तरक्की कर सकते, जब तक दोनों क़ौमों में इत्तफ़ाक़ न हो।

तीसरा मुसलमान—बेशक, क्योंकि बिना सच्चे इत्तफ़ाक़ के जो मुस्लिम आबादी हिन्दोस्तान में रहेंगी उसे हिन्दू मनमानी तकलीफ़ें पहुँचा सकते हैं।

एक हिन्दू—बिना एकता की भावना के यह तो दोनों तरफ़ से होगा।

पहला मुसलमान—बेशक, और ऐसी हालत में आराम और तरक्की का ख्याल ही दुश्वार है।

चौथा मुसलमान—ज़रूर, आपस में भगड़े होते रहेंगे या तरक्की होगी और आराम मिलेगा ?

दूसरा मुसलमान—इसलिए जब अलग होने पर भी आपसी इत्तफ़ाक़ पहली ज़रूरत है, तब अलग होकर मुल्क के टुकड़ेकर मुल्क और दोनों क़ौमों को कमज़ोर बना, नये-नये भगड़े और नयी-नयी आफ़तों के बीज क्यों बोये जायँ और एक साथ ही रहकर, जो छोटे-मोटे भगड़े हो गये हैं, उनका किसी भी तरह समझौता क्यों न कर लिया जाय ?

पहला मुसलमान—फिर मुसलमान कोई कमजोर कौम नहीं। अगर हम अलग होकर अपने हक़ों की हिफ़ाज़त कर सकते हैं, तो क्या साथ रहकर नहीं? अलग तो हम पाँच करोड़ ही होंगे, साथ-साथ रहे तो इससे करीब-करीब दुगने।

दूसरा मुसलमान—और तमाम रिआया के लिए सच्चे इस्लामी क़ानून तो हम अलग होने पर भी पास कराकर काम में नहीं ला सकते, क्योंकि बंगाल और पंजाब ही हमारे सबसे बड़े सूबे होंगे और दोनों में हिन्दू सिक्ख वगैरह दूसरी कौमों की बहुत बड़ी तादाद है।

[कुछ देर निस्तब्धता।]

अमरनाथ—असेम्बलियों, कौंसिलों वगैरह के चुनावों में हमने काफ़ी परिश्रम उठाये हैं। एक-एक दिन में दस-दस, बीस-बीस और पच्चीस-पच्चीस सभाएँ की हैं। न भोजन की चिन्ता रखी है और न सोने की परवाह। कई बार काफ़ी जोखिम उठायी हैं—रास्ते में नदी, नालों की और मारपीट की भी। उन चुनावों से कहीं ज्यादा महत्त्व रखता है यह सर्व-जन-मत। हमें आज से लेकर जब तक यह सर्व-जन-मत न ले लिया जाय, चुनावों से भी कहीं अधिक परिश्रम करने, तकलीफ़ें और जोखिम उठाने का संकल्प करके यहाँ से उठना चाहिए। आज से इस सर्व-जन-मत के दिन तक शहर-शहर और गाँव-गाँव, हर हिन्दू-मुसलमान तक अपने मत को पहुँचाना हमारी दिवस की चिन्ता और रात्रि का स्वप्न होना चाहिए।

सब—(एक साथ) यही होगा। यही होगा। बेशक बेशक।

लघु यवनिका

चौथा दृश्य

स्थान—पहले अंक के चौथे दृश्य वाले गाँव का ही एक दूसरा स्थान
समय—रात्रि

[एक ओर सड़क का कुछ हिस्सा दिखायी पड़ता है, लेकिन ओंधेरे के कारण धुंधला, दूसरी तरफ़ गाँव के भोपड़े, पक्के मकान, मन्दिर, मस्जिद आदि भी, पर ये भी ओंधेरे की वजह से स्पष्ट नहीं और धुंधले, मिले से। बीच में बहुत बड़े बरगद के दरख्त का कुछ भाग दिख पड़ता है। उसकी शाखाओं से नीचे की तरफ़ आने वाली वरोहें ज़मीन को छू रही हैं, तथा काफ़ी मोटी हो गयी हैं, जिससे जान पड़ता है कि पेड़ बहुत पुराना है। वृक्ष के नीचे कुछ पत्थर की मूर्तियाँ और एक बड़ा-सा पत्थर नज़र आते हैं। यह बड़ा पत्थर अधर सा खड़ा जान पड़ता है पत्थर और मूर्तियों पर सिन्दूर लगा है, पत्थर पर बहुत अधिक; साथ ही कुछ कनेर और जासौन के फूल भी चढ़े हैं। मूर्तियों के चारों तरफ़ फूटे हुए नारियलों के छिलके पड़े हैं। नारियल की चिटकें देवताओं के निकट पड़ी हैं। दरख्त के नज़दीक ही एक तरफ़ आग जल रही है और दूसरी ओर एक बेहाती मशाल लिये बैठा है। आग और मशाल के बीच में कुछ आगे की तरफ़ एक ओर हिन्दू और दूसरी ओर मुसलमान बैठे हुए हैं, पर ये इस तरह एक दूसरे के सामने मुंह किये बैठे हैं कि बरगद के नीचे के देवता स्पष्ट दीख पड़ते हैं और उनकी तरफ़ उनकी पीठ भी नहीं है। इनके बीच में महफूज़ख़ाँ बैठा है। महफूज़ख़ाँ भी मूर्तियों और पत्थर को अवृथ्व नहीं किये हैं, लेकिन उसकी पीठ इन देवताओं की ओर ज़रूर है। आग और मशाल के प्रकाश की वजह से बरगद और उसके आस-पास का सारा दृश्य स्पष्ट है।]

महफूज़ख़ाँ—कितना...कितना वक़्त गुज़र गया। लंका की लड़ाई तो जल्दी ही समाप्त हो गयी थी। कुरुक्षेत्र का महाभारत भी

अठारह दिनों में खत्म हो गया था। पर महीनों बीत जाने पर भी हमारे लंकाकाण्ड, हमारे महाभारत का अन्त नहीं दिख रहा है। जिस गाँव में आपसी प्रेम की वजह से पूरी शान्ति थी, कभी-कभी आर्थिक तकलीफ़ें हमें जरूर दुख दे जाती थीं, लेकिन उन्हें भी हम परस्पर सहयोग के सबब से किसी न किसी तरह सह ही लेते थे, उसी गाँव में आज यह गृह-कलह, हिन्दू-मुसलमानों का भगड़ा ! व्यक्तिगत ताल्लुकात में ही नहीं, पर सार्व-जनिक सम्बन्धों में भी यहाँ कितना मेल-जोल था। यहाँ ईद के दिन मुसलमान, मुसलमान ही गले न मिलते थे पर हिन्दू और मुसलमान भी। यहाँ मुहर्रम के दिन मुसलमान ही आँसू नहीं बहाते थे, पर हिन्दू भी। यहाँ दिवाली के चिराग हिन्दुओं के घर में ही नहीं जलते थे, पर मुसलमानों के घर भी उनसे रोशन होते थे। यहाँ होली के रंग से हिन्दू ही रंगीन न होते थे, पर मुसलमानों पर भी वह उसी तरह खिलता था। मन्दिर और मस्जिद तो, भाइयो, आपसी मुहब्बत के साधन होने चाहिए।

एक मुसलमान किसान—पर, भइया, तुम मस्जिद कहाँ मानते हो ?

एक हिन्दू किसान—और न मन्दिर।

महफ़ूजखाँ—मैं मानूँ चाहे न मानूँ, पर आप लोग तो मानते हैं न, और ईश्वर तथा खुदा को मानकर....

एक युवक—भइया, ईश्वर और खुदा की बात तुम छोड़ दो।

महफ़ूजखाँ—अच्छा छोड़ देता हूँ, और ताऊ और चाचा की बात करता हूँ; वह तो कर सकता हूँ न ? कल तक जिन ताऊ और चाचा का काम एक दूसरे के बिना एक मिनिट भी न चलता था, आज महीनों से वे एक दूसरे से बोले तक नहीं हैं। सारे हिन्दू मुसलमानों और तमाम मुसलमान हिन्दुओं की जान के गाहक हो रहे हैं। क्या पिछला वक्त अब सपना ही हो गया ? सपने भी कभी लौट-लौटकर आ जाते हैं, पर वह समय तो सपनों के समान भी लौटता नहीं दिखता। यह क्या हुआ ? क्या हो रहा है ? इन दिनों मैंने हरचन्द

कोशिशों कीं कि किसी तरह यह कलह मिटे, पर कलह मिटना तो दूर रहा, कलह का कारण ही कोई साफ़-साफ़ बताने को तैयार नहीं। कितनी मुश्किलों से आज आप सब को इकट्ठा कर पाया हूँ। और देखिए, या तो आज इस भगड़े का खात्मा हो, या फिर मैं अपना बसना-बोरिया बाँधकर चला।

[महफूजखाँ चुप होकर दृष्टि को घुमाता हुआ सब की तरफ़ देखता है। कोई कुछ नहीं बोलता। सब एक दूसरे की ओर एक विचित्र प्रकार की दृष्टि से देखते हैं और जब एक देखता है कि दूसरा उसी की तरफ़ देख रहा है, तब वह जल्दी से अपनी नज़र या तो नीची कर लेता है, या दूसरी ओर घुमा लेता है। कुछ देर सन्नाटा।]

महफूजखाँ—फिर भी आप चुप हैं। मैं कहता हूँ, जब तक आप साफ़-साफ़ बात न करेंगे, जब तक अपना-अपना दिल खोलकर एक दूसरे के सामने न रखेंगे, तब तक इस भगड़े का अन्त हो ही नहीं सकता। (फिर भी सब को चुप देखकर, बरगद के नीचे के देवताओं की ओर इशारा कर) इस देवता को तो आप हिन्दू-मुसलमान सभी मानते हैं। खुश किस्मती से आज इसीकी साया में अब इकट्ठे हुए हैं। मैं इसी देवता की कसम दिलाता हूँ आपको, कर डालिए... कर डालिए किसी तरह दिल को साफ़ !

एक मुसलमान किसान—पर, भइया, तुम तो इस देवता को भी नहीं मानते।

एक हिन्दू मजदूर—तभी तो देखो, देव को भी पीठ किये बैठे हैं।

महफूजखाँ—(कुछ घूमकर बैठते हुए, मुल्ला से) बोलो, ताऊ, तुम्हीं बोलो, तुम्हीं कुछ कहो।

मुल्ला—(लम्बी साँस लेकर) क्या बोलूँ मैं ?

महफूजखाँ—(चौधरी से) तो आप ही बोलो, चाचा।

चौधरी—(गला साफ़ करते हुए) मुझे तो कुछ नहीं कहना है।

महफूजखाँ—(किसान मजदूरों से) अच्छी बात है, ताऊ और चाचा को अगर कुछ नहीं कहना है, तो आप ही लोग कहिए, कोई तो बोलिए।

एक हिन्दू किसान—हम क्या कहें ? ऐसी कौन-सी बात है, भइया, जो तुम्हें मालूम न हो ?

दूसरा हिन्दू किसान—हाँ, हाँ, तुम्हें क्या नहीं मालूम है ?

एक हिन्दू मजदूर—फिर हमारे मुँह से क्यों कुछ कहलाना चाहते हो ?

दूसरा हिन्दू मजदूर—हाँ, भइया, हमारे घाव ताजे न करो !

महफूजखाँ—मुझे भगड़े के कोई कारण मालूम नहीं यह मैं नहीं कहता, पर मैं चाहता हूँ कि आप लोग ही एक दूसरे के सामने अपनी शिकायतें पेश करें, भगड़े का सच्चा और टिकाऊ तस्फिया तभी हो सकेगा।

चौधरी—तो फिर मुल्ला ही क्यों नहीं कहते। वे कहें न कि उन्हें हमारे खिलाफ क्या कहना है ?

मुल्ला—पहले वह कहे जिसने भगड़ा शुरू किया।

कुछ हिन्दू—(एक साथ कुछ उत्तेजित हो) हिन्दुओं ने ? हिन्दुओं ने भगड़ा शुरू किया है ?

कुछ मुसलमान—(और उत्तेजना से, एक साथ) बेशक ! .. बेशक !

महफूजखाँ—(जल्दी से) आप लोग शान्त . . . थोड़ा शान्त रहें; नहीं तो फिर इस इकट्ठे होने का नतीजा और भी बुरा निकलेगा। (कुछ रुककर, मुसलमानों से) अच्छा थोड़ी देर को अगर यह भी मान लिया जाय कि भगड़ा हिन्दुओं ने शुरू किया है, तो उसकी शिकायत तो आप ही लोगों को करनी चाहिए न ?

(एक मुसलमान किसान—तुम तो हमेशा हिन्दुओं की पच्छ करते ही हो। भगड़ा हिन्दुओं ने शुरू किया, यह थोड़ी देर को कैसे मान लिया जाय ? यह तो हमेशा को मानना होगा कि इस गाँव में भगड़ा हिन्दुओं ने शुरू किया। न दुर्गा पूजा के बाजे हमारी मस्जिद के सामने बजते, न भगड़ा होता।)

(एक हिन्दू किसान—इसके पहले कभी बाजे मस्जिद के सामने काहे को बजे होंगे ? अरे मियाँजी, हिन्दुओं का हर जुलूस, जिसमें पहले तुम लोग भी सामिल रहते थे, मस्जिद के सामने से ही निकलता था और बाजा बजाता हुआ ।)

(मुल्ला—इसके पहले मस्जिद के सामने कभी बाजे नहीं बजे ।

चौधरी—अरे ! काहे को भूठ बोलते हो, मुल्ला

मुल्ला—(क्रोध से) इसीलिए तो मैं बोलता नहीं था; मैं भूठा

कुछ हिन्दू—(एक साथ उत्तेजना से) हाँ, हाँ, एक बार नहीं हजार बार भू

महफूजखाँ—(बीच ही में हिन्दुओं को रोकते हुए) फिर फिर अशान्ति भाई ! शान्ति शान्ति से बात करो । (मुसलमानों से) अच्छा, भगड़े का एक सबब तो बाजा हुआ । और कहो ।

मुल्ला—कुछ नहीं, बाबा, हमें कुछ नहीं कहना है; हम तो भूठे हैं ।

महफूजखाँ—देखो, ताऊ, ऐसी बातों का ख्याल नहीं करना पड़ता; भगड़ों में तो ऐसी कहा-सुनी हो ही जाती है । (कुछ रुककर मुसलमानों से) हाँ, तो आगे बढ़ो ।

[कोई कुछ नहीं बोलता । कुछ देर निस्तब्धता ।]

महफूजखाँ—(हिन्दुओं से) अच्छा, देखो, मुसलमानों का मन जिस बात से दुखा वह उन्होंने कह दी । अब आप लोग बताओ कि आपकी क्या शिकायत है ?

(एक हिन्दू किसान—हमारी ? हमारी शिकायत तो बहुत बड़ी है । बीच गाँव में दिनदहाड़े इन लोगों ने गाय काटी है ।

एक मुसलमान किसान—हमारी मस्जिद के सामने बाजा बजाने से मस्जिद नापाक हो गयी । कुप्फारे के बिना वह पाक नहीं हो सकती थी ।

एक मुसलमान मजदूर—और मस्जिद के पाक हुए बिना नमाज नहीं ।

दूसरा मुसलमान मजदूर—गाय की कुर्बानी हमारा मजहबी हक है ।

दूसरा मुसलमान किसान—और वही करके हमने मस्जिद को पाक किया ।

एक हिन्दू मजदूर—(क्रोध से) ओ हो रे ! पाक और नापाक . . .

दूसरा हिन्दू मजदूर—(उत्तेजित स्वर से) इसके पहले कभी इस तरह गाय कटी ?

कुछ हिन्दू—(एक साथ उत्तेजित स्वर से) कभी नहीं ! कभी नहीं !

महफूजखाँ—(जल्दी से) देखो, फिर फिर अशान्त हो रहे हो । शान्ति शान्ति । (कुछ रुककर, हिन्दुओं से) अच्छा और कोई शिकायत ?

एक हिन्दू किसान—यही क्या छोटी शिकायत है ?

[कुछ देर निस्तब्धता ।]

महफूजखाँ—(दोनों समुदायों की तरफ देखकर) अच्छा, देखो, मैं किसी का पक्ष न लेकर सच्ची-सच्ची बात कहूँ; सुनोगे ?

[कोई कुछ नहीं बोलता, फिर सन्नाटा ।]

महफूजखाँ—जहाँ तक बाजे का प्रश्न है, मेरा यह कहना है कि इसके तीन पहलू हैं। अगर कोई यह कहता है कि बाजे से नमाज में खलल पहुँचता है तो मैं कहूँगा कि अगर ध्यान लगा हो तो किसी बाहरी आवाज से वह नहीं टूट सकता ।

एक मुसलमान किसान—तुम क्या जानो, कभी ध्यान लगाते हो ?

महफूजखाँ—चाहे न लगाता होऊँ, पर जानता अवश्य हूँ । फिर बड़े-बड़े शहरों के बाजारों में भी मस्जिदें हैं । वहाँ के हल्ले-गुल्ले, मोटरों के बिगुल और बग्गी, ताँगों की घंटियों से यदि नमाज में विघ्न नहीं पड़ता तो मामूली बाजों से कैसे पड़ सकता है ? और आज तो यह सवाल विघ्न का न रहकर कदमों का हो गया है । मस्जिद से दस कदम पर बजायी हुई मन्द बाँसुरी विघ्नकारक मानी जाती है, पर चालीस कदम पर बजने वाला

भड़भड़ाता हुआ ढोल नहीं। दूसरा पहलू यह है कि मुसलमानों के लिए यह मज़हबी सवाल नहीं है।

कुछ मुसलमान—(एक साथ) मज़हबी सवाल कैसे नहीं है ?

महफूज़ख़ाँ—अगर आप मेरी पूरी बात बिना दखल दिये शान्ति से सुन लेंगे तो मान जायेंगे कि मेरा कहना ठीक है। हमारे पैगम्बर साहब के ज़माने में यह प्रश्न उठा ही नहीं था। मैंने कुरान शरीफ़ की एक-एक आयत ध्यान से पढ़ी है। आप जानते हैं मैं अरबी ज़बान अच्छी तरह जानता हूँ। सारे कुरान शरीफ़ में इसके मुताल्लिक मुझे कहीं एक शब्द भी नहीं मिला। यह सवाल पहले पहल उठा था मिसर देश में हज़रत उमर इब्न खत्ताब के समय में। उस वक़्त मिसर के लोग ज्यादातर ईसाई थे। इस्लाम कहता है हर मुसलमान को फ़ौज का सिपाही होना चाहिए, परन्तु मुस्लिम सेना में उस वक़्त इस्लाम के अनुयायी ही भरती हो सकते थे और इस्लाम ग्रहण न करने वालों को फ़ौज में भरती न हो सकने की वजह से जज़िया नामक टैक्स देना पड़ता था, जिसका आगे चलकर एक कुत्सित रूप हो गया। मिसर पर हज़रत उमर का दखल होते ही जब मिसर वालों के फ़ौज में भरती होने या जज़िया देने का प्रश्न उठा, तब वहाँ के बाशिन्दगान ने दोनों ही बातें अस्वीकृत कर दीं। उस वक़्त हज़रत उमर और उनमें एक समझौता हुआ और उस समझौते में तय हुआ कि मिसर में मुसलमानों के मज़हबी काम बिना किसी गुल-गपाड़े वग़ैरह के होने दिये जायेंगे। पहले-पहल मस्जिद के सामने बाजे बजने का प्रश्न वहाँ उठा और वह मुसलमानों और ईसाइयों के दम्यान एक सुलहनामे की शकल में। इससे मज़हब का कोई सम्बन्ध ही नहीं है।

एक मुसलमान किसान—आखिर तुम हिन्दुओं की पच्छ करोगे, यह तो हम जानते ही थे।

महफूज़ख़ाँ—बिना पूरी बात सुने मुझे दोष न दो। मैंने अभी सवाल के दो पहल बताये हैं, एक पहलू और भी जो है।

एक मुसलमान मजदूर—उस पहलू को और बता दो ।

महफूजखाँ—वह पहलू है मस्जिद की इज्जत का ।

दूसरा मुसलमान किसान—सो हम तुम्हारी राय जानते हैं । तुम्हारे लिए मस्जिद और किसी मामूली मकान में कोई फर्क नहीं ।

महफूजखाँ—मेरे लिए चाहे न हो, पर आप लोगों के लिए तो है । और जब हिन्दू आप के पड़ोसी हैं तब उन्हें आप की भावनाओं का ख्याल जरूर ही करना होगा । पहले बाजे बजते थे या नहीं, इस वक्त यह प्रश्न नहीं उठना चाहिए । अगर अब मुसलमानों के दिल बाजे बजने से दुखने लगे हैं तो हिन्दुओं का कर्त्तव्य है कि वे मस्जिद के सामने बाजा बजाना बन्द कर दें ।

एक हिन्दू मजदूर—आखिर, भइया, हो तो मुसलमान ही ।

महफूजखाँ—तुम मुझे बिल्कुल गलत समझ रहे हो, मैंने मुसलमानों का जरा भी पक्ष नहीं लिया है । (कुछ रुककर) अच्छा, अब गोकुशी के सम्बन्ध में भी मेरी बात सुनो । इस सवाल के दो पहलू हैं ।

कुछ हिन्दू—(उत्तेजना से) दो दो पहलू ! इसके इसके दो पहलू हो हो नहीं सकते ।

महफूजखाँ—(जल्दी से) शान्ति ! शान्ति ! पहले मेरी पूरी बात सुन लो । सबसे पहले मैं यह कहूँगा कि गोकुशी को आप लोगों ने जो धर्म का सवाल बना लिया है, यह गलत बात है ।

एक हिन्दू किसान—तुम धरम-करम क्या जानो ?

महफूजखाँ—मैं धर्म मानता नहीं, पर जिसे आप लोग धर्म कहते हैं, उसे जानता जरूर हूँ । पहले हिन्दू तक गऊ का गोश्त खाते थे ।

कुछ हिन्दू—(एक साथ कानों पर हाथ रख) शिव ! शिव ! हरि ! हरि ! . . .

महफूजखाँ—न मानो तो अपनी पुरानी पुस्तकें देख लो । महाराज रन्तिदेव के यहाँ हजारों गायें इसलिए रहती थीं कि उनका मांस दावतों

में खिलाया जाता था। भवभूति ने उत्तर रामचरित नाटक में लिखा है कि एक मर्तबे जब वसिष्ठ ऋषि वाल्मीकि ऋषि के आश्रम को गये तब उनकी खातिरदारी के लिए आश्रम की एक बछिया मारी गयी थी।

एक हिन्दू किसान—(क्रोध से) भूठ ! बिल्कुल भूठ !

कुछ हिन्दू—(एक साथ, क्रोध से) हाँ ! हाँ ! भूठ ! भूठ !

महफूजखाँ—सच है या भूठ, यह तो महाभारत, पुराणों और इस नाटक को किसी अपने पंडित से पढ़वा कर सुन लो।

तीसरा हिन्दू किसान—(क्रोध से) नाटक-चेढक तो हम जानते नहीं, पर जिसने यह सब लिखा, वह भूत ही तो है, हिन्दू नहीं।

महफूजखाँ—भूत नहीं, जिसने नाटक लिखा उसका नाम भवभूति था; और महाभारत तथा पुराणों के लिखने वाले तो वेदव्यास थे।

तीसरा हिन्दू किसान—जो कुछ हो, जिनने भी यह सब लिखा है वे अधरमी होंगे; पापी ! वेद सास्तर, किसी में लिखा है कि हिन्दू गाय का गोस खाते थे ?

महफूजखाँ—हाँ, वेदों में भी गोमेध यज्ञ का जिक्र है।

चौथा हिन्दू किसान—वह मैं भी जानता हूँ, पर इन जग्यों में जिसका बलिदान किया जाता था उन्हें रिसी लोग तपस्या के बल से जिला देते थे।

महफूजखाँ—यह भी कहीं लिखा है ?

चौधरी—(क्रोध से) बी० ए० पास करने से तू समझता है कि तू हिन्दुओं के धरम सास्तर भी जानता है ?

महफूजखाँ—चाचा, मैं हिन्दुओं के धर्मशास्त्र को उतना ही जानता हूँ, जितना कुरान को। बी० ए० में मैंने संस्कृत लिया था। मुझे धर्म पर विश्वास न होते हुए भी संस्कृत से इसलिए दिलचस्पी थी कि उससे हिन्दुस्तान की पुरानी विचारपद्धति और संस्कृति का भी पता लग जाता

है। इसलिए मैंने हिन्दुओं के वेद, शास्त्र, स्मृतियाँ, पुराण, काव्य, नाटक आदि मुसलमानों की पुस्तकों से भी ज्यादा पढ़े होंगे, कम नहीं।

एक हिन्दू किसान—और तुम मानते हो कि पहले हिन्दू गऊ का गोस खाते थे ?

महफूजखाँ—जरूर खाते थे और बाद में वह इसलिए छोड़ा गया कि उससे भी हमारी रोटी के सवाल का बहुत बड़ा सम्बन्ध था। खेती इस देश के लोगों का मुख्य पेशा हो गया था। यहाँ की खेती बगैर गाय-बैल के हो नहीं सकती थी। इसलिए इन्हें पूज्य-पशु मानकर इनका गोश्त खाना धर्म की नज़र से वर्जित कर दिया गया और आज भी इस मुल्क में गोकुशी हिन्दू-मुसलमान सब के लिए समान रूप से बुरी चीज़ है। आप सब जानते हैं कि मुसलमान होते हुए भी मैंने आज तक गो-मांस खाना तो दूर रहा, पर उसे छुआ तक नहीं है।

एक मुसलमान किसान—तुम हो नाम के मुसलमान, मजहबी मुसलमान नहीं; गो-कुशी हमारा मजहबी सवाल है।

महफूजखाँ—ग़लत बात है। आप लोग जानते हैं कि हमारे पैगम्बर साहब तक ने कभी गो-मांस नहीं खाया। एक बार गाय के गोश्त के शोरबे में उन्होंने अपनी सबसे छोटी उँगली डुबोकर उसे केवल ओठ पर लगाया था, यह भी सब नहीं थोड़े से उलेमाँ मानते हैं। यह इसलिए जिससे गाय कुर्बानी के जानवरों में शामिल कर दी जाय। गाय की कुर्बानी इस्लाम में कोई ज़रूरी बात नहीं। फिर हिन्दुस्तान में तो उसकी कुर्बानी आवश्यक चीज़ हो ही नहीं सकती। (कुछ रुककर) जिस गऊ के दूध को बचपन में पीकर हम सिर्फ़ बड़े ही नहीं होते, परन्तु बड़े होने पर उसके न मिलने पर न मज़बूत रह सकते हैं न निरोग, बीमारी में जिसके दूध के बिना हम ज़िन्दा नहीं रह सकते, जिसके बच्चों को बैल बनाकर हम खेती करते और माल ढोते हैं, जिनके बिना हमारी ज़मीन पड़ती पड़ जायगी, हमारा माल एक जगह से दूसरी जगह न जायगा, अरे ! जिसके गोबर

के बिना हमारे घर तक साफ़ नहीं रह सकते, उस गऊ को मारने से बुरी और कोई बात नहीं हो सकती; उसकी कुर्बानी से मस्जिद पाक न होकर उल्टी नापाक हो जायगी।

एक मुसलमान मजदूर—(खड़े होते हुए) चलो जी, हम यहाँ से चलेंगे। आधे तीतर और आधे बटेर, हिन्दू और मुसलमान एक ही में मिले हुए आदमी से हम मजहबी सबक नहीं ले सकते।

दूसरा मुसलमान मजदूर—(खड़े होते हुए) गोकुशी हमारा मजहबी फर्ज है, उसे हम बन्द नहीं कर सकते।

[सब मुसलमान खड़े हो जाते हैं।]

एक हिन्दू किसान—(अत्यन्त उत्तेजना से) देखें अब कौन इस गाँव में गऊ माता को मारता है ? उसका सिर धड़ पर न रहेगा।

कुछ हिन्दू—(खड़े होकर एक साथ) हाँ, हाँ, ... हाँ, हाँ, ... उनके सिर उनके सिर कभी धड़ पर न रहेंगे।

महफूजखाँ—(खड़े होकर, दोनों हाथ जोड़ते हुए) शान्ति ! शान्ति ! बैस्मि, बैठिए।

एक हिन्दू मजदूर—(उत्तेजना से) क्या क्या बैठिए ? बैठिए ? हम हैं हिन्दू। समझे हिन्दू ही रहेंगे।

दूसरा हिन्दू मजदूर—ये सिर सिर कटने की बातें हैं।

महफूजखाँ—कैसी सिर कटने की बातें ? गो-बध बुरा है, बहुत बुरा है, यह तो मैं मानता हूँ, लेकिन अगर एक गाय के मारने पर आप आदमियों के सिर काटने की बातें करते हैं तो गोरी फ़ौजों के लिए जो हज़ारों गायें कटती हैं उन काटने और खाने वालों के सिर आप क्यों नहीं काटते ? इन छोटी-छोटी मजहबी कही जाने वाली बातों

एक हिन्दू किसान—(बीच ही में अत्यन्त उत्तेजना से) ये छोटी . . . छोटी बातें हैं

एक मुसलमान किसान—(बीच ही में अत्यन्त क्रोध से) मजहबी बातें छोटी-छोटी

दूसरा मुसलमान किसान—(अत्यन्त उत्तेजित हो) और अगर हिन्दू, हिन्दू ही रहेंगे, तो मुसलमान भी मुसलमान ही

तीसरा मुसलमान किसान—(अत्यन्त क्रोध से) हाँ, वह हिन्दू नहीं हो जायेंगे !

एक मुसलमान मजदूर—(क्रुद्ध स्वर में) और डरते भी नहीं हैं, वे हिन्दुओं से, सुना ?

कुछ हिन्दू—(एक साथ क्रोध से) तो . . . तो क्या हिन्दू डरते हैं ?

कुछ मुसलमान—(एक साथ क्रोध से) मुसलमान भी नहीं डरते !
. . . . मुसलमान भी

[एकदम हल्ला होने लगता है। हल्ले में महफूजख़ाँ की आवाज़ तो नहीं सुनायी देती, पर वह हाथ जोड़-जोड़कर लोगों को बैठाने की कोशिश कर रहा है, यह दिख पड़ता है। उसी समय नेपथ्य में मोटर खड़े होने की आवाज़ आती है। सब लोग चुप होकर सड़क की तरफ़ देखते हैं। अमरनाथ का एक साथी के साथ सड़क से प्रवेश।]

महफूजख़ाँ—(आगे बढ़कर) आइए, आइए, (और भी आगे बढ़कर हाथ जोड़कर) नमस्ते। (किसान-मजदूरों से) आप लोग भी नज़दीक आ जाइए।

[समुदाय के लोग एक दूसरे की ओर देखते हुए विवश-से आगे बढ़ते हैं। अमरनाथ भी अपने साथी के साथ नज़दीक आ जाता है। दोनों आगन्तुक हाथ जोड़कर सब का अभिवादन करते हैं। समुदाय के लोग भी अभिवादनों का उत्तर देते हैं।]

अमरनाथ—(सब की तरफ़ देखते हुए) हम सचमुच शुभ मूर्त में आये। इतने सज्जनों के एक साथ ही सड़क के इतने नज़दीक दर्शन हो

गये, (पत्थर और मूर्तियों की ओर देखकर) और फिर ऐसी पवित्र जगह, (भुककर पत्थर और मूर्तियों को प्रणामकर) खुश किस्मती है।

महफूजखाँ—आपके दर्शन तो हमारे लिए भी खुश किस्मती की ही बात है, लेकिन लेकिन वह ऐसे समय हुए हैं कि क्या कहूँ ?

अमरनाथ—क्यों, क्या हुआ, महाशय ?

महफूजखाँ—अपने गाँव का भगड़ा मेहमानों के सामने रखना तो कोई बहुत अच्छी बात नहीं, परन्तु अगर भगड़े के बीच में ही मेहमान आ जायँ तो फिर क्या किया जा सकता है ?

अमरनाथ—आपको इस तरह के संकोच की जरूरत नहीं, महाशय। असल में तो सारा हिन्दुस्तान हमारा घर है और हम सब उस घर में रहने वाले कुटुम्बी; न कोई ग़ैर है, न मेहमान। क्या मामला है ?

महफूजखाँ—मामला तो कुछ नहीं है। हम धजी का साँप बना बैठे हैं, और वही अब हमें डस रहा है। हम आज उसे मारने के लिए ही इकट्ठे हुए थे, पर शायद हम सब की ताकत से उसकी फुफकार में अधिक बल है। बैठिए, आप भी निपटाने की कोशिश कर देखिए। (समुदाय से) भाइयों ! आप भी बैठ जाओ।

(सब लोग बैठते हैं, परन्तु समुदाय वाले अनमने से।)

अमरनाथ—क्या जो वोट पड़ने वाले हैं उनके सम्बन्ध में कोई भगड़ा है ?

महफूजखाँ—तह में शायद हो, ऊपर से देखने से तो मस्जिद के सामने बाजे और गोकुशी का प्रश्न है।

अमरनाथ—अच्छा !

महफूजखाँ—जी हाँ ! और उसे दोनों ही फ़िरके छोटा-सा प्रश्न न मानकर, बड़ा अहम मज़हबी मसला मानते हैं।

अमरनाथ—सवाल छोटा है, या बड़ा यह बात नहीं है, परन्तु बड़े बेमौक़े यह उठा है, इसमें सन्देह नहीं। धर्म बड़ी भारी और बड़ी पवित्र

चीज है और इस धर्म का काम है—एक दूसरे को मिलाना, पर देखा यह जाता है कि छोटी-छोटी चीजों को धर्म का रूप दे दिया जाता

एक मुसलमान किसान—(बीच ही में) मस्जिद की बेइज्जती छोटी चीज नहीं ।

कुछ मुसलमान—(एक साथ) हरगिज नहीं हरगिज नहीं ।

एक हिन्दू किसान—और गाय काटना छोटी बात है न ?

कुछ हिन्दू—(एक साथ) बिल्कुल नहीं । बिल्कुल नहीं ।

अमरनाथ—लेकिन, भाइयो, फूट इन चीजों से भी बड़ी चीज है । आपसी फूट ने हमें गुलाम बनाया । साम्प्रदायिकता का जहर फैलाकर इस गुलामी को कायम रखने के विदेशियों ने अगणित प्रयत्न किये । गुलाम कभी सच्चे धर्म का पालन कर सकते हैं ? उनका तो एक ही मजहब होता है—गुलामी को दूर कर आजादी प्राप्त करना, चाहे वे गुलाम किसी भी जाति के हों और कोई भी धर्म मानने वाले । बमुश्किल गुलामी की जंजीरों के कटने का अवसर दिखा और उस मौके पर भी अगर इस तरह की छोटी-छोटी बातें—बाजा, गोकुशी को लेकर हम आपस में लड़ेंगे

एक मुसलमान मजदूर—(खड़े होते हुए) अरे ! यह सब पढ़े-लिखे शहराती एक-से होते हैं ।

दूसरा मुसलमान मजदूर—(खड़े होते हुए) हाँ, कोई गुलामी की बात करता है, और कोई रोटी की ।

महफूजखाँ—दोनों ही जो सबसे जरूरी वस्तुएँ हैं ।

एक मुसलमान किसान—(खड़े होकर) मजहब छोड़ दें । मस्जिद की इज्जत इन चीजों से भी बड़ी चीज है ।

कुछ मुसलमान—(एक साथ) बेशक ! बेशक !

एक हिन्दू किसान—(खड़े होते हुए) धरम नहीं छोड़ सकते । आजादी और रोटी से भी बड़ा सवाल है—गाय का ।

कुछ हिन्दू—(एक साथ) जरूर ! जरूर !

महफूजख़ाँ—शान्त शान्त होइए आप लोग । करिए जो खुशी हो, लेकिन मेहमानों की बात तो सुन लेनी चाहिए ।

अमरनाथ—पर, भाइयो, धर्म या मज़हब छोड़ने को तो मैंने कभी नहीं कहा । मैं आपके यहाँ कई शहरों और गाँवों से घूमता हुआ आ रहा हूँ । और अधिकांश जगह मैंने देखा कि इसी तरह के न जाने कितने सवालों की इस समय बाढ़-सी आ गयी है । मुल्क को तक्रसीम करने के मामले में जो वोट पड़ने वाले हैं, वह आप जानते हैं ?

कुछ लोग—(एक साथ) हाँ, हाँ, जानते हैं ।

अमरनाथ—इसी तरह की बातों की मदद ले-लेकर देश का बँटवारा कराया जाने वाला है । आप लोग क्या यह चाहते हैं कि आपके देश के टुकड़े-टुकड़ेकर मुल्क को कमज़ोर बना दिया जाय ? हिन्दू राज्य अलग और मुस्लिम राज्य अलग क़ायम किये जायँ ? हिन्दू और मुसलमानों को सदैव के लिए जुदा-जुदाकर इस देश में ऐसी समस्याएँ उठा दी जायँ, जिनका हल करना आगे चलकर ग़ैरमुमकिन हो जाय ? हिन्दू राज्य के सब मुसलमान तो अपनी ज़मीन-जायदाद छोड़कर मुस्लिम राज्य में जायँगे नहीं, और मुस्लिम राज्य के सब हिन्दू, हिन्दू राज्य में नहीं । हिन्दुस्तान में मुसलमानों और पाकिस्तान में हिन्दुओं पर कितने अत्याचार होंगे, इसकी आप कल्पना कीजिए । कितनी कितनी तकलीफ़ें बढ़ जायँगी ?

एक मुसलमान किसान—अभी कौन-सा आराम है ?

दूसरा मुसलमान किसान—हाँ, अलग-अलग हो जाना तो कहीं बेहतर होगा ।

कुछ मुसलमान—(एक साथ) हाँ ! हाँ ! कहीं कहीं बेहतर ।

एक मुसलमान मज़दूर—चलो, चलोजी, हमें इन शहरातियों की बातें ही नहीं सुनना है ।

कुछ मुसलमान—(उठते हुए) हाँ ! हाँ ! चलो . . . चलो ।

महफूजखाँ—देखिए देखिए

[कोई नहीं सुनता । सब मुसलमानों का प्रस्थान ।]

एक हिन्दू किसान—(उठते हुए) हाँ, हाँ, हम भी इन शहरातियों की बातें सुनते-सुनते बहरे हो गये ।

दूसरा हिन्दू किसान—(उठते-उठते) इस तरह की गऊ-हत्या से तो देस क्या गाँव-गाँव का भी बँटवारा हो जाय तो अच्छा ।

तीसरा हिन्दू किसान—(उठते-उठते) जहाँ हिन्दू हों वहाँ मुसलमान नहीं ।

एक मजदूर—(उठते-उठते) जहाँ मन्दिर हो वहाँ मस्जिद नहीं ।

कुछ हिन्दू—(एक साथ उठते हुए) ठीक ! ठीक ! न देखेंगे । न भौकेंगे ।

महफूजखाँ—परन्तु परन्तु परन्तु भाइयो ! सुनो सुनो तो

[कोई नहीं सुनता । सब हिन्दू भी जाते हैं । मशाल वाले का भी प्रस्थान । परन्तु चन्द्रमा के उदय होने के कारण काफ़ी प्रकाश फैल गया है । अमरनाथ अपने साथी के साथ, तथा महफूजखाँ रह जाते हैं । कुछ बेर सप्ताटा ।]

अमरनाथ—(महफूजखाँ से) आप कुछ पढ़े-लिखे आदमी जान पड़ते हैं ?

महफूजखाँ—यों ही, थोड़ा बहुत ।

अमरनाथ—अंग्रेजी भी शायद जानते हैं ?

महफूजखाँ—जी हाँ, बी० ए० तक पढ़ लिया था ।

अमरनाथ—अच्छा, तो शायद ग्राम-निवासियों की सेवा के लिए ही यहाँ रहने लगे हैं ?

महफूजख़ाँ—जी हाँ, जब रहना शुरू किया तब तो कुछ ऐसे ही विचार थे, लेकिन अब देखता हूँ कि यहाँ के लोगों के साथ बिचारों की पटरी ही नहीं बैठती।

अमरनाथ—आपके समान पढ़े-लिखे आदमी यदि गाँवों में रहने लगे तब तो गाँव वालों को न जाने कितने फ़ायदे पहुँचने चाहिए।

महफूजख़ाँ—पर यह लोग मुझे अधरमी समझते हैं, और भी न जाने क्या-क्या ? मन्दिर, मस्जिद और मज्रहबी ढोंग घतूरो पर मेरा विश्वास भी नहीं है।

[कुछ देर निस्तब्धता ।]

अमरनाथ—मैंने इन कुछ दिनों में कई शहरों और गाँवों में देखा कि नये-नये भगड़े उठे हुए हैं, शायद इस समय इसके लिए कोई संघटित शक्ति काम कर रही है।

महफूजख़ाँ—(विचारते हुए) हो सकता है। (फिर विचार में कुछ रुककर) आप क्या इस सर्व-जन-मत के सम्बन्ध में दौरे पर निकले हैं ?

अमरनाथ—जी हाँ।

महफूजख़ाँ—आपका शुभ नाम पूछ सकता हूँ ?

अमरनाथ—मुझे लोग अमरनाथ कहते हैं।

महफूजख़ाँ—ओ ! मशहूर कांग्रेस नेता। (कुछ रुककर) यद्यपि आपकी और मेरी फ़िलासफ़ी में बहुत अन्तर है, आप गाँधीवादी हैं और मैं साम्यवादी, पर आपके इस काम में अगर मुझसे कोई सहायता मिल सके तो मैं हाज़िर हूँ।

अमरनाथ—धन्यवाद। आप ज़रूर मेरे साथ चलें पर...पर माफ़ कीजिए अगर एक बात पूछूँ तो।

महफूजख़ाँ—पूछिए, जो आप पूछना चाहते हैं अवश्य पूछिए।

अमरनाथ—आप अपने को साम्यवादी कहते हैं और आप हिन्दुस्तान

के टुकड़े होने के खिलाफ हैं ? यहाँ के साम्यवादी दल ने तो विभाजन का समर्थन किया है ।

महफूजख़ाँ—मैं साम्यवादी होते हुए भी यहाँ के साम्यवादी दल का सदस्य नहीं हूँ । मार्क्स का अनुयायी मैं जरूर हूँ और इसीलिए अपने को साम्यवादी कहता हूँ, पर मार्क्स के अनुयायी होने का यह अर्थ मैं नहीं मानता कि आज हिन्दुस्तान के साम्यवादी जो कुछ कर रहे हैं उन सब बातों का मैं समर्थन करूँ । दृष्टान्त के लिए रूस के मित्र राष्ट्रों के साथ आते ही यहाँ के साम्यवादी दल ने इस लड़ाई को जो लोक-युद्ध कहना आरम्भ किया उसके मैं सख्त खिलाफ़ था ।

अमरनाथ—(हर्ष से) बहुत अच्छा . . . बहुत अच्छा ।

महफूजख़ाँ—इसी प्रकार रूस का दृष्टान्त देकर यहाँ के साम्यवादियों ने आत्मनिर्णय के सिद्धान्त पर मुस्लिमलीग की पाकिस्तान की माँग का जो समर्थन किया उसके भी मैं खिलाफ़ हूँ, क्योंकि रूस की और इस देश की परिस्थिति में महान अन्तर है ।

अमरनाथ—अच्छा ।

महफूजख़ाँ—बेशक । क्योंकि रूस के अनुसार भारत को यह अधिकार क्षेत्रीय-निवास-ऐक्य के सिद्धान्त पर न दिया जाकर धार्मिक बिना पर दिया जाने वाला है । पाकिस्तान की माँग धर्म की नींव पर होने से समयानुसार नहीं । फिर रूस में यह अधिकार तीन कारणों से दिया जा सका ।

अमरनाथ—किन तीन कारणों से ?

महफूजख़ाँ—पहला यह कि पृथक्करण की वहाँ भावना ही नहीं है । इस भावना को देश-द्रोही और क्रान्ति-विरोधक भावना मानकर सदा कुचलने की कोशिश की गयी है । दूसरा यह कि हर प्रजातन्त्र आर्थिक दृष्टि से साम्यवादी है और दो साम्यवादी प्रजातन्त्र एक दूसरे से कभी अलग नहीं होना चाहते । और तीसरा यह कि केवल एक साम्यवादी

दल ही वहाँ के चुनाव आदि में उम्मीदवार खड़े कर सकता है, दूसरे दलों का वहाँ कोई राजनैतिक अस्तित्व नहीं।

अमरनाथ—(विचारते हुए) हाँ, यह तो है।

महफूजुल्ला—मेरी समझ में नहीं आता कि आर्थिक दृष्टि से यह विभाजन देश को हानि पहुँचाता है यह जानते हुए भी साम्यवादी इसका समर्थन कैसे कर रहे हैं? और जहाँ तक आत्मनिर्णय का सम्बन्ध है वहाँ तक पहले भारतवर्ष साम्यवादी हो जाय तब यहाँ रूस के सदृश आत्मनिर्णय का अधिकार दिया जा सकता है।

अमरनाथ—और भारत कदाचित् कभी साम्यवादी हो न सकेगा।

महफूजुल्ला—यह तो मैं नहीं मानता। फिर जब तक भारत साम्यवादी नहीं हो जायगा तब तक यहाँ की समस्याएँ हल होने वाली नहीं। इस समय की भारत की ही नहीं सारे संसार की समस्त समस्याएँ जातीयता की वजह से हैं। जातीयता के नारे का कारण है पूँजीवाद। शोषण, युद्ध, सारे भगड़े की जड़ है जातीयता। सच्चे साम्यवादियों का न कोई राष्ट्र है और न देश। समस्त संसार के श्रमजीवी उनके भाई हैं और सारा संसार उनका देश। जातीयता और उससे उत्पन्न तमाम मसलों का हल है साम्यवाद। भारत में भी ज्योंही साम्यवाद कायम हुआ त्योंही यहाँ की भी सब समस्याएँ हल हो जायँगी। हिन्दू और मुसलमानों का आर्थिक सवाल एक दूसरे से भिन्न नहीं और आर्थिक प्रश्न ही प्रधान चीज है।

अमरनाथ—(मुस्कराकर) माफ़ कीजिए यदि एक बात कहूँ।

महफूजुल्ला—जरूर जरूर कहिए।

अमरनाथ—आपने अभी कहा था कि यहाँ के लोगों के साथ आपके विचारों की पटरी नहीं बैठती, उसका मुख्य कारण आपकी फ़िलासफ़ी ही है।

महफूजखाँ—मानता हूँ, यहाँ सब के सब पैटी बूज्वा फ़िलासफ़ी से अन्धे जो हैं।

अमरनाथ—पर आपके मानिन्द पढ़े-लिखे और सेवा के लिए त्याग-कर गाँवों में आकर रहने वाले सज्जन को तो अपने को इस तरह का बनाना चाहिए कि आपके मुल्क के लोग आपसे सच्चा फ़ायदा उठा सकें।

महफूजखाँ—पैटी बूज्वा फ़िलासफ़ी के निहित हितों का नाश होने पर इस देश के लोगों के फ़ायदे मुनस्सर हैं।

अमरनाथ—निहित हितों के नाश से, आपका ख्याल है कि हिन्दू-मुसलमानों के तथा दूसरे सारे सवाल हल हो जायँगे ?

महफूजखाँ—इसमें मुझे थोड़ा-सा भी सन्देह नहीं है।

अमरनाथ—खैर, चलिए, अब हम लोग साथ-साथ रहेंगे ही; साथ रहने से शायद एक दूसरे को अधिक समझ सकेंगे। (कुछ रुककर) अब ज़रा अपना नाम भी बताने की कृपा कीजिए।

महफूजखाँ—मुझे लोग महफूजखाँ कहते हैं।

अमरनाथ—(आश्चर्य से) आप मुसलमान हैं ?

महफूजखाँ—(मुस्कराकर) मेरा मुसलमान होना कोई आश्चर्य की बात मालूम होती है ?

अमरनाथ—(विचारते हुए) नहीं. . . . आश्चर्य. . . . आश्चर्य की तो नहीं, लेकिन. . . . लेकिन. . . .

महफूजखाँ—(बीच ही में) जी नहीं, आश्चर्य की मालूम होती होगी। यह सुनकर कि मैं मुसलमान हूँ, आपके चेहरे पर आश्चर्य के चिह्न देख रहा हूँ; ऐसे ही एक दिन मैंने एक मुस्लिम लीग वाले के मुख पर देखे थे।

अमरनाथ—(और भी गम्भीरता से विचारते हुए) ऐसा ? तो. . . . तो फिर दोनों को आश्चर्य होते भी आश्चर्य के परिणामों में फ़र्क़ होगा।

महफूजखाँ—कैसा ?

अमरनाथ—उन्हें आश्चर्य के साथ दुख हुआ होगा और मुझे आश्चर्य के साथ सुख महान सुख हुआ है । महफूजखाँ साहब, आप आदर्श मुसलमान हैं; वैसे वैसे मुसलमान, जैसे मुसलमानों की हिन्दुस्तान को जरूरत है ।

महफूजखाँ—परन्तु परन्तु मैं तो अपने को मुसलमान मानता ही नहीं, मैं तो इतना ही मानता हूँ कि मैं मुसलमान के यहाँ पैदा हुआ हूँ और मेरा नाम मुसलमानी नाम है । अमरनाथ जी, मैं अपने को केवल इन्सान मानता हूँ ।

अमरनाथ—ऐसा ही सही । यदि इस देश में सब ऐसे ही इन्सान हो जायँ

महफूजखाँ—(मुस्कराकर) देश यदि साम्यवादी हो गया तो सब ऐसे ही इन्सान हो जायँगे ।

अमरनाथ—बिना इसके नहीं ?

महफूजखाँ—कदापि नहीं, अमरनाथ जी ।

अमरनाथ—और देश को किस तरह का साम्यवादी होना चाहिए ?

महफूजखाँ—(कुछ आश्चर्य से अमरनाथ की तरफ़ देखते हुए) किस तरह का साम्यवादी ? मैं समझा नहीं ।

अमरनाथ—हाँ, रूस के सदृश, या जर्मनी के सदृश, क्योंकि वे भी तो अपने को नेशनल सोशलिस्ट या

महफूजखाँ—ओ ! समझा ! जिस तरह का साम्यवादी कार्ल मार्क्स दुनिया को बनाना चाहता था, वैसा साम्यवादी ।

अमरनाथ—पर वैसा तो दुनिया का कोई देश नहीं बन सका । हिन्दोस्तान को किस तरह का साम्यवाद मुआफ़िक़ होगा यह सोचने की बात है । और जहाँ तक मूल सिद्धान्तों का सम्बन्ध है वहाँ तक तो खुद मार्क्स ने कहा था कि वही मार्क्ससिस्ट नहीं रह गया । खैर, साथ रहने से

इस तरह के मामलों पर भी चर्चा हो सकेगी। (कुछ रुककर) आज
आज मैं कम से कम ऐसे साथी को पाकर कृतार्थ हो गया, यह तो
निःसंकोच होकर कह सकता हूँ।

[अमरनाथ महफूजख़ाँ को खींचकर हृदय से लगा लेता है।]

लघु यवनिका

पाँचवाँ दृश्य

स्थान—दिल्ली में जहाँनारा के बँगले का बरामदा

समय—तीसरा पहर

[दृश्य वही है, जो पहले अंक के दूसरे दृश्य में था। जहाँनारा खड़ी
हुई अपने तोते से बात कर रही है।]

जहाँनारा—अच्छा अच्छा तू गंगाराम ही रह, शुबराती न
सही; और और इतने पर भी मैं तो तुझे किसी ऐसे शख्स को नहीं
दे सकती जिसके तू दस्तरख्वान के काम आये ! हरगिज़
हरगिज़ नहीं, गंगाराम !

तोता—गंगाराम ।

जहाँनारा—गंगाराम ! गंगाराम ! गंगाराम !
और ? गंगाराम, तू शुबराती न हुआ और इतने पर भी मेरी मुहब्बत
तुझ पर से कम न हुई। दुनिया में शायद दो ही ऐसे हैं, जो चाहे कैसे
भी क्यों न हों कैसे भी क्यों न रहें—मेरी मरजी के मुताबिक, या
खिलाफ़, उन पर मेरी मुहब्बत कम नहीं हो सकती, हरगिज़ नहीं
हरगिज़ नहीं हरगिज़ हरगिज़ नहीं—एक तू और दूसरा शान्तिप्रिय ।

तोता—आवर लाइफ़ इज़ ए रैग्यूलर फ्रीस्ट ।

जहाँनारा—हाँ, थी, गंगाराम, कभी थी; आवर लाइफ़ वाज़ ए रैग्यूलर फ़्रीस्ट ! लेकिन अब....अब उसकी याद भर रह गयी है। कहाँ....कहाँ वह ज़िन्दगी ! आह ! शान्तिप्रिय के साथ की वह ज़िन्दगी ! उसकी पैदाइश का दिन आज भी वैसा का वैसा याद आता है । उसके बचपन के खेलों का नज़ारा आज भी वैसा का वैसा नज़र के सामने से घूम जाता है । दिल्ली आने के बाद के उसके साथ के दिन भूलने की कोशिश करने पर भी नहीं भूले जाते ! आज भी यहीं है वह और यहीं हूँ मैं ! लेकिन कहाँ है वह और कहाँ हूँ मैं ! (कुछ रुककर) पर....पर वह है हिन्दू और मैं हूँ मुसलमान दो अलग-अलग क्रौमों के, जो क्रौमें राइल-आम के फ़ैसले से हमेशा के लिए अलग-अलग हो गयी हैं, जिनके मुल्क भी बँट गये हैं, जिनके फ़ेडरेशन भी दो हो गये हैं और आज....आज मिस दुर्गा जिस तरह हिन्दोस्तान की प्रीमियर हुई हैं, और उनकी कैबिनिट में जिस तरह शान्ति-प्रिय मिनिस्टर हुआ है, उसी....उसी तरह पीरबख़्श भी पाकिस्तान के वज़ीरे आज्रम होकर आते ही होंगे और मैं....मैं भी हो जाऊँगी उनकी कैबिनिट की मिनिस्टर । हिन्दू के साथ हिन्दू हो गया....

तोता—चित्रकोट के घाट पे भई सन्तन की भीर ।

तुलसिदास चन्दन घिसैं तिलक देत रघुबीर ।

जहाँनारा—ठीक है....लखनऊ में मिस दुर्गा के बँगले पर अब हिन्दुओं की इसी तरह भीड़ हुआ करेगी । शान्तिप्रिय चन्दन घिसेंगे और तिलक करेंगी मिस दुर्गा । (कुछ रुककर) और....और लाहौर में, गंगाराम ?

तोता—गंगाराम ।

जहाँनारा—हाँ, हाँ, गंगाराम । शुबराती नहीं, गंगाराम । लाहौर में....लाहौर में पीरबख़्श के बँगले पर मुसलमानों की भीड़ हुआ करेगी । (कुछ रुककर) पर....पर वहाँ चन्दन और तिलक

कहाँ ? (फिर कुछ रुककर) लेकिन इससे क्या ? चन्दन तिलक न सही, हम तरह-तरह के गुलाबों को एक जमीन पर इकट्ठा करेंगे । उनमें जो बहार आएगी, उस उस बहार का नज़ारा हाँ, ... हाँ, और और वह नज़ारा उनके लिए जो उन्हें इकट्ठा कर रहे हैं, ... कैसा कैसा खुशनुमा होगा ? उस उस वक्त मुझसे और पीरबल्लश से ज़्यादा खुशकिस्मत कौन होगा ? (कुछ रुककर) फिर जाती तौर पर भी कितना कितना चाहते हैं मुझे पीरबल्लश ! घुमा-फिराकर इस मामले में कुछ न कुछ कहते ही जो रहते हैं । लेकिन मेरे मेरे दिल में उनके लिए वैसे ख्याल ही नहीं उठते, कोशिश, ... हाँ, कोशिश करने पर भी नहीं ।

तोता—आवर लाइफ़ इज़ ए रैग्यूलर फ्रीस्ट ।

जहाँनारा—कहाँ कहाँ होने पाती है लाइफ़ फ्रीस्ट, गंगाराम ?

तोता—गंगाराम ।

जहाँनारा—मुझकिन है शान्तिप्रिय और दुर्गा की लाइफ़ रैग्यूलर फ्रीस्ट हो गयी हो ।

[पीरबल्लश का प्रवेश । जहाँनारा पीरबल्लश को देख, पीरबल्लश की ओर बढ़ती है ।]

जहाँनारा—(मुस्कराते हुए) प्रीमियर होने पर मुबारिकबाद देती हूँ ।

पीरबल्लश—(मुस्कराते हुए) और मैं आपको मिनिस्टर होने पर । (कुछ रुककर गम्भीर हो) और और इस मुबारिकबाद के साथ ही (फिर कुछ रुकते हुए) हाँ, साथ ही मुझको खुदा ने जितनी ताकत और क़ब्रत दी है, उस सब को इकट्ठा कर आज आज एक बात आपसे और और भी कहता हूँ (फिर कुछ रुकते हुए) कहता कहता क्या देता देता हूँ, मैं अपने आपको भी, आपको देता हूँ । (घुटने टेक देता है ।)

[जहाँनारा हक्की-बक्की-सी रह जाती है । उसके मुँह से कुछ नहीं निकलता और दृष्टि जमीन में गड़-सी जाती है । पीरबलश अत्यन्त आतुरता से जहाँनारा की तरफ़ देखता है । कुछ देर एक विचित्र प्रकार का सन्नाटा ।]

तोता—आवर लाइफ़ इज़ ए रैग्युलर फ्रीस्ट ।

जहाँनारा—(चौंककर तोते की तरफ़ देख, फिर पीरबलश की ओर देखते हुए, भर्राये हुए स्वर में) अच्छा, उठिए, उठिए तो आप ।

पीरबलश—(एकटक जहाँनारा की तरफ़ देखते हुए) जब तक यह नज़र मंज़ूर न हो जायगी, मैं उठने वाला नहीं हूँ ।

जहाँनारा—(बगलें भाँकते हुए कुछ रुककर, और भी भर्राये हुए स्वर में) मैं आपसे दस्तबस्ता अर्ज़ करती हूँ कि आप ठीक तरह से खड़े तो हो जायँ, या बैठ जायँ, (जल्दी-जल्दी) कोई अगर आ गया तो पाकिस्तान के पहले प्रीमियर की यह हालत देखकर क्या कहेगा ?

पीरबलश—(उसी तरह जहाँनारा को देखते हुए) इस तरह की बेशुमार वज़ारतों को मैं आपके क्रदमों पर कुर्बानि करता हूँ । मैं तय करके आया हूँ कि आज जब तक आप इस नज़र को कुबूल न कर लेंगी, मैं उठने वाला नहीं हूँ ।

जहाँनारा—(कुछ रुककर, अत्यन्त भर्राये हुए स्वर में, जल्दी-जल्दी) लेकिन . . . लेकिन, मिस्टर पीरबलश, इस नज़र को वही कुबूल कर सकता है, जो खुद भी इस तरह की नज़र करने की हालत में हो ।

पीरबलश—ऐसा ? (दृष्टि नीचे झुक जाती है । कुछ रुककर, उठते हुए) तो . . . तो आप पहले ही अपने को किसी की नज़र कर चुकी हैं । (फिर कुछ रुककर) मैं जान भी गया कि वह कौन है । (फिर कुछ रुककर) क्यों, मिस जहाँनारा, वह शान्तीप्रिये ही है न ?

जहाँनारा—(अत्यन्त आश्चर्य से) क्या . . . क्या फ़रमा रहे हैं आप !

पीरबल्लश—मैं जो कुछ कह रहा हूँ, वह बिल्कुल सच है।

तोता—चित्रकोट के घाट पै भई सन्तन की भीर।

तुलसिदास चन्दन घिसैं तिलक देत रघुबीर।

पीरबल्लश—(तोते की ओर देखकर, जहाँनारा की तरफ़ देखते हुए)

उसे आपने बूत बनाकर चन्दन घिसना तय ही कर लिया था, लेकिन इसी बीच यह मजहबी और सियासी मामलात आ गये, बात रुक गयी; पर. . . . पर अभी भी आप उससे मुहब्बत करती हैं; जरूर. . . . जरूर-जरूर करती हैं। यह. . . . यह तोता इसका मुबूत है।

जहाँनारा—(उसी प्रकार आश्चर्य से) न जाने क्या. . . . क्या आप सोच रहे हैं? पीरबल्लश साहब, शान्तिप्रिय की और मेरी भाई-बहन की मुहब्बत थी। आज भी शायद मैं उसे चाहती होऊँ, लेकिन. . . . लेकिन जिस तरह आप सोच रहे हैं, उस तरह नहीं, ... हरगिज़. . . . हरगिज़. . . . हरगिज़ नहीं। . . . और. . . . फिर ज़रा उसकी और मेरी उम्र की तरफ़ भी तो देखिए; मैं उम्र में उससे कितनी बड़ी हूँ।

पीरबल्लश—इससे. . . . इससे क्या, मिस जहाँनारा, उम्र का इतना-सा फ़र्क़ ऐसी मुहब्बतों के रास्ते में नहीं आता। (कुछ रुककर घृणा से मुस्करा कर) भाई-बहन की मुहब्बत ! इन्सान सिर्फ़ दूसरों को ही नहीं, अपने आपको भी इसी तरह धोखा देने की कोशिश किया करता है ! (कुछ रुककर, लम्बी साँस ले) उफ़ ! एक काफ़िर से किसी मुसलमान की. . . . और वह भी मुस्लिम-औरत की. . . . आपके मानिन्द औरत की इस तरह की मुहब्बत ! क्या. . . . क्या कहूँ !

[जहाँनारा का सिर झुक जाता है, पर उसके मुख से कुछ नहीं निकलता। पीरबल्लश चुपचाप इधर-उधर घूमते हुए कनखियों से जहाँनारा की ओर देखता है।]

तोता—गंगाराम ! गंगाराम !

यवनिका

तीसरा अंक

पहला दृश्य

स्थान—लाहौर में एक छोटा-सा हॉल

समय—सन्ध्या

[हॉल की दीवारें सफ़ेद कलई से पुती हैं; उन पर कोई रंग है और न तस्वीरें, शीशे आदि। सीलिंग सागौन की पट्टियों से पटी है। सीलिंग और दरवाज़े व खिड़कियों पर वार्निश है। ज़मीन सीमेंट की है और उस पर बीचोंबीच एक बड़ी-सी गोल लकड़ी की टेबिल रखी है। टेबिल के चारों तरफ़ लकड़ी की कुर्सियाँ हैं। दीवारों के नज़दीक कुछ बेंचें पड़ी हैं। इन कुर्सियों और बेंचों पर अनेक हिन्दू और सिक्ख बैठे हुए हैं। वेष-भूषा से सब पंजाबी दिखते हैं।]

एक हिन्दू—हाँ, हाँ, एक मुसीबत हो तो कही जाय ?

एक सिक्ख—अब तो इन मुसीबतों की गिनती ही ग़ैर-मुमकिन-सी होती जाती है।

दूसरा हिन्दू—रोज़-रोज़ यह आफ़तें बढ़ती ही जा रही हैं।

दूसरा सिक्ख—कुछ ही दिनों की बात है, मेरा नाम ही ठेकेदारों की सरकारी लिस्ट में से काट दिया गया।

तीसरा सिक्ख—और मेरा भी। अरे ! मेरे वालिद ने यही काम किया, उनके वालिद ने यही और उनके वालिद ने भी यही।

तीसरा हिन्दू—और कुछ ही दिन हुए मेरे लड़के की नौकरी की दख्खास्त नामंजूर कर दी गयी। उसने एम० ए० सैकिन्ड क्लास में

पास किया था और एक मुसलमान ने थर्ड क्लास में। मुसलमान को नौकरी मिल गयी और उसकी दरख्वास्त खारिज।

चौथा हिन्दू—नौकरियों में मुस्लिम आबादी के मुताबिक करीब पचपन फ़ीसदी नौकरियाँ तो मुसलमानों के लिए रिज़र्व हैं, और इस तरह की जो बेइन्साफ़ियाँ होती हैं, यह अलग।

पाँचवाँ हिन्दू—मेरे दो लड़कों के लिए स्कूल में जगह नहीं मिली।

चौथा सिक्ख—सो तो मेरे लड़के का भी हुआ।

पाँचवाँ सिक्ख—नौकरियों के मानिन्द स्कूलों और कॉलेजों में भी मुस्लिम आबादी के हिसाब से करीब पचपन फ़ीसदी जगह मुसलमान लड़कों के लिए रिज़र्व हैं न, भाई।

पाँचवाँ हिन्दू—हाँ, चाहे खाली ही क्यों न पड़ी रहें।

छठवाँ हिन्दू—और मैं तो एक मुकद्दमा इसीलिए हार गया कि मुकद्दमा मुसलमान के साथ चल रहा था।

छठवाँ सिक्ख—अरे ! यह तो पंजाब में हर जगह रोज़मर्रा की बात है। मुसलमानों के खिलाफ़ कोई हिन्दू या सिक्ख पंजाब में जीत सकता है।

सातवाँ हिन्दू—और देहातों की बात जानते हो ? वहाँ तो नादिर-शाही मची है, नादिरशाही।

आठवाँ हिन्दू—हाँ, हिन्दुओं की औरतें भगायी जा रही हैं। बच्चे उड़ाये लिये जा रहे हैं। हिन्दू मुसलमान बनाये जा रहे हैं। तबलीग़ और तन्ज़ीम का खूब दौरदौरा है। और हिन्दू-मुसलमानों के बीच अगर कोई मारपीट हो जाती है, और हिन्दू अगर पुलिस में रिपोर्ट लिखाने जाते हैं तो भी कोई सुनायी नहीं।

पाँचवाँ हिन्दू—और इसके खिलाफ़ मुसलमानों की भूठी-भूठी रिपोर्टों पर भी हिन्दुओं को कितना दिक़्र किया जाता है।

छठवाँ सिक्ख—सिक्खों को भी कितना !

सातवाँ हिन्दू—हाँ, हाँ, और भी न जाने क्या-क्या हो रहा है ?

नवाँ हिन्दू—अरे ! भाई, मेरी दूकानें तो पेशावर, कलकत्ता और कराँची में भी हैं। फ्रन्टियर, बंगाल, सिन्ध, सब जगह यहीं अन्धेर मचा हुआ है। हमारे रोज़गार-धन्धों को बर्बाद करने के लिए तरह-तरह के रास्ते इस्तेमाल किये गये हैं। इनकम्टैक्स के मामलों में हमें इतना तंग किया जाता है, जिसका ठिकाना नहीं। शहरों के अच्छे मुहल्लों में हम अगर जायदाद खरीदना या बनवाना चाहें तो हक़शफ़ा वगैरह के न जाने कैसे नये-नये भगड़े उठाकर हमारे रास्ते में बेशुमार रोड़े अटकाये जाते हैं।

आठवाँ सिक्ख—यह नतीजा निकला मुल्क के तक्सीम करने का।

नवाँ सिक्ख—पर मैं तो यह कहूँगा कि इस हालत के लिए हम उतने ही ज़िम्मेदार हैं, जितने मुसलमान।

आठवाँ सिक्ख—यह आपने खूब फ़र्माया ! हम किस तरह ज़िम्मेदार हैं ?

नवाँ सिक्ख—इस तरह कि हम यह सब बर्दाश्त कर रहे हैं।

आठवाँ सिक्ख—हाँ, यह तो ठीक है।

नवाँ सिक्ख—हम इस सरकार के क़ानून ही न मानें, सत्याग्रह करें, सत्याग्रह पर जिनका यक़ीन न हो, वह दंगा-फ़साद, अभी अक्ल ठिकाने आ जाय सरकार की।

पहला हिन्दू—यह आप बिल्कुल ठीक फ़रमा रहे हैं।

नवाँ सिक्ख—अरे ! हम हिन्दू और सिक्ख मिलकर तो पंजाब में क़रीब पैंतालीस परसेन्ट हैं। यह मुसलमान जिन सूबों में पाँच-पाँच परसेन्ट थे, वहाँ भी इन्होंने दंगे किये हैं।

दूसरा सिक्ख—पर उस वक़्त और इस वक़्त की हालत में फ़र्क़ है।

तीसरा सिक्ख—क्या फ़र्क़ है, जनाब ?

दूसरा सिक्ख—यह फ़र्क़ है कि उस वक़्त सरकार बाहर की थी। उसकी एक तो इन दंगों में पोशीदा मदद रहती थी, दूसरे उसकी इस ख़्वाहिश

के सबब से कि दंगे हमेशा के लिए कभी भी खत्म न हों, दंगे में जो भी कम-जोर पड़ता था उसे मदद देकर मजबूत को थोड़ा ज्यादा सताया जाता था। तराजू बराबर हो जाता था और दूसरे भगड़े के लिए ज़मीन तैयार हो जाती थी। अब अगर दंगे होंगे तो, हम कुचले तो जा ही रहे हैं, और बुरी तरह कुचल डाले जायँगे।

तीसरा सिक्ख—(उत्तेजना से) सिक्ख होकर क्या पस्तहिम्मतों की बातें करते हो। कुचल डाले जायँगे ! गुरु तेगबहादुरसिंह, गुरु गोविन्दसिंह, हमारे दूसरे गुरुओं और बहादुरों ने भी कभी इस तरह सोचा था ?

दसवाँ हिन्दू—देखिए, अब तक मैं तो बोला नहीं, चुप रहा। आप लोगों को क्या इस सरकार से अब कोई भी उम्मीद नहीं रही ?

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) मुतलक नहीं; मुतलक नहीं।

दसवाँ हिन्दू—लेकिन मैं अभी भी बिल्कुल नाउम्मीद नहीं हुआ हूँ। मेरा तो खयाल है कि हम लोगों पर जो यह जुल्म हो रहे हैं, इसकी ज़िम्मेदारी पीरबख्श साहब और उनकी कैबिनेट के मिनिस्ट्रों पर बहुत कम है।

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) क्या खूब ! क्या खूब !

नवाँ सिक्ख—तब ज़िम्मेदारी किस पर है, जनाब ?

दसवाँ हिन्दू—ज्यादातर छुट भइयों पर—नायब तहसीलदारों, तहसीलदारों, पुलिस हैड कान्स्टेबलों, सब-इन्स्पेक्टरों, म्यूनिसिपल और डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के प्रेसीडेंटों, इन जमातों के अफसरों—इसी तरह के छोटे-छोटे आदमियों पर।

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) ब्रे वो ! ब्रे वो !

नवाँ सिक्ख—अब तक दुनिया में सात ताज्जुब की चीज़ें सुनी थीं, यह आज आठवीं आपकी राय सुन रहा हूँ। ताज्जुब की बात यह है कि अभी भी हिन्दू या सिक्खों में ऐसे आदमी मौजूद हैं, जो इस कैबिनेट पर भरोसा

रखते हैं। (सब लोगों की ओर देखकर) क्यों, भाइयो ! और किसी को भी इस सरकार पर किसी तरह का भरोसा रह गया है ?

दसवें हिन्दू को छोड़कर शेष सब—(एक साथ) बिल्कुल नहीं, बिल्कुल नहीं ।

दसवाँ हिन्दू—खैर; मेरी तो अभी भी वही राय है और मैं समझता हूँ कि इस हॉल में न सही, लेकिन मुल्क में कई लोग मेरी राय के भी हैं । मेरी इस राय का सबब कुछ जाती तजुर्बा है । मैंने सुबूतों के साथ जब कभी भी किसी बेइन्साफ़ी का मामला किसी मिनिस्टर के सामने रखा है, उसकी फ़ौरन तहकीकात हुई है, इन्साफ़ हुआ है और बेइन्साफ़ी करने वाले को सजा दी गयी है ।

नवाँ सिक्ख—ऐसे कितने मामले होंगे ?

दसवाँ हिन्दू—बहुत कम हैं, यह मैं मानता हूँ, क्योंकि इस सरकार के क्रायम होने के पहले से ही अकल्लीयतें इसके खिलाफ़ थीं । मिनिस्ट्रों पर भरोसा न रहने की वजह से उनके सामने सुबूत के साथ बहुत कम मामले पेश किये जाते हैं ।

पाँचवाँ सिक्ख—पर मैं तो दूसरी ही बात कहता हूँ । सवाल जाती मामलात का है ही नहीं, सवाल तो है सारे तरीक़े का; मसलन नौकरियों, स्कूलों और कॉलेजों में मुसलमानों के लिए जगह रिज़र्व क्यों की गयी ?

दूसरा सिक्ख—और जहाँ इस तरह के रिज़र्वेशन नहीं भी हैं, जैसे सरकारी ठेके वगैरह, वहाँ से भी सिक्खों और हिन्दुओं को निकाल-निकालकर मुसलमान क्यों भरे जा रहे हैं ?

दसवाँ हिन्दू—आप लोग एक बहुत बड़ी ग़लती कर रहे हैं ।

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) कैसी . . . कैसी ?

दसवाँ हिन्दू—यह पाकिस्तान है; यह मानकर चलना चाहिए कि मुसलमानों का यहाँ ऊँचा हाथ रहेगा ही । हिन्दोस्तान में क्या हो रहा है ?

सवाल यह है कि यहाँ के हिन्दू और सिक्खों पर जान-बूझकर क्या कोई जुल्म हो रहे हैं ?

पाँचवाँ हिन्दू—किसी एक जमात के ऊँचे हाथ रहने का मतलब ही दूसरी जमातों पर जुल्म होना होता है ।

नवाँ सिक्ख—इतना ही नहीं, साहब, जान-बूझकर जुल्म किये जाते हैं ।

सातवाँ हिन्दू—हाँ, हाँ, देहातियों की बातें मैंने बतायीं कि वहाँ क्या हो रहा है ।

छठवाँ हिन्दू—और कचहरियों के इन्साफ़ की बात मैंने बतायी कि वहाँ क्या हो रहा है ।

नवाँ हिन्दू—और मैंने तो आपको फ्रन्टियर, बंगाल, सिन्ध सब का हाल बताया ; सब जगह यही हाल है ।

सातवाँ हिन्दू—हाँ, हाँ, नादिरशाही, पूरी-पूरी नादिरशाही मची हुई है । और यह तमाम मिनिस्टर यह सब करा रहे हैं । लम्बी-लम्बी सपीचें देते हैं जैसे बड़े इन्साफ़ और इत्तफ़ाक़-पसन्द हों, लेकिन अन्दर-अन्दर अहलकारों से मिलकर यह तमाम बातें कर रहे हैं ।

पहला हिन्दू—और हमारे जाती हालात खराब हुए हैं, इतना ही नहीं, हमारे मज़हब, हमारी तहज़ीब, हमारी ज़बान सब ख़तरे में हैं । मुसलमानों की मजिस्दों, उनकी हर तरह की मज़हबी चीज़ों को सरकार से मदद मिलती है, हमारे मन्दिरों, गुरुद्वारों को नहीं । जहाँ तक तहज़ीब का मामला है, हर वह बात, जिस पर हिन्दू या सिक्ख-असर पड़ा है, चुन-चुनकर अलाहदा की जा रही हैं । गुरुमुखी और हिन्दी का तो सरकारी कामों से पूरा-पूरा बॉयकॉटकर गला ही घोट दिया गया है ।

नवाँ सिक्ख—सवाल यह है कि करना क्या ? एक तो यह हो सकता है कि हम पाकिस्तान को ही छोड़ दें ; सो सिक्ख तो पंजाब छोड़ नहीं सकते ।

कुछ सिक्ख—(एक साथ) कभी नहीं। कभी नहीं।

नवाँ सिक्ख—दूसरा यह है कि यहाँ कुछ कर दिखाना।

कुछ व्यक्ति—हाँ, यहीं कुछ कर दिखाना। यही... यही ठीक है।

पहला सिक्ख—हाँ, हम कमजोर थोड़े ही हैं।

दूसरा सिक्ख—अरे ! अभी कल तक तो सिक्खों ने पंजाब पर हुकूमत की थी।

कुछ सिक्ख—(एक साथ) बेशक ! बेशक !

पहला हिन्दू—सबसे पहले हमें हिन्दू और सिक्खों की एक मिली हुई जमात बनानी चाहिए।

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) बिल्कुल ठीक। बिल्कुल ठीक।

पहला हिन्दू—फिर वह जमात इन जुल्मों की जाँच करे।

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) ठीक।

पहला हिन्दू—और जाँच के बाद जो ज्यादतियाँ पायी जायँ उस पर सत्याग्रह किया जाय।

पहला सिक्ख—शिरोमणि-गुरुद्वारा-प्रबन्धक कमिटी तो कई सत्याग्रहों में कामयाबी हासिल कर चुकी है।

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) बेशक ! बेशक !

दूसरा सिक्ख—लेकिन अकेले सत्याग्रह से ही काम न चलेगा। जिन्हें तशद्दुद पर ही यक्रीन हो उनको भी इकट्ठा करना चाहिए, जिससे अगर एक तरफ़ सत्याग्रह हो तो दूसरी तरफ़ गरिल्ला जंग।

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) हाँ, हाँ, यह—यह बिल्कुल ठीक है।

नवाँ सिक्ख—जिस तरह भी हो हमें इस गवर्नमेन्ट को मफ़लूज़ कर देना है।

सातवाँ हिन्दू—हाँ, जी पेंतालीस फ़्रीसदी सिक्ख और हिन्दू मिलकर क्या नहीं कर सकते।

आठवाँ हिन्दू—(नवें हिन्दू से) और आप तो बहुत बड़े आदमी हैं। फ्रन्टियर, बंगाल, सिन्ध सब जगह आपका कारबार है। आपको यह कोशिश करनी चाहिए कि इन सूबों में भी इसी तरह का नज़ूम हो; और हमारा काम शुरू हो सब जगह एक साथ।

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) यह....यह भी बहुत....बहुत जरूरी है।

नवाँ हिन्दू—हाँ, हाँ, इस काम को फ्रन्टियर, बंगाल, और सिन्ध में मैं शुरू जरूर करा सकता हूँ।

दूसरा सिक्ख—शुरू होने के बाद तो फिर आपसे आप चलता रहेगा।

दसवाँ हिन्दू—एक अर्ज मैं करूँ ?

पहला सिक्ख—यहाँ सभी को बोलने का पूरा-पूरा हक है।

दसवाँ हिन्दू—सब से पहले तो मैं यह कह देता हूँ कि मैं हिन्दू और सिक्खों की मिली हुई जमात के हक में हूँ।

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) शुक्रिया ! शुक्रिया !

दसवाँ हिन्दू—ज्यादतियों की जाँच की जाय, इसके भी मैं खिलाफ नहीं।

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) दुहरा शुक्रिया ! दुहरा शुक्रिया !

दसवाँ हिन्दू—लेकिन किसी भी तरह की लड़ाई-भिड़ाई के पहले मैं यह जरूर चाहूँगा कि जाँच में अगर कोई ज्यादातियाँ सुबूत हों तो उन्हें हम एक दफा पीरबख्श की सरकार के सामने पेशकर उन्हीं से उन्हें दुस्त कराने की कोशिश करें।

नवाँ सिक्ख—आपको यह उम्मीद है कि मिनिस्टर कुछ करेंगे ?

दसवाँ हिन्दू—उम्मीद ही नहीं, मुझे तो यकीन है।

[सब लोग एक दूसरे की तरफ देखते हैं। कुछ बेर निस्तब्धता।]

नवाँ सिक्ख—(सब से) क्यों, भाइयो ! आप लोगों को कोई उम्मीद है ?

बसवें हिन्दू को छोड़कर सब—(एक साथ) किसी को नहीं। किसी को नहीं !

बसवाँ हिन्दू—देखिए, मैं आप लोगों से कुछ अलग नहीं हूँ। जो आप सब करेंगे, मैं उसमें पूरा-पूरा साथ दूंगा, लेकिन हर्ज क्या है कि एक दफ़ा सरकार से बातकर तब हम अपनी लड़ाई शुरू करें। सत्याग्रह का तो यह तरीका ही है।

[सब लोग फिर एक दूसरे की ओर देखते हैं। फिर कुछ देर सन्नाटा।]

बसवाँ हिन्दू—(कुछ देर तक बारी-बारी से सब की तरफ़ देखने के बाद) अच्छा, देखिए, मैं एक तजवीज़ पेश करता हूँ। हिन्दू, सिक्ख जमात की जाँच के बाद हम मशहूर नेशनल लीडर अमरनाथ साहब को बुलवावें, उनके सामने कुल मामला रख दें और जैसी वह राय दें, वैसी कार्रवाई करें।

बहुत से व्यक्ति—(एक साथ) हाँ, हाँ, यह...यह ठीक है।

बसवाँ हिन्दू—(प्रसन्नता से) मैं अज़हद शुक्रगुज़ार हूँ।

[कुछ देर निस्तब्धता।]

पहला हिन्दू—पंजाब की करीब-करीब सभी खास-खास जगह के साहबान आज के इस जलसे में तशरीफ़ लाये हैं। हमने देख लिया कि हम सब एक ही नाव पर सवार हैं। नाव डूब रही है, पर इसे बचाने के लिए हम मुनासिब नतीजों पर पहुँचे हैं। अमरनाथ साहब को बुलवाने की तजवीज़ भी बहुत ही मुनासिब बात हुई है। हमारी कामयाबी और हमारे काम हमारी जमात पर मुनस्सर हैं, लेकिन हमारा नज़्म जब तक पक्का नहीं हो जाता, तब तक आज की बातों का पोशीदा रहना निहायत ज़रूरी है, नहीं तो हमारा काम एक क़दम भी आगे न बढ़ सकेगा।

कुछ व्यक्ति—(एक साथ) बेशक ! बेशक ! ... वजा... वजा फ़रमा रहे हैं आप।

लघु यवनिका

दूसरा दृश्य

स्थान—लखनऊ के नज्दीक एक गाँव का बाहरी रास्ता

समय—प्रातःकाल

[दाहनी ओर दूर पर गोमती का प्रवाह दिखायी देता है और बाईं तरफ़ दूर पर गाँव के भोपड़े आदि; बीच में आम का देहाती बगीचा है। बाईं तरफ़ से कुछ हिन्दू-मुसलमान बालक-बालिकाओं का प्रवेश। सब बच्चे वेष-भूषा से संयुक्तप्रान्त के देहाती जान पड़ते हैं।]

एक हिन्दू बालक—(पीठ फेरकर गाँव की ओर देखते हुए) अब तो बहुत दूर आ गये न ?

एक मुसलमान बालक—(आम के दरख्तों की तरफ़ देखकर) पेड़ों की आड़ भी रहेगी।

एक हिन्दू बालिका—(गाँव की ओर देखते हुए) हाँ, गाँव से कोई देखेगा तब तो हम दिखेंगे नहीं।

दूसरा हिन्दू बालक—मेरे बप्पा तो यहाँ तक आ ही नहीं सकते।

तीसरा हिन्दू बालक—बूढ़े हो गये हैं न। कैसे चलते हैं। (कमर झुकाकर लाठी टेकने का उपक्रम करते हुए खाँसता-खाँसता घूमता है।)

[सब बच्चे हँस पड़ते हैं। कोई-कोई ताली भी बजाते हैं।]

एक मुसलमान बालिका—और तेरी अम्मा भी इसी तरह चलती है। (वह तीसरे हिन्दू बालक की नक़ल करती है।)

[बच्चे और जोर-जोरसे हँसते हैं। इस बार कई तालियाँ बजाते हैं।]

दूसरा मुसलमान बालक—हमें आपस में खेलने से ये बूढ़े रोकते क्यों हैं ?

तीसरा मुसलमान बालक—क्योंकि हम मुसलमान हैं और (हिन्दू बालकों की तरफ़ इशाराकर) यह हिन्दू।

दूसरी मुसलमान बालिका—पहले तो नहीं रोकते थे।

तीसरा मुसलमान बालक—(गम्भीरता से विचारते हुए) हाँ, पहले तो नहीं रोकते थे ।

दूसरी हिन्दू बालिका—पहले हम हिन्दू-मुसलमान नहीं रहे होंगे ।

तीसरा मुसलमान बालक—और अब हिन्दू-मुसलमान हो गये ?

वाह ! वाह ! अरे ! हिन्दू-मुसलमान पैदा होते ही होते हैं ।

दूसरी मुसलमान बालिका—और अम्मा कहती थीं, मरने तक रहते हैं ।

पहला हिन्दू बालक—मरना क्या होता है ?

दूसरी मुसलमान बालिका—मरना ? (जल्बी से ज़मीन पर सीधी लेटकर आँखें बन्द कर लेती है ।)

[सब बच्चे फिर हँस पड़ते हैं ।]

तीसरा हिन्दू बालक—लो भाई ! फ़ातमा बीबी मर गयीं, उठाओ इन्हें, और बोलो—‘राम नाम सत्य है ।’

दूसरी मुसलमान बालिका—(जल्बी से उठकर) बस, यही तो हिन्दूपन है, हर बात में राम नाम !

तीसरा हिन्दू बालक—तुम लोग हर बात में ‘अल्ला-अल्ला’ नहीं कहते ?

चौथा हिन्दू बालक—अरे छोड़ो ये सब बातें । हमें न राम दिखता है न अल्ला । इन दोनों में फ़र्क़ होगा । हमें दिखते हैं—रामप्रसाद अल्लाबरक़श, रामदेई, फ़ातिमा । इन सब में कोई फ़र्क़ नहीं दिखता । (कुछ रुककर) अब खेल कौन-सा खेलना है, यह कहो ।

चौथा मुसलमान बालक—खेल ? (विचारता है)

चौथा हिन्दू बालक—(विचारते हुए) देखो, कचहरी का खेल खेलो, कचहरी का ।

कुछ बच्चे—(एक साथ) यह ठीक है । . . . यह ठीक है ।

पाँचवाँ हिन्दू बालक—देखो, सबसे बड़ा हूँ मैं, इसलिए मजिस्टर मैं बनता हूँ ।

तीसरा हिन्दू बालक—(कूबते हुए) और ऊँचा पूरा सबसे मैं जादा हूँ, इसलिए पुलिस वाला मैं बनूँगा ।

चौथा हिन्दू बालक—मैं तो गवाह बनूँगा, गवाह ।

पहला मुसलमान बालक—मुलजिम कौन बनेगा, यह तो बताओ ।

[सब चुप रहते हैं । कुछ देर सन्नाटा ।]

पहला मुसलमान बालक—हूँ ! मुलजिम बनने को कोई तैयार नहीं ।
(कुछ रुककर) अच्छी बात है, मुलजिम मैं सही । खेल तो हो ।

तीसरा मुसलमान बालक—आजकल मुसलमान ही मुल्जिम होते भी हैं ।

चौथा हिन्दू बालक—क्यों, हिन्दू मुल्जिम नहीं होते ?

तीसरा मुसलमान बालक—मैं जब-जब अब्बा के साथ कचहरी जाता हूँ, मुझे तो मुल्जिम मुसलमान ही दिखते हैं ।

चौथा हिन्दू बालक—तू तो हमेशा हिन्दू-मुसलमान की ही बात करता है । (कुछ रुककर) अच्छा, छोड़ो यह हिन्दू-मुसलमान की बात । खेल शुरू करो ।

[पाँचवाँ हिन्दू बालक एक दरख्त की ऊँची जड़ों पर अकड़कर बैठता है । तीसरा हिन्दू बालक पहले मुसलमान बालक का हाथ पकड़कर पाँचवें के बाईं ओर खड़ा होता है चौथा हिन्दू बालक पाँचवें की दाहनी तरफ़ । बाक़ी के बालक-बालिका कुछ दाहनी और कुछ बाईं ओर इनसे कुछ दूर हटकर खड़े हो जाते हैं ।]

पाँचवाँ हिन्दू बालक—(जमीन को दाहने हाथ से ठोकते हुए) माल मसरूका हमारा मेज पर आना चाहिए ।

तीसरा हिन्दू बालक—हज़ूर, चोरी का माल मेज पर नहीं आ सकता ।

पाँचवाँ हिन्दू बालक—टुम हुकम टालटा ! क्यों नेई आ सकटा ।

तीसरा हिन्दू बालक—हज़ूर वह गाय है ।

पाँचवाँ हिन्दू बालक—गा, गा, क्या करटा ? माल मसरूका हमारा मेज पर आना चाहिए ।

तीसरा हिन्दू बालक—हजूर, गाय मेज पर कैसे आ सकती है ?

पाँचवाँ हिन्दू बालक—नेई कैसा आ सकटा ? माल मसरूका हमारा मेज पर आना चाइए।

तीसरा हिन्दू बालक—तो आप बाहर चलकर खुद ही उस माल को देख लीजिए और देखिए कि वह मेज पर आ सकता है या नहीं।

पाँचवाँ हिन्दू बालक—आच्चा, आच्चा, चलो, चलो।

[तीसरा हिन्दू बालक आगे और पाँचवाँ उसके पीछे थोड़ी दूर आगे बढ़ते हैं। एक बालिका हाथ और घुटने टेककर ज़मीन पर बैठ जाती है।]

पाँचवाँ हिन्दू बालक—(बालिका को देखकर) ओ ! टुम ! ... गाय-गाय क्या करटा ठा ; यूँ क्यू नेई कहा कि बैल का मैम साब चोरी गया है। (फिर अपने स्थान पर बैठते हुए) और बैल का मैम साब का चोरी (पहले मुसलमान की तरफ़ इशाराकर) इस मुसलमान ने किया ?

तीसरा हिन्दू बालक—जी हजूर, और यह चोरी की इस गाय की कुर्बानी के लिए।

पाँचवाँ हिन्दू बालक—समजा . . . समजा, मुसलमान और बैल का मैम साब का क्या कर सकटा ? कोई सतूब ?

तीसरा हिन्दू बालक—(चौथे हिन्दू बालक की ओर इशाराकर) यह गवाह मजूद है, हजूर।

पाँचवाँ हिन्दू बालक—(चौथे से) टुमारा सामने इस मुसलमान ने बैल का मैम साब का चोरी किया ?

चौथा हिन्दू बालक—जी नहीं, भूठी बात है। इसने इस गाय को खरीदा था ; और मारने के लिए नहीं, दूध के लिए।

तीसरा हिन्दू बालक—हजूर यह गवाह भूठ बोलता है।

पाँचवाँ हिन्दू बालक—ओ ! हम भूल गया, हमने इससे ये नेई केलाया कि ये ईमान से सच-सच बोलेगा। (चौथे से) केओ, ईमान से सच-सच बोलेगा।

चौथा हिन्दू बालक—ईमान से सच-सच बोलेंगे ।

पाँचवाँ हिन्दू बालक—अब बटाओ, इस मुसलमान ने बैल का मैम साब का चोरी किया ठा या नेई और चोरी मारने का लिए किया ठा या डूढ का लिए ?

चौथा हिन्दू बालक—हजूर इसने गाय की चोरी नहीं की, उसे इसने खरीदा था और दूध के लिए, मारने के लिए नहीं ।

पाँचवाँ हिन्दू बालक—पर ये हो नेई सकटा । इसने जरूर बैल का मैम साब का चोरी किया होगा और मारने का लिए ।

तीसरा हिन्दू बालक—हाँ, हजूर, जरूर ।

पाँचवाँ हिन्दू बालक—अच्चा, मारने का लिए चुराने पर बैल का मैम साब का चोर को फाँसी का सजा दिया जाता है और इस हिन्दू ने मुसलमान का पच्च किया इसलिए इसको बी फाँसी का सजा ।

[नेपथ्य से कुछ लोगों की बातचीत की आवाज आती है । आवाज सुनकर पाँचवाँ हिन्दू बालक चकपकाकर खड़ा हो जाता है । और सब बालक भी चौकसे से होकर आवाज सुनने लगते हैं ।]

पहली मुसलमान बालिका—(दूसरे हिन्दू बालक से)अरे ! अब्बा अब्बा आ रहे हैं !

दूसरा हिन्दू बालक—हाँ, हाँ, आज तो तुम लोग इस गाँव को छोड़कर पंजाब जा रहे हो न ?

पहली मुसलमान बालिका—(आँखों में आँसू भरकर गिड़गिड़ाते हुए) मैं मैं नहीं जाऊँगी, भइया, तुम सब को छोड़कर मैं कभी नहीं जाऊँगी । तभी तभी तो यहाँ भाग कर आयी हूँ ।

[आवाज निकट आती हुई जान पड़ती है ।]

दूसरा मुसलमान बालक—मेरे मेरे अब्बा की भी आवाज है । अब मेरे अब्बा मारेंगे मुझे तुम लोगों के साथ खेलने पर ।

चौथा हिन्दू बालक—चलो, चलो, भाग चलो, दूर भाग चलो, ...
इतनी दूर जहाँ पर ये खुराट पहुँच ही न सकें ।

पहली मुसलमान बालिका—(दूसरे हिन्दू बालक के कन्धे को पकड़ते हुए) और देखो, ... अगर अगर मुझे अब्बा जबर्दस्ती ले जाने लगेँ तो तुम मुझे पकड़ पकड़ लेना, भइया, सुना, . . . जोर जोर से पकड़ लेना !

[सब बालक दाहनी ओर भाग जाते हैं । कुछ ही देर में बाईं तरफ़ से कई मुसलमानों का प्रवेश । वेष-भूषा से सब संयुक्तप्रान्त के देहाती जान पड़ते हैं ।]

एक—मैं कहता हूँ अपने वतन, अपने बाप-दादों की मिलकियत छोड़कर इस तरह भागना बुजदिली है ।

दूसरा—और यहाँ रहकर रोजमर्रा के नये-नये जुल्म बर्दाश्त करते जाना बहादुरी है ?

तीसरा—अपने सब साथियों को छोड़कर जाने को क्या कहोगे ?

दूसरा—मैं तो कहता हूँ, तुम सब भी चले चलो, पर तुम लोग मानते कहाँ हो ?

चौथा भाई—वतन और पुश्तैनी जायदाद नहीं छूटती ।

पाँचवाँ—और यहाँ के आपसी ताल्लुकात भी कैसे छोड़ दिये जायँ ?

दूसरा—अफगानिस्तान, अरब वगैरह से भी तो हमारे बुजुर्ग वतन, जायदाद और आपसी ताल्लुकात ही छोड़कर आये थे ।

पहला—कितनों के बुजुर्ग ?

दूसरा—मेरे तो आये थे, दूसरों के मैं नहीं जानता ।

पहला—जी हाँ, आपके खानदान का पुश्त-पर-पुश्त का लिखा हुआ शिजरा तो मौजूद ही होगा ।

दूसरा—न सही, लेकिन मैं जानता हूँ कि मुझ में वही का खून है ।

तीसरा—तभी शायद आप यहाँ से जा भी रहे हैं। पर मैं कहता हूँ संगी-साथियों को छोड़कर बिहिश्त में भी आराम नहीं मिलता। जाते तो हो, शायद वतन को भूल सको, शायद जायदाद भी नयी बना लो, लेकिन हमें न भूल सकोगे।

पाँचवाँ—नहीं, भाई, यह बड़े संगदिल हैं, सब को भूल जायेंगे।

दूसरा—आप साथियों को न भूल सकूंगा, यह मानता हूँ, लेकिन यहाँ भी जो कुछ हो रहा है, वह बर्दाश्त के बाहर है। जमींदार हिन्दू, साहूकार हिन्दू, सरकार हिन्दुओं की। पटवारी हिन्दू, रेवन्यू निस्पेक्टर हिन्दू, पुलिस हिन्दू, मजिस्ट्रेट हिन्दू। जमींदार और साहूकार मुसलमान किसानों, मजदूरों पर कितना ही जुल्म करें, सब माफ। हिन्दू किसान की फसल सोलह आना आये तो भी पटवारी चार आना लिखने को तैयार और मुसलमान किसान की चार आना भी आये तो सोलह आना। हिन्दू साहूकार मुसलमान के नमाज पढ़ने का मुसल्ला भी कुड़क करा ले तो भी कोई सुनायी नहीं। दंगा-फसाद में मुसलमान पिट भी जाय और रपट लिखाने जाय तो उल्टा वही फँसे। कई हिन्दू, जिन्होंने मुसलमानों का खून किया, उन्हें भी हिन्दू मजिस्ट्रेटों ने छोड़ दिया और हिन्दू के सात क्या इक्कीस खून भी माफ हैं।

तीसरा—मुसलमानों पर बहुत जुल्म हो रहा है, इसमें तो शक नहीं, लेकिन . . .

दूसरा—(बीच ही में) और . . . और हम अपने मजहबी फर्ज तक पूरे-पूरे अदा नहीं कर सकते। गाय की कुर्बानी ही बन्द कर दी गयी है। मुसलमान न जाने किन-किन तरीकों से हिन्दू बनाये जा रहे हैं। और भी न जाने क्या-क्या हो रहा है।

पहला—एक बात कहूँ, माफ करना।

दूसरा—किसी बात कहने के लिए माफी माँगने की जरूरत है ?

पहला—मुल्क के यह हिस्से किसने कराये ?

दूसरा—हमने ।

पहला—और हमने कराये, बिना यह सोचे कि जो मुसलमान हिन्दू-राज में रहेंगे, उनका क्या होगा ?

दूसरा—अच्छा ।

पहला—एक बात और भी देखो—बंगाल, पंजाब, सिन्ध, सरहद्दी सूबा सब की खबरें तो आती ही हैं, वहाँ की सरकार हिन्दू और गैरमुस्लिम दूसरी क़ौमों के साथ कैसा बर्ताव कर रही है ।

दूसरा—तो अदला-बदला हो ही रहा है न ?

पहला—यह तो होगा ही ।

दूसरा—तो, भाई, मैं कहता हूँ, जितनी भी ताकत से एक दूसरे को कुचला जा सकता हो, दोनों कुचलें । मैं वहाँ जाकर रहना चाहता हूँ, जहाँ हिन्दू कुचले जा रहे हैं । (चारों तरफ़ देखकर) यहाँ . . . यहाँ भी नसीब का पता नहीं । न जाने नसीब में यह कैसी लड़की लिखी थी, जब देखें तब उसी हिन्दू लौंडे मोहन के साथ खेलती है । (साथियों से) चलो, और जरा आगे चलकर देखें ।

[सब दाहनी तरफ़ जाते हैं ।]

लघु यवनिका

तोसरा दृश्य

स्थान—लाहौर का इस अंक के पहले दृश्य वाला हॉल

समय—सन्ध्या

[जो व्यक्ति उस दृश्य में थे, उनमें से अधिकांश; और उनके सिवा कुछ बंगाली, सिन्धी, सरहद्दी हिन्दू तथा अमरनाथ और महफ़ूज़ज़ाँ हैं ।

बातें चल रही हैं, अमरनाथ के हाथ में कुछ फ़ुल्सकेप कागज़ हैं जो डोरे से नत्थी किये हुए हैं। इन कागज़ों में उर्दू अक्षरों में कुछ लिखा हुआ है।]

अमरनाथ—मेरा . . . मेरा आना नहीं, आना खुसूसियत रखता है (महफ़ूज़ख़ाँ की ओर इशाराकर) इनका। मेरे साथ इनका पंजाब, फ़न्टियर, सिन्ध और बंगाल सब जगह घूमना, आपकी बतायी हुई बातों को निष्पक्षता . . . पूरी-पूरी निष्पक्षता से जाँचना . . .

महफ़ूज़ख़ाँ—(बीच ही में) जैसे आप में पक्षपात हो !

अमरनाथ—पर, भाई, फिर भी मैं हिन्दू हूँ। तुम चाहे अपने को मुसलमान न मानो, पर हो तो मुसलमान। मुसलमान होकर तुमने पाकिस्तान में ग़ैर-मुस्लिम क़ौमों पर सुनी जानेवाली ज्यादतियों की जाँच की है। तुमने इतिहास बनाया है, महफ़ूज़, इतिहास।

एक सिक्ख—हम तो आप दोनों के ही अज़हद शुक्रगुज़ार हैं।

सब—(एक साथ) बेशक ! बेशक !

अमरनाथ—(मुस्कराकर) परन्तु शुक्रिया अदा कर देने भर से काम न चलेगा। शिष्ट मण्डल का नेतृत्व तो मैं तभी करूँगा, जब आप सत्याग्रह की धमकी की बात (हाथ के कागज़ों को दिखाते हुए) इसमें से निकाल देंगे।

[कोई कुछ नहीं बोलता। सब लोग एक दूसरे की ओर देखने लगते हैं। कुछ बेर निस्तब्धता।]

एक सिक्ख—आप लोगों ने हम पर जो मेहरबानी की है . . .

महफ़ूज़ख़ाँ—(बीच ही में) मेहरबानी की बात तो छोड़ दीजिए। हम लोगों ने अपना कर्त्तव्य पालन करने की कोशिश की है।

वही सिक्ख—यह सोचना आप लोगों की और भी बड़ी मेहरबानी है। खैर, हम तो जो आप लोग हुक्म देंगे वही करेंगे, लेकिन हमारी गुज़ारिश यह है कि अगर सत्याग्रह की बात इस अर्ज़-दास्त में से निकाल दी जाती है तो फिर इसमें रहता ही क्या है ?

एक पंजाबी हिन्दू—हाँ, फिर रहता ही क्या है ?

एक बंगाली—कुच्छ नेई, कुच्छ नेई ।

एक सिन्धी—मिमोरिअल कमजोर....बहुत ही कमजोर हो जाता है ।

एक सरहद्दी—एकदम कमजोर ! एकदम ही कमजोर !

बहुत से व्यक्ति—(एक साथ) बिल्कुल ! बिल्कुल !

अमरनाथ—परन्तु, भाइयो ! आप लोग गलती कर रहे हैं । पहली बात तो यह है कि यह अर्जों है, चुनौती नहीं । दूसरे जो आप यह कहते हैं कि सत्याग्रह की बात निकाल देने पर, इसमें रहता ही क्या है, यह भी भूल है । इसमें वे सारी बातें तो रह ही जाती हैं न, जिनका पता आप लोगों ने इस जाँच में लगाया है ।

वही सिक्ख—(मुस्कराकर) उनमें से भी तो बहुत-सी आपने निकालवा दीं ।

वही बंगाली—भोतसा । भोतसा ।

अमरनाथ—क्योंकि जब हम लोग आपके साथ घूमें, तब हमें मालूम हुआ कि आपकी जाँच की कई बातें तो ऐसी थीं जिनके प्रमाण ही नहीं और कई बातें बहुत बढ़ा-बढ़ाकर कही गयी थीं । दृष्टान्त के लिए सरहद्दी सूबे में एक हिन्दू को किसी मुस्लिम औरत के साथ देखकर वहाँ के किसी तहसीलदार ने अमेरिका के हबशी के समान लिंग कराया है, यह कहा गया था । वहाँ जाने पर पता लगा कि इस बात का कोई सिर-पैर ही न था । सिन्ध प्रान्त के किसी तालुके में हिन्दुओं से जज़िया टैक्स वसूल किया जाता है, यह लिखा गया था । पता लगाने पर मालूम हुआ कि यह बात भी बिल्कुल बेबुनियाद थी । बंगाल में एक जगह कुछ हिन्दू मूर्तियों के तोड़ने की बात थी । वह भी ग़लत साबित हुई । और यहाँ पंजाब में कुछ हिन्दुओं और सिक्खों के खून करने पर भी मुसलमानों की पुलिस ने रिपोर्ट तक नहीं लिखी यह लिखा था, वह भी भूठ बात निकली । इसी प्रकार की कुछ दूसरी ग़लत बातों को भी निकाला गया है ।

वही सिक्ख—लेकिन आपने जो-जो निकालने को कहा, हमने सब निकाल दिया, या नहीं ?

महफूजखाँ—(मुस्कराकर) गलत बातों को भी हटाकर आपने हम लोगों पर मेहरबानी की, क्या आप यह कहना चाहते हैं ?

वही सिक्ख—(जल्दी से) नहीं, नहीं, मेरा यह मतलब नहीं था। मैं यह कहना चाहता था कि हम लोग तो हर तरह से आप लोगों के हुक्म की तामील करना चाहते हैं। लेकिन . . . लेकिन . . . (चुप हो जाता है।)

अमरनाथ—मैं नहीं चाहता कि आप लोग हम लोगों के हुक्म की तामील करें। मैं तो यह चाहता हूँ कि आप स्वयं देखें और सोचें कि इस समय क्या लिखना और कहना उचित है। किसी भी हालत में सत्याग्रह के लिए न कहा जाय और सत्याग्रह न किया जाय, मेरा हरगिज यह कहना नहीं है। अंग्रेज सरकार के विरुद्ध गान्धी जी की आज्ञा पर मैंने कई बार सत्याग्रह किया है। पाकिस्तान की या हिन्दुस्तान की, किसी की सरकार के भी खिलाफ अगर सत्याग्रह की मैं जरूरत देखूँगा तो जरूर करूँगा। हाँ, इस दौरान में जिस तरह के हिंसात्मक दंगे-फ़साद करने की बातें आपने उठायीं वे तो मैं किसी भी दशा में करने वाला नहीं।

वही सिक्ख—वह तो हमने यों ही कह दिया था।

वही पंजाबी हिन्दू—शायद गुस्से में।

अमरनाथ—ठीक है। आदमी बहुत-सी बुरी बातें गुस्से में तो करता ही है, लेकिन इससे वह माफ़ तो नहीं किया जा सकता। गयी लड़ाई में हिंसा अपना बुरे से बुरा, विकराल से विकराल और पतित से पतित रूप दिखा चुकी है। हिंसा का उपासक योरप तक इस हिंसा से घबड़ा उठा था। आज के बड़े से बड़े विचारक कहते हैं कि मानव-समाज में हिंसा की कोई भी जगह नहीं है। (कुछ रुककर) खैर, इस वक़्त छोड़िए इस बात को। (फिर कुछ रुककर) हाँ, तो मैं कह रहा था कि सत्याग्रह किसी भी हालत में नहीं किया जा सकता, यह मेरा कहना नहीं है, पर वह हमारा आखिरी

हथियार है और उसे उठाने के पहले, कम से कम हमारी ही हुकूमत के खिलाफ उठाने के पहले, क्योंकि अब तो विदेशी सरकार का सवाल नहीं है, हमें एक बार नहीं, सौ, हजार, लाख, करोड़ और अगणित बार सोचना होगा। अगर मुझे इस शिष्ट मंडल का नेतृत्वकर पाकिस्तान के मिनिस्ट्रों के पास जाना है, तो मैं इस समय तो अर्जी ही लेकर जा सकता हूँ, चुनौती नहीं, और अर्ज-दास्त में सत्याग्रह का जिक्र नहीं हो सकता; हाँ, आप लोग अगर सत्याग्रह की बात करना चाहते हैं, तो मुझे छोड़ दीजिए; आप जो उचित समझें, उसे कीजिए।

[फिर कोई कुछ नहीं बोलते सब एक दूसरे की ओर देखते हैं ।
कुछ देर निस्तब्धता ।]

एक सिन्धी—बोलो, भाइयो ! बोलो । (कुछ रुककर) मेरी तो यह राय है कि हम (अमरनाथ और महफूजख़ाँ की ओर इशाराकर) इन्हें नहीं छोड़ सकते । . .

बहुत से व्यक्ति—(एक साथ) हाँ, हाँ, कभी नहीं . . . कभी नहीं ।

पहला सिक्ख—अच्छा, निकाल दीजिए सत्याग्रह की बात ।

पंजाबी हिन्दू—हाँ, हाँ, निकाल दो ।

बंगाली—आच्चा ! आच्चा !

सरहद्दी—ठीक है ! ठीक है !

सब—(एक स्वर से) बिल्कुल ।

अमरनाथ—(सिक्ख से) अच्छी बात है; तो पहले डेपुटेशन मिस जहाँनारा के पास चलेगा, उसके बाद हम सोचेंगे मौलाना पीरबख्श साहब के पास चलने के लिए । आप मिस जहाँनारा से समय निश्चित कीजिए । (महफूजख़ाँ से) तुम इस अर्ज-दास्त को ठीक कर लो ।
(कागज़ महफूजख़ाँ को देता है ।)

[अमरनाथ खड़ा होता है । बाक़ी सब लोग भी उठते हैं ।]

लघु यवनिका

चौथा दृश्य

स्थान—लाहौर में जहाँनारा के बँगले का बरामदा

समय—प्रातःकाल

[बरामदे की बनावट वैसी ही है, जैसी दिल्ली के बँगले की थी, पर यह उससे बहुत बड़ा है। खम्भों और महराबों में भी अन्तर है। फर्नीचर उससे बहुत बढ़िया है। एक महराब से गंगाराम का पिंजरा लटक रहा है। जहाँनारा एक आरामकुर्सी पर बैठी हुई अस्त्रबार पढ़ रही है। निकट की एक टेबिल पर कुछ अस्त्रबार और रखे हुए हैं। गंगाराम बीच-बीच में कुछ बोलता है। पर जहाँनारा का ध्यान इस समय उसकी तरफ़ नहीं है।]

जहाँनारा—(कुछ देर बाद अस्त्रबार को ज़मीन पर जोर से पटकते हुए) उफ़ ! यहाँ तक यहाँ तक हो रहा है मुसलमानों के खिलाफ़ हिन्दोस्तान में।

तोता—चित्रकूट के घाट पै भई सन्तन की भीर।

जहाँनारा—(तोते की ओर देखकर, उसके पास जाते हुए, कुछ क्रोध से) हिन्दू सन्त ! शायद किसी ज़माने में उनमें सन्त पैदा हुए हों, लेकिन इस इस वक़्त तो सारे के सारे शैतानों से भी बदतर मालूम होते हैं।

तोता—तुलसिदास चन्दन घिसें तिलक देत रघुबीर।

जहाँनारा—अरे ! कहाँ हैं तुलसीदास, और कहाँ हैं रघुबीर ? चन्दन की लकड़ी की जगह घिसी जा रही है अब अब वहाँ मुसलमानों की हड्डियाँ और घिस रहा है उन्हें शान्तिप्रिय के मानिन्द आदमी। उसकी देवी दुर्गा है ! दुर्गा को तो जानवरों और आदमियों सब की कुर्बानियाँ चाहिए न ? मुसलमानों की कुर्बानियाँ दी जा रही हैं और उनकी हड्डियों का चन्दन शान्तिप्रिय घिस रहा है। उससे दुर्गा तिलक कर रही है।

तोता—आवर लाइफ़ इज ए रेग्यूलर फ्रीस्ट ।

जहाँनारा—हाँ, हाँ, उन दोनों की लाइफ़ रेग्यूलर फ्रीस्ट होगी । तभी तभी तो यह हो रहा है । जब इन्सान को किसी न किसी तरफ़ से, किसी न किसी तरह का बड़े से बड़ा आराम मिलता है, तभी वह दूसरी तरफ़ बड़ी से बड़ी तकलीफ़ दे सकता है । इस तरह के आराम के नशे के बिना कम से कम शान्तिप्रिय के मानिन्द आदमी का यह सब करना, जो वह हिन्दू फ़ैडरेशन में मुसलमानों के साथ कर रहा है, मुमकिन मुमकिन ही नहीं । (जो अख़बार ज़मीन पर पटक दिया था, उसको उठाते और देखते हुए) पूरा का पूरा पेंज भरा है, उन कार्रवाइयों से जो वहाँ की जा रही हैं, गंगाराम !

तोता—गंगाराम ।

जहाँनारा—हाँ, मैं तो तुझे गंगाराम ही कहूँगी, चाहे हिन्दू वहाँ कुछ भी क्यों न करें । (फिर अख़बार को देखते हुए) और और सुबूत दिये गये हैं उन सब जुल्मों के, जो वहाँ किये जा रहे हैं । हालाँ हालाँ कि इधर इन बातों के मुताल्लिक़ अख़बारों में रोज़मर्रा ही कुछ न कुछ आता है, लेकिन इतनी तफ़सील में, इस तरह के सुबूतों के साथ इसके पहले कभी नहीं आया था । (कुछ रुककर) और हम हम पाकिस्तान में क्या कर रहे हैं ? ज़्यादा से ज़्यादा इस बात का ख़याल रखते हैं कि यहाँ की अकल्लियतें को कोई तकलीफ़ न पहुँचे । जब कभी कोई शिकायत आती है, फ़ौरन उसकी तहक़ीकात करते हैं और अगर सुबूत हो जाता है कि किसी मुस्लिम ने हिन्दुओं, सिक्खों या किसी भी अकल्लियत के किसी भी आदमी के साथ कोई भी ज़्यादती की है तो उसे सख्त सज़ा देते हैं । (कुछ रुककर) और और इतने पर भी कितना कितना फ़ितूर मचा रक्खा है इन हिन्दुओं और सिक्खों ने यहाँ पर भी; अरे ! अमरनाथ को बुलाकर तमाम पाकिस्तान में घुमाया; एक बेवकूफ़ मुसलमान महफ़ूज़ख़ाँ भी अमरनाथ का साथ देने को मिल ही

गया। हमने . . . हमने धूमने दिया इन्हें उन सिक्खों, उन बंगाल, सिन्ध, सरहद्दी सूबे के हिन्दुओं के साथ, जिनके खिलाफ़ एक नहीं, बेशुमार शिकायतें हैं अकल्लियतों को भड़काने की।

तोता—टर् ! टर् ! टर् !

जहाँनारा—हाँ, यहाँ . . . यहाँ भी आज अमरनाथ और उसके डेपुटेशन की टर् टर् सुनने को मिलेगी। (कुछ रुककर) और . . . और इन सारी बर्दाश्तों का सबब जानता है, गंगाराम ?

तोता—गंगाराम !

जहाँनारा—वह सबब शायद तू है गंगाराम। (कुछ रुककर) तू मुझे उस ज़िन्दगी

तोता—आवर लाइफ़ इज़ ए रेग्यूलर फ़्रीस्ट।

जहाँनारा—हाँ, उस रेग्यूलर फ़्रीस्ट वाली ज़िन्दगी की हमेशा याद दिलाया करता है, जो मैंने शान्तिप्रिय के साथ गुज़ारी थी। वह वह चाहे उसे भूल गया हो।

तोता—चित्रकूट के घाट पै भई सन्तन की भीर।

जहाँनारा—वह चाहे सन्त न रहकर शैतान हो गया हो, शान्तिप्रिय की जगह अशान्तिप्रिय हो गया हो, लेकिन मैं . . . मैं वैसी नहीं हो सकती। (कुछ रुककर) गंगाराम, शान्तिप्रिय के ऐसे . . . हाँ, ऐसे हो जाने पर भी देखती हूँ कि उस पर मेरी वैसी ही मुहब्बत है, जैसी . . . जैसी पहले थी। . . . कुछ भी, . . . हाँ, कुछ भी हो, फ़र्क़ नहीं पड़ा मेरे दिल में। (फिर कुछ रुककर) यह . . . यह बहन की ही मुहब्बत तो है न ? . . . वैसी . . . वैसी मुहब्बत तो नहीं, जिसका ज़िक्र उस दिन पीरबख़्श ने किया था ? (फिर कुछ रुककर) पीरबख़्श की उस दिन की बात के बाद बार-बार . . . हाँ, बार-बार मेरे भी दिल में यह शक़-सा क्यों पैदा होता है ? . . . शान्तिप्रिय के साथ वैसी मुहब्बत होने के सबब से ही मैं पीरबख़्श को उस तरह नहीं चाहती, सचमुच यही

बात तो नहीं है ? फ़ायड ने तो लिखा है कि हर तरह की मुहब्बत में सैक्स का जुझ रहता ही है । (कुछ रुककर अख़बार को जोर से ज़मीन पर पटक कर, इधर-उधर घूमते हुए) नहीं, नहीं, यह कभी कभी नहीं हो सकता । फ़ायड का कहना ग़लत बिल्कुल ग़लत एकदम ग़लत है । मैंने उसे हमेशा छोटे भाई बल्कि कभी-कभी तो बच्चे हाँ, बच्चे के मानिन्द चाहा है । (कुछ रुककर, फिर तोते के पिंजरे के सामने खड़े होकर) लेकिन सैक्स सैक्स भी तो इन्सान में क्रुदरती चीज़ है । उस तरफ़ मेरा रुख़ ही क्यों नहीं होता ? पीरबख़्श के मुझे इतना चाहने पर भी, उसे हमेशा यह कहने के सिवा—‘ठहरिए,’ ‘थोड़ा और ठहरिए,’ मैं उसे और कुछ क्यों नहीं कह सकती ? (फिर कुछ रुककर) और और पीरबख़्श न सही किसी की तरफ़ भी मेरा उस तरह से थोड़ा-सा भी खिंचाव क्यों नहीं होता ? शान्तिप्रिय हाँ, मेरे अनजाने शान्तिप्रिय ही इसका सबब तो नहीं है ? (फिर कुछ रुककर इधर-उधर घूमते हुए) नहीं—नहीं, कभी नहीं, यह कभी नहीं हो सकता । इसका इसका सबब है मुल्क और क्रौम की खिदमत के लिए शुरू से ही मेरा शादी न करने का अहद । (कुछ रुककर) और पीरबख़्श पीरबख़्श तो यह बात इसलिए कहते हैं कि उनकी मुहब्बत को मैं उसी तरह की मुहब्बत के साथ लौटा नहीं रही हूँ ।

तोता—गंगाराम ।

जहाँनारा—(फिर तोते के पिंजरे के सामने खड़े होकर) हाँ, दिल के उस तरह के ख्यालातों को कुचलकर मैं हमेशा के लिए गंगा में बहा चुकी हूँ । (फिर कुछ रुककर) लेकिन लेकिन हमेशा के लिए उन्हें क्या कुचला जा सकता है, बहाया जा जा जा

[चपरासी का तश्तरी में कांड लिये हुए प्रवेश । वह हरे रंग की बरवी पहने हुए है । सिर पर चाँद का बैज है । कमर

मैं उसके कटार लगी है। सलामकर वह तश्तरी जहाँनारा के सामने करता है।]

जहाँनारा—(कांड उठाकर उसे देखते हुए) ओ ! डेपुटेशन आ गया। (कुछ रुककर) अच्छा, उन्हें यहीं ले आओ।

[चपरासी का सलामकर प्रस्थान। जहाँनारा ज़मीन पर पड़े हुए अखबार को उठाकर टेबिल पर रखती है और इधर-उधर घूमती है। चपरासी के साथ अमरनाथ, महफूज़ख़ाँ, एक सिक्ख, एक पंजाबी, एक बंगाली, एक सिन्धी और एक सरहद्दी हिन्दू आते हैं। चपरासी आकर सलाम करता है और इन्हें पहुँचाकर, सलामकर फिर जाता है। जहाँनारा कुछ आगे बढ़कर इनका स्वागत करती है। अमरनाथ जहाँनारा से हाथ मिलाता है।]

अमरनाथ—(मुस्कराते हुए) कितनी मुद्त के बाद आपके दर्शन हुए।

जहाँनारा—(मुस्कराते हुए) हाँ, हाँ, एक ज़माना एक ज़माना गुज़र गया। कहिए मिज़ाज तो अच्छा है ?

अमरनाथ—कृपा है, आपकी, आप तो अच्छी हैं ?

जहाँनारा—ख़ुदा का फ़ज़ल है।

अमरनाथ—मैं अपने साथियों का परिचय तो करा दूँ। (पंजाबी सिक्ख की ओर इशारा करते हुए) सर्दार गुरुबख़्शसिंह। (जहाँनारा और सिक्ख हाथ मिलाते हैं। पंजाबी हिन्दू की तरफ़ संकेतकर) मिस्टर राजनारायण वर्मा। (पंजाबी हिन्दू और जहाँनारा हाथ मिलाते हैं। बंगाली की ओर मुखातिब हो) बाबू शशिकुमार मुकुरजी। (जहाँनारा और बंगाली हाथ मिलाते हैं। सिन्धी की ओर घूमकर) सेठ जयरामदास गिडवानी। (सिन्धी और जहाँनारा हाथ मिलाते हैं। सरहद्दी की तरफ़ बढ़कर) लाला दुनीचन्द। (जहाँनारा और सरहद्दी हाथ मिलाते हैं। महफूज़ख़ाँ की तरफ़ संकेतकर) और ये हैं मेरे मित्र महफूज़ख़ाँ। [महफूज़ख़ाँ से हाथ मिलाते हुए जहाँनारा बड़े ध्यान से उसे देखती है।]

जहाँनारा—तशरीफ़ रखें सब हज़रात ।

[सब लोग कुर्सियों पर बैठते हैं । सब के बैठने के पश्चात् जहाँनारा भी एक कुर्सी पर बैठती है । महफ़ूज़खाँ डोरे से नत्थी फुलिसकेप काग़ज़ जेब से निकालकर अमरनाथ को देता है ।]

जहाँनारा—बड़ी मेहरबानी की आप सब हज़रात ने ।

अमरनाथ—(मुस्कराते हुए) पर हम तो अपने काम से आये हैं ।

जहाँनारा—(मुस्कराते हुए) यह तो जानती हूँ, पर इतने पर भी मेहरबानी हुई यह तो कहूँगी ही । कहिए क्या हुक्म है ?

अमरनाथ—हुक्म नहीं प्रार्थना है और वह ब्योरेवार इस अर्ज़-दाश्त में लिखी गयी है । (काग़ज़ जहाँनारा को देता है ।)

[जहाँनारा अर्ज़ी को लेकर उसे सरसरी तौर पर उलट-पुलटकर देखने लगती है । अमरनाथ साधारण रूप से और शिष्ट-मण्डल के शेष व्यक्ति उत्कंठा से जहाँनारा की तरफ़ देखते हैं । कुछ ही देर में जहाँनारा का सरसरी तौर से देखना ध्यानपूर्वक देखने में परिणत हो जाता है और इसके बाद कुछ ही देर में वह अर्ज़ी को शीघ्रतापूर्वक पढ़ने लगती है । जहाँनारा के परिवर्तित भाव उसकी भिन्न-भिन्न मुद्राओं में जान पड़ते हैं और वह अर्ज़ी शीघ्रतापूर्वक पढ़ रही है यह उसकी आँखों की पुतलियों के एक पंक्ति के एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक पंक्ति से दूसरी पंक्ति पर शीघ्रता से दौड़ने के कारण । पढ़ते-पढ़ते उसके मुख पर क्रोध के भाव झलकने लगते हैं । कुछ देर तक निस्तब्धता रहती है ।]

तोता—चित्रकूट के घाट पै भई सन्तन की भीर ।

तुलसिदास चन्दन घिसें तिलक देत रघुवीर ।

[सब का ध्यान तोते की तरफ़ खिंचता है, जो उनकी दृष्टियों से जान पड़ता है ।]

अमरनाथ—अच्छा, यह तोता तो खूब बोलता है, और हिन्दी दोहा ।

जहाँनारा—(कागजों को देखते-देखते ही) जी हाँ, लंका में विभीषण है ।

अमरनाथ—लंका में विभीषण ! क्या कह रही हैं आप ! आपका बँगला लंका !

जहाँनारा—(कागजों को देखते-देखते ही) जी हाँ, लाहौर के एक हिन्दू अखबार ने इसको यही नाम दिया था ।

अमरनाथ—हिमाकृत थी उस पत्र की, और तो क्या कहूँ ?

जहाँनारा—(कुछ देर चुप रहकर अर्जुनी को उलट-पलटकर देखते-देखते एकाएक सिर उठाकर, अमरनाथ की ओर देख) हिमाकृत थी उस अखबार की, क्या फर्माया आपने ?

अमरनाथ—जी हाँ, मैंने यही अर्जुनी किया कि हिमाकृत थी उस पत्र की ।

जहाँनारा—और इस मेमोरिअल में तो आपने मेरे घर को ही लंका नहीं बनाया है, लेकिन तमाम पाकिस्तान की हुकूमत को रावण का राज । अभी मैंने इसे सरसरी तौर पर ही देखा है, पर इतने से ही पता चलता है कि शायद दुनिया में कोई ऐसी ज्यादाती नहीं हो सकती जो पाकिस्तान की गवर्नमेन्ट अकल्लियातों पर न कर रही हो ।

अमरनाथ—इस अर्जुनी का यदि आपने यह मतलब निकाला है, तो मैं इतना ही कह सकता हूँ कि मुझे इसका बहुत दुःख है ।

जहाँनारा—आपको दुख तो होना ही चाहिए, क्योंकि आज आप उन हज्जरात के नुमाइन्दे बनकर तशरीफ़ लाये हैं, जिनके खिलाफ़ इस बात की एक, दो, चार नहीं, बेशुमार रिपोर्टें हैं कि वह हिन्दुओं सिक्खों वगैरह को भूठी-भूठी बातें कह, उन्हें लड़वाकर मुल्क के अमन-चैन में खलल डालना चाहते हैं । चूँकि पाकिस्तान की सरकार बाहरी नहीं पर मुल्क की गवर्नमेन्ट है और इस्तिबदादी न होकर हर दिलअजीज़, इसीलिए इन हज्जरात के खिलाफ़ अब तक कोई कार्रवाई नहीं की गयी । यह हज्जरात अपनी

रायें, चाहे उनमें कितना ही जहर क्यों न भरा हो, जाहिर करने के लिए आजाद रहें, वरना वरना (चुप हो जाती है ।)

अमरनाथ—(कुछ ठहरकर, बिना किसी भी तरह की उत्तेजना के, अपने स्वाभाविक स्वर में) पहले की बातें मैं नहीं जानता, परन्तु जब से मैं पाकिस्तान का दौरा कर रहा हूँ, तब से मेरे किसी भी साथी ने, कहीं भी कोई ऐसी बात न कही, न की, जिसे क़ाबिले एतराज समझा जावे ।

जहाँनारा—माफ़ कीजिए अगर मैं यह कहूँ कि आपके पाकिस्तान के साथियों की बात तो अलग ही है, लेकिन आपके हिन्दोस्तान के साथी महफूज़ख़ाँ साहब और आपकी खुद की तक्ररीरों की भी जो रिपोर्टें आयी हैं, वह भी एतराज से खाली नहीं है ।

महफूज़ख़ाँ—(कुछ उत्तेजना से) तब तो गवर्नमेन्ट को हम लोगों के विरुद्ध कार्रवाई करनी चाहिए थी ।

जहाँनारा—(ताने से) यह उसने इसलिए नहीं की कि वह आप लोगों को मेहमान समझती है ।

महफूज़ख़ाँ—(ओठ को दाँतों से चाबते हुए) ऐसा !

अमरनाथ—क्या मुझे महफूज़ख़ाँ के और मेरे भाषणों की रिपोर्टें दिखाकर यह बताया जा सकता है कि उनमें कौन-सी बातें अनुचित समझी जाती हैं ?

जहाँनारा—जी नहीं, वह तमाम पोशीदा कागज़ात हैं । (अर्जों को लपेटकर टेबिल पर रखती है ।)

तोता—गंगाराम ।

[कुछ देर निस्तब्धता ।]

अमरनाथ—आनरेबिल मिस जहाँनारा, शुरू में ही हम लोगों की बातों ने जो ढंग पकड़ा, उसकी मैं आशा नहीं करता था । यहाँ के हिन्दू और सिक्ख भाइयों ने जब मुझे यहाँ के हालात लिखकर यहाँ बुलाया और मैंने यहाँ आना स्वीकार किया तब मेरी नज़र के सामने केवल एक चीज़

थी—सब बातों को स्वयं देखकर यदि कोई वाजिब शिकायतें हों तो उन्हें आपकी गवर्नमेन्ट के सामने रख, दुरुस्त कराने का प्रयत्न करना। मैं देश के हिस्से करने के खिलाफ़ अवश्य था, आज भी मेरी राय है कि यह बटवारा उचित कार्रवाई नहीं हुई, किन्तु दोनों संघराज्यों की सरकारें इस मुल्क की सरकारें हैं। हर हिन्दी का कर्तव्य है कि आज़ाद हिन्द की चाहे एक हुकूमत हो, या दो, उसे सफल बनाने में हर तरह की सहायता करे। इसी चीज़ को मद्देनज़र रखते हुए मैं यहाँ आया। मेरा साथ दिया मेरे मित्र महफूज़खाँ ने। पंजाब, सरहद्दी सूबा, सिन्ध और बंगाल का हम लोगों ने इन सूबों के कई प्रतिष्ठित सज्जनों के साथ दौरा किया। इन प्रान्तों की जनता में राज्य-कर्मचारियों के खिलाफ़ कुछ ऐसी अफ़वाहें फैली हुई थीं, जिनका कोई सिर पैर ही न था। ऐसी बातें हम लोगों ने जनता के हृदय से निकाल डालने की कोशिशें कीं, लेकिन इसी दौरान में हमें कुछ ऐसी बातों के भी प्रमाण मिले, जो सचमुच ही ज़्यादतियाँ कही जा सकती हैं। उन्हीं को इस अर्ज़ी में लिखा गया है। इस अर्ज़-दास्त के हर शब्द, और शब्द ही नहीं हर कामा और सैमीकोलन के लिए मैं ज़िम्मेदार हूँ। आप मुझसे परिचित न हों, यह बात नहीं, आप जानती हैं किसी बात को भी ग़ैरज़िम्मेदारी से न करने का ही मैं प्रयत्न करता हूँ, साथ ही यह बात भी आपसे छिपी नहीं है कि सच्चे और सीधे रास्ते को छोड़, भूठे और टेढ़े-मेढ़े रास्ते पर चलने की मुझमें हिम्मत नहीं है। (अत्यन्त दृढ़ता से) इस अर्ज़ी में लिखी हुई हर बात को सुबूत करने का मैं साहस रखता हूँ। मैं जानता हूँ कि आपकी सरकार मुल्क की सरकार है, साथ ही वह इस्तिबदादी न होकर, हरदिल अज़ीज़ परन्तु वह सरकार केवल मुसलमानों की न होकर यहाँ बसे हुए हर मनुष्य की है।

जहाँनारा—(उस अख़बार को उठाकर, जिसे वह पढ़ रही थी) और इस अख़बार में जिस हिन्दोस्तान की गवर्नमेन्ट की कार्रवाइयाँ छपी

हैं वह भी सिर्फ हिन्दुओं की सरकार न होकर वहाँ बसे हुए तमाम इन्सानों की है। (अल्लबार अमरनाथ को देने के लिए हाथ बढ़ाती है।)

अमरनाथ—मैं आज इस पत्र को पढ़ चुका हूँ, इतना ही नहीं, हिन्दोस्तान में रहने वाले कई मुस्लिम भाइयों से मेरी खत-किताबत भी चल रही है। यहाँ का काम निपटाकर महफूजखाँ और मैं हिन्दोस्तान का भी दौरा करने वाले हैं। वहाँ यदि मुसलमानों पर कोई ज्यादतियाँ हुई होंगी तो मुसलमानों को साथ लेकर उन्हें भी मैं वहाँ के मंत्रियों के सामने रखूँगा।

जहाँनारा—बहुत अच्छा होता अगर आप लोग पहले वही की जाँच कर लेते।

अमरनाथ—मुमकिन है वह अच्छा होता, परन्तु अब तो हम लोग यहाँ आ ही गये हैं और यहाँ का काम निपटाकर ही जाना हो सकता है।

[कुछ देर निस्तब्धता।]

तोता—आवर लाइफ इज़ ए रेग्युलर फ्रीस्ट।

[सब लोग तोते की ओर देखते हैं; जहाँनारा विशेष ध्यान से।]

जहाँनारा—(अमरनाथ की तरफ दृष्टि घुमाकर) देखिए, यहाँ हम लोग ज्यादा घास पैरों के नीचे नहीं उगने देते। जैसे ही कोई शिकायत आती है, उसकी जाँच की जाती है और जाँच होते ही मुनासिब कार्रवाई। (अर्जी को टेबिल पर से उठाते हुए) इसमें की हुई शिकायतों की तहकीकात की जायगी और तहकीकात के बाद मुनासिब कार्रवाई।

अमरनाथ—धन्यवाद। और इस तहकीकात के दौरान में यदि मेरी किसी प्रकार की मदद की ज़रूरत हो तो...

जहाँनारा—(बीच ही में) हाँ, हाँ, ज़रूरत होगी तो फ़ौरन आपको तकलीफ़ दी जायगी।

अमरनाथ—अनेक धन्यवाद । मुझे विश्वास है कि अगर ठीक ढंग से जांच हुई तो महफूजखाँ की और मेरी ही नहीं, (अपने दूसरे साथियों की ओर इशाराकर) मेरे आज के सभी साथियों की, और इनके अलावा भी कई सज्जनों की आपको जरूरत पड़ेगी ।

जहाँनारा—जिन-जिनकी जरूरत पड़ेगी हरेक को बुला लिया जायगा ।

अमरनाथ—धन्यवाद ।

[जहाँनारा फिर अर्जी के कागज उलटने लगती है । कुछ देर निस्तब्धता ।]

तोता—गंगाराम ।

जहाँनारा—(अर्जी को उलटते-पुलटते गम्भीरता से) पर देखिए; एक बात अभी से साफ़ कर देना चाहती हूँ ।

अमरनाथ—फ़र्माइए ।

जहाँनारा—इस अर्ज-दास्त में हिन्दू और सिक्खों के मजहबी इदारों की मदद के मुताल्लिक़ जो माँगें की गयी हैं, वह पूरी नहीं की जा सकती ।

अमरनाथ—यह क्यों ?

जहाँनारा—इसलिए कि इस्लाम हुकूमती मजहब है । इस्लाम शरियत के खिलाफ़ जो मजहब हैं उन्हें सलतनत कैसे मदद कर सकती है ? मस्लन बुतपरस्ती जिन मन्दिरों में होती है, उन्हें हुकूमत से कैसे मदद मिल सकती है ?

महफूजखाँ—मुआफ़ करें तो मैं इस सम्बन्ध में कुछ निवेदन करूँ ।

जहाँनारा—जरूर, जरूर ।

महफूजखाँ—पहले तो यही ग़लत बात है कि इस्लाम हुकूमती मजहब है ।

जहाँनारा—यह आपने खूब फ़र्माया !

महफूजखाँ—मेरा कथन कितनी दूर तक सही है इसका मैं प्रमाण

देता हूँ। सल्तनत के खर्च के लिए जो टैक्स वसूल होते हैं वे केवल मुसलमानों से या दूसरे समुदायों से भी ?

जहाँनारा—टैक्स तो हर हुकूमत में सभी देते हैं।

महफूजख़ाँ—ठीक है, इसीलिए हुकूमत का कोई मज़हब हो ही नहीं सकता।

जहाँनारा—(विचारते हुए) लेकिन ब्रिटिश गवर्नमेन्ट के वक्त टैक्स सब से वसूल होने पर भी प्राटेस्टेन्ट क्रिश्चियेनिटी की मदद के लिए मज़हबी महकमा था। सरकारी मालिया से उसे मदद मिलती थी, दूसरे मज़हबों को नहीं।

महफूजख़ाँ—ब्रिटिश गवर्नमेन्ट की बात छोड़ दीजिए। उसने तो प्रायः सभी बातें इस देश में उलटी-पुलटी ही की थीं। जैसा मैंने अर्ज किया एक तो हुकूमत का कोई मज़हब हो ही नहीं सकता, दूसरे या तो वह किसी भी मज़हब की संस्थाओं को कोई मदद न दे और या फिर सभी धर्मों की संस्थाओं को। पठान और मुगल राज्य में सभी धर्मों की संस्थाओं को सहायताएँ दी जाती थीं। औरंगज़ेब तक ने कुछ हिन्दू-मन्दिरों को जागीरें दी थीं। अवध के बादशाहों का, हैदरअली और टीपू सुल्तान का इतिहास भी इस तरह की घटनाओं से भरा हुआ है। हिन्दू राज्य में तो हमेशा ही यह होता रहा है। आखिरी हिन्दू सम्राट् हर्षवर्धन का तो आर्य और बौद्ध-धर्म का समानादर दुनिया की तारीख में एक खास स्थान रखता है।

जहाँनारा—(गम्भीरता से सोचते हुए) अच्छी बात है, इस पर भी हम लोग गौर करेंगे।

अमरनाथ—बहुत-बहुत शुक्रिया।

[जहाँनारा अर्जी को फिर उलटने-पुलटने लगती है। कुछ बेर सभाटा।]

तोता—टर् ! टर् ! टर् !

अमरनाथ—(उठते हुए) तो आपका समय तो आजकल बहुत कीमती है, अब आज्ञा हो ।

[सब लोग खड़े हो जाते हैं; जहाँनारा भी ।]

जहाँनारा—इतनी जल्दी तशरीफ़ ले जायेंगे ? अभी तो आपने काम की बातें की हैं, जाती बातें तो कुछ हुई ही नहीं । दिल्ली की हमेशा ही याद आती है । कहिए, आप सब लोग वहाँ अच्छी तरह तो रहते हैं ? लखनऊ आपका जाना हुआ था ? शान्तिप्रिय जी तो अच्छे हैं ?

अमरनाथ—दिल्ली में तो सभी बहुत अच्छी तरह हैं; धन्यवाद । लखनऊ गया नहीं, पर शान्तिप्रिय जी अच्छे हैं, यह अखबारों से मालूम हो जाता है ।

जहाँनारा—एक दिन चाह के लिए तशरीफ़ लाइए न ?

अमरनाथ—शुक्रिया; पर अभी तो एक बार घर लौट रहा हूँ । जाँच के सिलसिले में यदि आपने याद किया और यहाँ आया तो किसी दिन भी चाह के लिए क्या खाना खाने के लिए आ जाऊँगा ।

जहाँनारा—हाँ, हाँ, आपका घर है ।

[जहाँनारा एक-एक कर सबसे हाथ मिलाती है ।]

तोता—गंगाराम !

[सबका प्रस्थान । इन लोगों के जाने पर जहाँनारा जल्दी से कुर्सी पर बैठ अर्जि को उठाकर बड़े ध्यान से पढ़ने लगती है । पढ़ते-पढ़ते सामने की ओर देखती है, मानो किसी बहुत दूर की चीज़ को देख रही हो । वह पढ़ना रोककर कुछ देर चुपचाप इसी तरह देखती रहती है और फिर पढ़ना शुरू करती है । पढ़ते-पढ़ते अब एकाएक अर्जि को टेबिल पर पटककर खड़ी हो जाती है । दोनों हाथों की मुट्ठियाँ बाँध नीचे की तरफ़ देखने लगती है । फिर दोनों हाथ मलने लगती है । हाथ मलते-मलते एकाएक घूमना शुरू करती है । घूमना एकदम से तेज़ हो जाता है । फिर सहसा खड़े हो टेबिल पर से अर्जि को उठाकर खड़े-

खड़े ही पढ़ने लगती है। पढ़ते-पढ़ते फिर टहलना शुरू होता है। इस बार टहलते हुए भी अर्जी का पढ़ना जारी रहता है।]

तोता—आवर लाइफ़ इज़ ए रैग्यूलर फ़ीस्ट !

जहाँनारा—(खड़े हो, पढ़ना बन्दकर, तोते की तरफ़ देखते हुए) अरे ! कहाँ का फ़ीस्ट, गंगाराम ? इस....इस हालत में भी तुझे लाइफ़ फ़ीस्ट दिखती है ? तू....तू अगर इस अर्जी को पढ़ सकता ! तू....तू अगर अमरनाथ के लफ़्ज़ों, अमरनाथ की नज़र, अमरनाथ की हरेक हरकत से जो सचाई टपक रही थी, उसे देख सकता....उसे समझ सकता....तो....तो कभी....हाँ, कभी....कभी भी न कहता कि—‘लाइफ़ इज़ ए रैग्यूलर फ़ीस्ट !’

तोता—आवर लाइफ़ इज़ ए रैग्यूलर फ़ीस्ट !

जहाँनारा—हरगिज़....हरगिज़ वह लाइफ़ रैग्यूलर फ़ीस्ट नहीं हो सकती, जिस लाइफ़ से इतने....इतने बेकसूरों को इस....इस तरह की तकलीफ़ें पढ़ूँच रही हों।

[पीरबल्लश का प्रवेश।]

पीरबल्लश—कहिए, मिस जहाँनारा, डेपुटेशन से बातें हो गयीं ?

जहाँनारा—हाँ, अभी-अभी वह लोग गये हैं।

पीरबल्लश—मुझे मालूम है। उनके आते ही मैं भी आ गया था और नज़दीक वाले कमरे में बैठा हुआ सारी बातें सुन रहा था। उनके जाने के बाद गुसलखाने में होकर आ रहा हूँ।

[दोनों कुर्सियों पर बैठ जाते हैं।]

जहाँनारा—तब तो आपको मालूम ही है कि क्या बातें हुई ?

पीरबल्लश—हाँ, हाँ, सब मालूम है। शुरू-शुरू में आपकी बातचीत का रवैया भी बिल्कुल ठीक था, लेकिन....लेकिन बाद में.... (चुप हो जाता है।)

जहाँनारा—(उत्सुकता से) हाँ, बाद में ?

पीरबख्श—आखिर औरत का ही दिल ठहरा और फिर अमरनाथ पुराने दोस्तों में से एक । बाद बाद में आप ढेर हो गयी ! एक दम कुलैप्स !

जहाँनारा—(आश्चर्य से) ढेर ! कुलैप्स !

पीरबख्श—और क्या ? तफ्तीश मंजूर कर लेना, ढेर होना तो था ही । और और काफ़िरों से भी बड़े काफ़िर महफूज़ की बात पर भी आपका गौर करने के लिए कहना क्या कहूँ, हद्द हो मयी । इस्लाम में काफ़िरों से कैसा बर्ताव करना चाहिए, यह तो कहा है, पर कोई मुसल्मान अगर दिखावे के लिए ही सिर्फ़ जाहिरा मुसल्मान रह जाय, मुसल्मान होते हुए इस्लाम की ही जड़ खोदे, तो उससे कैसा सलूक किया जाय यह शायद कहीं नहीं कहा । उफ़ ! वह महफूज़ ! उसे उसे मैं काफ़िरों से भी बड़ा काफ़िर मानता हूँ । तोप के मुँह पर रखकर उड़ा देने के क़ाबिल । (कुछ रुककर) आपको कहना चाहिए था मिमोरिअल में लिखी हुई हर बात सफ़ेद भूठ ही नहीं बल्कि काली भूठ है । हमारी गवर्नमेन्ट जितनी अकल्लियत-पसंद है, इसे देखकर हमें खुद ही ताज्जुब होता है । सल्तनत के हरेक अफ़सर पर इस बात के लिए ज़्यादा से ज़्यादा दबाव रखा जाता है कि वह सब के साथ इन्साफ़ाना बर्ताव करे पर अकल्लियतों का इन्साफ़ से भी आगे बढ़कर ख्याल रखें और हमारी सरकार के तमाम अहलकार इस मामले में अपने फ़र्ज ठीक तरह से अदा कर रहे हैं । आप जानती हैं कि गवर्नमेन्ट बनाने के पहले ही नहीं, पर राइल-आम का नतीजा निकलने के पहले भी इस मामले के मुता-ल्लिक मैंने साफ़-साफ़ लफ़्ज़ों में आपको अपनी राय बतायी थी । गवर्नमेन्ट बनाने के बाद भी आप जानती हैं कि हम लोग इस तरफ़ कितना ख्याल रखते हैं; यहाँ तक कि कई हिन्दू और सिक्ख गुण्डों की सुबूतों के साथ शिकायतें आने पर भी हमने उनके खिलाफ़ कोई कार्रवाई इसलिए नहीं की कि फ़िज़ूल की ग़लतफ़हमी न हो । अमरनाथ और उस बदज़ात

महफूज का दौरा तक हमने हो जाने दिया। गवर्नमेन्ट के इतनी ईमानदारी के साथ अपना फ़र्ज अन्जाम देने पर भी तमाम पाकिस्तान में इन लोगों ने बावैला मचा रखा है। आपने . . . आपने बातचीत शुरू . . . शुरू तो ठीक तरह से की थी, लेकिन . . . लेकिन . . .

जहाँनारा—(पीरबल्लश को अर्जी देते हुए, बीच ही में) लेकिन आप इस अर्ज-दास्त को भी तो पढ़िए, इसमें ऐसी . . . ऐसी शिकायतों का तस्किरा है, जो हम लोग ख्याल में भी नहीं सोच सकते थे।

पीरबल्लश—(अर्जी को लेकर बिना पढ़े हुए ही, उसे लपेटकर टेबिल पर पटकते हुए) सब भूठा मामला बनाया गया है।

जहाँनारा—उसमें हर बात के सुबूत दिये गये हैं।

पीरबल्लश—सुबूत बातों से भी ज्यादा भूठे होंगे।

जहाँनारा—लेकिन . . . लेकिन, मौलाना, मैं अमरनाथ को अच्छी तरह जानती हूँ। वह कभी भूठ नहीं बोलता। आज भी उसके हर लफ़्ज़ और हर हरकत से सचाई टपकती थी।

पीरबल्लश—मैं भी उसे जानता हूँ, मिस जहाँनारा, उससे ज्यादा बना हुआ आदमी मैंने ज़िन्दगी में देखा ही नहीं। जो इस तरह सचाई को दिखाते और उसकी मुनादी पीटते हैं, वह बड़े से बड़े भूठे और दगाबाज़ होते हैं।

तोते—चित्रकूट के घाट पै भई सन्तन की भीर।

पीरबल्लश—(तोते की ओर देखकर) उफ़ !

[पीरबल्लश एकदम उठकर, जल्दी से तोते का पिंजरा उतार अन्दर जाता है। जहाँनारा भी जल्दी से उसके पीछे-पीछे जाती है। दोनों जल्दी ही वापस आ जाते हैं।]

पीरबल्लश—मैं तो आज उस गंगाराम की हड्डियाँ गंगा में बहाने के लिए भेजने ही वाला था।

जहाँनारा—किसी का गुस्सा किसी पर निकालना तो ठीक नहीं है न ?

[दोनों फिर कुर्सियों पर बैठते हैं । कुछ देर सन्नाटा ।]

जहाँनारा—पाकिस्तान बन जाने पर भी हम क़ौमी-तामीर का कोई काम न कर सके । पाकिस्तान इतना गरीब है कि किसी बड़े काम के लिए उसके पास रुपया ही नहीं । ऊपर से हिन्दुओं और सिक्खों की इस तरह की शिकायतें । (कुछ रुककर) और आप तफ़्तीश भी नहीं करना चाहते ?

पीरबल्लश—हरगिज़ नहीं ।

जहाँनारा—(कुछ ठहरकर) और इस्लाम के मज़हबी इदारों के सिवा दूसरे मज़हबों के इदारों को मदद देने के मुताल्लिक़ आपकी क्या राय है ?

पीरबल्लश—वह तो सोचने की भी बात नहीं है । मैं काफ़िर नहीं होना चाहता ।

[कुछ देर फिर निस्तब्धता ।]

जहाँनारा—आप मिमोरिअल पढ़िए तो ।

पीरबल्लश—मैं अपना क़ीमती वक्ता फ़िज़ूल की चीज़ों में बर्बाद नहीं करना चाहता । वह या तो रद्दी की टोकरी में फेंक देने के लायक़ है, या जला देने के । (कुछ रुककर) देखिए, मिस जहाँनारा, आप जानती हैं, हमने इन अकल्लियतों का कितना ख़्याल रखा और . . . और वह कितनी ईमानदारी . . . सच्ची ईमानदारी के साथ, लेकिन इनकी शैतानियाँ बढ़ती ही जा रही हैं । हमें अब लोहे के हाथों से हुकूमत करनी होगी । और ख़ासकर एक वजह से और भी ।

जहाँनारा—किस वजह से ?

पीरबल्लश—आपने आज के सुबह के अख़बार पढ़े; उनमें हिन्दोस्तान की सरकार की कार्रवाइयाँ तफ़्सील में और बड़े से बड़े सुबूतों के साथ दी गयी हैं । हिन्दोस्तान में मुसल्मान इस बुरी तरह से कुचले जायें कि उन्हें वहाँ से भागना पड़े, और पाकिस्तान में भी हिन्दू, सिक्ख वगैरह इस तरह सिर उठावें, इसे हम बर्दाश्त नहीं कर सकते, हरगिज़, हरगिज़ नहीं ।

कुछ दिनों से मैं हिन्दोस्तान की सरकार के इन रवैयों को देख रहा था, इसीलिए मैंने फ़ौज की भरती बढ़ा दी है।

जहाँनारा—(आश्चर्य से) तो क्या हिन्दोस्तान पर चढ़ाई होगी ?

पीरबल्लश—मुमकिन है, हमें यह करने के लिए लाचार होना पड़े।

जहाँनारा—लेकिन मैं तो समझती थी कि यह भरती पड़ोसी सल्तनतों से हिफ़ाज़त के लिए है।

पीरबल्लश—वह सल्तनतें ? . . . वह तो हमारी हम मजहब हैं। हमने अगर हिन्दोस्तान पर धावा किया तो, उनसे तो हमें उल्टी मदद मिलेगी।

[जहाँनारा अत्यन्त आश्चर्य से मुँह खोलकर पीरबल्लश की तरफ़ देखती है।]

लघु यवनिका

पाँचवाँ दृश्य

स्थान—लखनऊ में शान्तिप्रिय के बँगले का दफ़्तर

समय—तीसरा पहर

[कमरा आधुनिक ढंग से सजा हुआ दफ़्तर दिखता है। लिखने-पढ़ने की मेज़ पर अन्य सामान के साथ टेलीफ़ोन भी रखा है। शान्तिप्रिय घूमने वाली कुर्सी पर बैठा हुआ है। उसकी कुतिया उसके पैरों के पास खड़ी हुई, सिर उठाए उसकी ओर देखती हुई दुम हिला रही है। शान्तिप्रिय उसकी तरफ़ देखता हुआ उससे बातें कर रहा है।]

शान्तिप्रिय—हाँ, हाँ, ख़बी, मिस दुर्गा ने अब . . . अब तो रोज़ ही कहना शुरू किया है कि मैं अपने हृदय को टटोलूँ; उसकी गहराई . . . पूरी गहराई तक उतरकर टटोलूँ; . . . और तब . . . तब मुझे पता

लगेगा कि जहाँनारा के लिए मेरी मुहब्बत किस....हाँ, किस तरह की है ? लेकिन....लेकिन, रबी, हृदय की गहराई का मतलब क्या है ? हृदय वही....वही है न, जिसे डाक्टर लोग हार्ट कहते हैं । हार्ट तो मांस का एक लौंदा है....छोटा सा टुकड़ा....छोटी-छोटी आर्टीज़ के बीच में गुथा सा । फिर....फिर हृदय की गहराई कैसी ? हाँ, ये आर्टीज़ जरूर पोली हैं, परन्तु....परन्तु इनकी पोल में गहराई कहाँ ? गहरा होता है—कुआँ, तालाब, समन्दर । और नदी ? नदी गहरी भी होती है, उथली भी । और कुएँ, तालाब उथले नहीं होते ? होते हैं, लेकिन....लेकिन उनमें नदी वाला बहाव नहीं होता । और....और नदी ? नदी चाहे गहरी हो या उथली, उसमें बहाव रहता ही है । तो....तो मिस दुर्गा ने हृदय की जिस गहराई में उतरकर उसे टटोलने की बात कही, वह दरअसल गहराई की नहीं, बहाव की बात होगी । और....और वह बहाव होगा हार्ट की आर्टीज़ के खून का । तो....तो हृदय जिन आर्टीज़ में खून को बहाता है....और....और उस बहाव के साथ जिस तरह की भावनाएँ बहती हैं....उन्हें....उन्हें टटोलूँ और देखूँ कि जहाँनारा के लिए मेरी मुहब्बत किस तरह की थी और आज भी किस तरह की है ?

[शान्तिप्रिय आँखें बन्द कर लेता है । कुछ देर निस्तब्धता ।]

कुतिया—भों ! भों ! भों !

शान्तिप्रिय—(आँखें खोलकर) तो....तो न टटोलने दिया तू ने उन भावनाओं के बहाव को । दुनिया में रहने वाले, दुनियादारी की चीज़ों से घिरे हुए, दुनिया की भों भों में कहाँ....कहाँ टटोल सकते हैं, इस अन्दरूनी बहाव को ? इस प्रयत्न में भीतर....हाँ, भीतर घुसना पड़ता है और यहाँ तो हर सेकिन्ड बाहर देखना पड़ता है । (कुछ रुककर) लेकिन....लेकिन जहाँ तक भी मैं....मैं इस बहाव का

पता लगा पाया हूँ, मैंने उसे हमेशा बहन के बतौर....कई मर्तबा तो माँ के मानिन्द माना है ।....फिर....फिर इस मुहब्बत में उस तरह की बात कैसे हो सकती है जिसका शक मिस दुर्गा करती हैं ।

कुतिया—भों ! भों ! भों !

शान्तिप्रिय—सिर्फ भोंक रहा हूँ ? क्यों ? (कुछ रुककर) तभी....तभी बहन के बतौर....माँ के मानिन्द लफ़्ज़ मुँह से निकलते हैं; बहन नहीं, माँ नहीं ।....पर....पर, रुबी, जो बहन नहीं है, जो माँ नहीं है, वह....वह तो बहन के बतौर, माँ के मानिन्द ही मानी जा सकती है ।....ग़लत....बिलकुल ग़लत विचार है मिस दुर्गा का ।

कुतिया—भों ! भों ! भों !

शान्तिप्रिय—हाँ, हाँ, भोंकती है वह ।....चूँकि मैं....मैं उसे उस नज़र से नहीं देखता, जिस नज़र से वह मुझे देखती है, इसीलिए वह....वह मुझ पर इस तरह का कलंक लगाती है ।....अरे ! रुबी, उस....उस तरह की मुहब्बत तो मैं मुल्क की ख़िदमत के लिए कुचल चुका था, मिस जहाँनारा के साथ रहते-रहते ही कुचल चुका था ।....वह और मैं साथ-साथ रहते तो भी भाई-बहन का रिश्ता पालते हुए ही देश की सेवा करते और दुर्गा और मैं साथ रहते हैं तो भी मैं तो उसे बहन के मानिन्द ही मानकर क़ौम की ख़िदमत करता हूँ,....करते रहना चाहता हूँ ।....हाँ, इस क़ौम की ख़िदमत में कुछ अधूरापन....अधूरापन हमेशा महसूस करता रहता हूँ ।....मुझे हिन्दू-मुसलमानों में अभी भी कोई भेद नज़र नहीं आता ।....हिन्दू मेरी क़ौम के हैं और मुसलमान किसी ग़ैर-क़ौम के, यह मुझे महसूस ही नहीं होता ।....मिस दुर्गा समझती हैं यह है मेरे दिल में जहाँनारा की उस तरह की मुहब्बत के कारण.....

कुतिया—भों ! भों ! भों !

शान्तिप्रिय—हाँ, रुबी, भोंकती....भोंकती हैं वे ।....अगर

मेरा यह हाल जहाँनारा की मुहब्बत की वजह से ही है, तो . . . तो क्या उनके लिए मेरे दिल में जो बहन की मुहब्बत है, उसके सबब से नहीं हो सकता ? . . . क्या दुनिया में जिन्सी मुहब्बत ही एक मुहब्बत है ? . . . आदमी-औरत का दूसरा किसी तरह का प्रेम नहीं हो सकता ?

कुतिया—भों ! भों ! भों !

शान्तिप्रिय—(कुछ रुककर) हाँ, जब पाकिस्तान में हिन्दुओं पर होने वाले अत्याचारों का हाल सुनता हूँ, पढ़ता हूँ, अभी जब अमरनाथ द्वारा की गयी जाँच और उस पर बनाये गये मिमोरिअल का हाल पढ़ा . . . हमेशा . . . हर वक़्त दिल को ठेस लगती है, खासकर इसलिए कि जहाँनारा यह सब कर रही हैं। जहाँनारा पर क्रोध भी आता है, कभी-कभी काफी क्रोध। . . . पर . . . पर इतना सब होने पर भी उनके लिए घृणा . . . हाँ, ख़बी, घृणा पैदा नहीं होती। . . . क्रोध प्रेम को नहीं मार सकता, . . . वह . . . वह तो घृणा से ही मर सकता है। (कुछ रुककर) और हिन्दोस्तान में क्या हो रहा है ?

कुतिया—भों ! भों ! भों !

शान्तिप्रिय—हाँ, हम 'भो भो सहिष्णुता !' 'भो भो सहिष्णुता !' कहकर भोंके तो बहुत, लेकिन . . . लेकिन दरअसल कर क्या रहे हैं ? और हम मिनिस्टर कुछ भी नहीं कर रहे हैं, तो हमारे मातहत अहलकार क्या कर रहे हैं ? . . . दिखावे के लिए हम कभी-कभी कुछ मामलों की जाँच भी कर लेते हैं, किसी-किसी को छोटी-मोटी सज़ाएँ भी दे देते हैं, हिन्दू-मुस्लिम एकता के भाषण तो रोज़ ही दिया करते हैं, पर . . . पर ज्यादातर तो हम जान-बूझकर उस तरफ़ से आँखें ही बन्द रखने की कोशिश करते रहते हैं। . . . और . . . और यह सब, ख़बी, हमें मालूम हुआ है अमरनाथ और महफ़ूज़ाँ के हिन्दोस्तान के इस दौरे से जो वे कुछ मुसल्मानों के साथ कर रहे हैं। . . . तभी . . . तभी तो हिन्दोस्तान को छोड़-छोड़कर कई मुसल्मान जा रहे हैं। . . . बिना अज़हद तकलीफ़ के कोई

अपना वतन और अपनी पुश्तैनी जायदाद छोड़कर कहीं जाता है ?

[मिस दुर्गा का एक हाथ में कागज लिये हुए जल्दी से प्रवेश ।
शान्तिप्रिय मिस दुर्गा को देखकर खड़े हो आगे बढ़ता है ।]

शान्तिप्रिय—रुबी ! गो अवे, गो अवे, फ़ार सम टाइम ।

[कुतिया जाती है ।]

दुर्गा—(आगे बढ़कर अपने हाथ के कागज शान्तिप्रिय को देते हुए)
लीजिए, यह हमारे लाहौर के प्रतिनिधि की गोपनीय रिपोर्ट ।

[शान्तिप्रिय कागज लेकर सरसरी तौर पर उसे देखता है । दुर्गा
शान्तिप्रिय की ओर देखती रहती है । कुछ देर निस्तब्धता ।]

शान्तिप्रिय—(अत्यन्त आश्चर्य से) अच्छा, हिन्दोस्तान पर मुस्लिम
हमले की तैयारी ! विदेशी मुस्लिम राज्यों की पाकिस्तान की सरकार
को मदद !

दुर्गा—(एक कुर्सी पर बैठते हुए) और मुसलमानों का पक्ष लीजिए ।

[शान्तिप्रिय भी दुर्गा की नज़दीक की कुर्सी पर बैठ जाता है । उसका
सिर झुक जाता है । कुछ देर निस्तब्धता ।]

दुर्गा—(लम्बी साँस लेकर) अन्त में वही हुआ न, जिसका मुझे
भय था । जिस दिन से प्रान्तों को पृथक होने का अधिकार रहे, यह
आन्दोलन चला, उसी दिन से मुसलमानों के पैर इस्लामिज़्म की भावनाओं
के कारण मुझे इस बात का डर था । हिन्दू संघ-राज्य की बागडोर सँभालने
के पूर्व मैंने आपसे कहा था कि यदि अधिकार हमारे हाथ में आया तो
हम हर प्रकार से सहिष्णु रहेंगे, मुसलमानों को भी समृद्धिशाली बनाने का
प्रयत्न करेंगे । हमारी सहिष्णुता में कोई कोर-कसर नहीं रही, पाकिस्तान
में हिन्दू जनता पर नाना प्रकार के अत्याचार होने पर भी नहीं । हिन्दू-
साम्राज्यों ने सब धर्मों को सम-दृष्टि से देखा है, उसी पुरानी परम्परा
के अनुसार हमने मुसलमानों की अनेक मस्जिदों और उनकी धार्मिक
संस्थाओं को राज्य से सहायता भी दी, पाकिस्तान में यह न होने पर भी ।

उन्हें समृद्धिशाली बनाने में भी हमारी सरकार जो सहायता दे सकती थी, वह देती रही। हिन्दुस्थान में मुसलमानों को कष्ट दिये जा रहे हैं, यह मिथ्या दोषारोपण है, मिथ्या से मिथ्या, और इसलिए जिससे पाकिस्तान की सरकार को हम पर इस प्रकार का आक्रमण करने का अवसर मिल जाय। (कुछ रुककर) शान्तिप्रिय जी, मैं आक्रमण से डरती नहीं हूँ। भारत माता के सच्चे पुत्र अब जाग गये हैं। उनकी संख्या इतनी बड़ी है कि यदि अफ़ग़ानिस्तान, इराक़, ईरान और तुर्की सब मिलकर भी पाकिस्तान को सहायता दें तो भी इस युद्ध में हमारी हार सम्भव नहीं। अरे ! यह युद्ध तो समाप्त हो जायगा, पंजाब में ही। वहीं के सिक्ख और हिन्दू इन म्लेच्छों को समाप्त कर देंगे, मुझे दुख होता है कुछ हिन्दुओं की मनोवृत्ति पर। अमरनाथ आज भी उस महफ़ूज़ख़ाँ और कुछ मुसलमानों के साथ अपने हिन्दुओं के राज्य के विरुद्ध देश में घूम रहे हैं यह पता लगाने कि राज्य की ओर से मुसलमानों पर क्या-क्या अत्याचार हो रहे हैं ? ओह ! ओह ! क्या क्या कहूँ मैं ? ऐसे ऐसे हिन्दुओं को कदाचित् नरक में भी स्थान न मिलेगा !

[कुछ देर सन्नाटा।]

शान्तिप्रिय—(धीरे-धीरे) पाकिस्तान वाले अगर हिन्दोस्तान पर हमला करेंगे तो मैं भी भारत माता के एक पुत्र की हैसियत से देश की रक्षा के लिए अपना खून बहा दूँगा, लेकिन लेकिन, मिस दुर्गा, आप आप जिस सहिष्णुता और मुसलमानों की समृद्धि बढ़ाने की बात करती हैं, वह वह तमाम काम हमने सिर्फ़ दिखावे के लिए किया है

दुर्गा—(उत्तेजित होकर ऊँचे स्वर से) दिखावे के लिए !

शान्तिप्रिय—जी हाँ, चाहे हमारी दिखावे की मंशा न रही हो, लेकिन हमें जो करना चाहिए था वह हम कर नहीं सके; बल्कि हमारे अहंकारों ने हमारे कार्यक्रम के खिलाफ़

दुर्गा—(बीच ही में) यह आप अमरनाथ के इस दौरे के संवादों से प्रभावित होकर कह रहे हैं। (और अधिक उत्तेजना से) ओह ! यह अमरनाथ

शान्तिप्रिय—सिर्फ अमरनाथ के दौरे के संवादों की वजह से मैं यह नहीं कह रहा हूँ। (हाथ के काराजों को दुर्गा को देते हुए) लाहौर की यह रिपोर्ट भी मेरी इस राय का समर्थन करती है।

दुर्गा—(आश्चर्य से) यह रिपोर्ट इसका समर्थन !

शान्तिप्रिय—जी हाँ, अगर हमने यहाँ के मुसलमानों की सच्ची भलाई की होती तो इस हमले की चर्चा ही न उठ सकती थी। हम हम भी इसके लिए कम ज़िम्मेदार नहीं

दुर्गा—(बीच ही में अत्यन्त उत्तेजना से) क्या क्या कह रहे हैं आप !

[टेलीफोन की घंटी बजती है।]

शान्तिप्रिय—(घूमने वाली कुर्सी पर बैठकर, रिसीवर को उठा, कान में लगा) हलो ! हलो ! ट्रंक काल ? कहाँ कहाँ का ? लाहौर लाहौर का ? किसका किसका ? आनरेबिल मिस जहाँनारा का ? जॉइन जॉइन प्लीज। (उसका मुख खिल उठता है।)

[दुर्गा उस कुरसी से उठकर दूसरी कुरसी पर बैठती है, जिससे उसका मुख शान्तिप्रिय की ओर हो जाता है।]

शान्तिप्रिय—(मुस्कराते हुए) हलो ! हलो ! दीदी ! जी, जी हाँ, लखनऊ से शान्तिप्रिय ही बोल रहा है। पहचान गयीं मेरी आवाज़ ? इतने इतने दिनों के बाद भी नहीं भूलीं ? मैं मैं भूल गया ? क्या क्या कहूँ ? अच्छा अच्छा यह कहिए, दीदी, मिज़ाज कैसा है ? ज़िन्दा हैं ? अच्छा। जी हाँ, जिस्मानी तौर पर तो बिलकुल अच्छा हूँ।

....कहिए,....कहिए कैसे याद फ़र्माया आज इतने ज़माने के बाद ? (कुछ देर रुककर, और अब उसके मुख पर अत्यधिक आश्चर्य दिख पड़ता है ।) अच्छा ! अच्छा ! आप कैबिनिट से इस्तीफ़ा दे रही हैं ? सबब सबब ? (कुछ देर चुप रहने के बाद) ओह ! ऐसा ऐसा ? (कुछ देर बाद लम्बी साँस लेकर रिसीवर रख देता है ।)

दुर्गा—(अत्यन्त उत्कंठा से) जहाँनारा कैबिनिट से इस्तीफ़ा दे रही हैं ?

शान्तिप्रिय—जी हाँ ।

दुर्गा—कारण ?

शान्तिप्रिय—कारण ? कारण ये ही हिन्दू-मुसलमानों के आपसी भगड़े । और फिर उन्होंने यह भी कहा कि वे पाकिस्तान की भी कोई बहबूदी न कर सकीं । वैसी ही गरीबी, वैसा ही सब कुछ पाकिस्तान में अभी भी मौजूद है जैसा आज़ादी के पहले था । पाकिस्तान में फ़र्स्ट क्लास क्राइसेज होगी ।

[चपरासी का तश्तरी में कार्ड लिये हुए प्रवेश । वह लाल रंग की बर्दी पहने हैं । उसके साफ़े पर सूर्य का बिल्ला है । कमर में कटार लगाये हैं । अभिवादन कर वह तश्तरी शान्तिप्रिय के सामने करता है ।]

शान्तिप्रिय—(कार्ड उठाकर, उसे देखते हुए) अच्छा ? कुछ मुसलमानों का डेपुटेशन और लीडर अमरनाथ जी ! (कुछ रुककर दुर्गा से) आप डेपुटेशन का स्वागत करें ।

दुर्गा—(कुछ रुककर) में ? डेपुटेशन तो आपके पास आया है ।

शान्तिप्रिय—जी हाँ, लेकिन लेकिन मैं तो अब डेपुटेशन वालों में से एक होऊँगा ।

[कुछ देर एक विचित्र प्रकार की निस्तब्धता ।]

दुर्गा—(अत्यन्त क्रोध से) अच्छा अच्छा ! तो तो आप हिन्दुस्थान में भी फ़र्स्ट क्लास क्राइसेज चाहते हैं ।

शान्तिप्रिय—(नीची निगाह कर) क्राइसेज क्राइसेज नहीं, लेकिन लेकिन, मिस दुर्गा, मैंने यह तस्फ़िया उन्हीं वजूहात के सबब से किया जिनसे जहाँनारा ने । हमने देश के हिस्से नहीं चाहे थे, पर बटवारे के बाद हमने भी हिन्दू-मुस्लिम एकता की कोई कोशिश नहीं की । हिन्दोस्तान हालाँ कि पाकिस्तान के सदृश गरीब नहीं है, फिर भी गरीबों की हम कोई खास भलाई न कर सके । अहलकारों का भी वही हाल है । सारी बातें करीब-करीब वैसी ही हैं जैसी आज़ादी के पहले थीं ।

[दुर्गा आँखों से आग-सी बरसाती हुई शान्तिप्रिय की ओर देखती है । शान्तिप्रिय दूसरी तरफ़ देखने लगता है । चपरासी हक्का-बक्का सा कभी दुर्गा और कभी शान्तिप्रिय की ओर देखता है ।]

यवनिका

उपसंहार

स्थान—दिल्ली में शान्तिप्रिय के बँगले का कमरा

समय—प्रातःकाल

[कमरा यद्यपि बैठकखाना है, पर उसकी सजावट का ढंग बिल्कुल बदल गया है, न कुर्सियाँ हैं, न टेबिलें, ज़मीन पर छपी हुई खादी की जाजम बिछी हैं, उस पर सफ़ेद खादी की चादर से ढकी हुई गद्दी है और गद्दी पर सफ़ेद खादी की खोलियों से ढके हुए मसनद । गद्दी के निकट ही लकड़ी की एक चौकी पर टेलीफ़ोन रखा है । दरवाज़े-खिड़कियों पर खादी के रंगीन परदे पड़े हैं । शान्तिप्रिय खादी का कुरता और धोती पहने कमरे में इधर से उधर और उधर से इधर घूम रहा है । इस घूमने में उसका साथ दे रही है उसकी कुतिया रुबी । शान्तिप्रिय के हाथ में एक तार है । वह बार-बार सामने के दरवाज़े की तरफ़ देखता है, जिससे जान पड़ता है कि वह उत्कंठा से किसी की प्रतीक्षा कर रहा है । बीच-बीच में वह हाथ के तार को देख लेता है ।]

शान्तिप्रिय—रुबी रुबी, तूने भी भोंककर न जगाया । क्या क्या कहेंगी दीदी ? वे तो लाहौर से दौड़ी हुई आ रही हैं, और मैं मैं स्टेशन तक न गया । इस इस तरह सोया कि सूरज की किरण के आँखों को गुदगुदाने तक किसी चीज़ की खबर ही नहीं । जब जब आदमी निश्चिन्त हो जाता है तब तब शायद इसी हाँ, इसी तरह की समाधि की नींद आती है, न सपना, न करवट, न हरकत । फिर फिर दिल्ली की इस नयी गृहस्थी को जमाने जमाने में थक भी तो गया था, रुबी ! और इतना इतना थका कि दीदी का यह तार तार (तार को पढ़ते हुए)

‘रीचिंग टु मारो मारनिंग’ भी न जगा सका । गनीमत यही हुई, रुबी, कि ड्राइवर मोटर ले गया । पर पर फिर भी क्या कहेंगी दीदी ? (कुछ रुककर) कह दूँगा उनसे आपके आने की खबर के कारण ही तो इतनी नींद आयी । दोनों बातें उसीकी वजह से हुई—निश्चिन्तता और थकावट; निश्चिन्तता आपके निश्चित रूप से प्राप्त होने की खबर से, और थकावट आपके आने के पहले इस बैंगले की सजावट पूरी करने से । (फिर कुछ रुककर) लेकिन लेकिन, रुबी, दीदी के आने की खबर तो नींद को भगा देने का कारण होना चाहिए था । सुना और पढ़ा तो यही है कि ऐसे मौकों पर नींद और भूख, दोनों ही भाग जाती हैं । (विचार में खड़े होकर, पर तुरन्त ही फिर घूमते हुए) हाँ, वैसी वैसी हालत शायद उनकी उनकी प्रतीक्षा में होती है, जिनका प्रेम उस उस ढंग का होता है, जैसा दुर्गा का मेरे लिए था । बहन, माँ के मानिन्द बहन की मुहब्बत तो तो हर, हाँ, हर हालत में शान्ति शान्ति ही देती है, अशान्ति नहीं । (फिर कुछ रुककर) कितने कितने वक्त के बाद दीदी के दर्शन होंगे ? कैसा कैसा मिलन होगा यह ? उनकी वह मुहब्बत । उनकी वे बातें एक भूले हुए सपने के बतौर आज फिर आँखों के आगे, कानों के भीतर घूम और गूँज रही हैं । हार्ट की आर्ट्रीज़ के बहते हुए खून में वीणा के तारों की सी मधुर झंकार हो रही है । (फिर कुछ रुककर) अशान्ति हाँ, अशान्ति नहीं है, ... फिर फिर क्या है यह ? (फिर कुछ रुककर) शायद शब्द इसका वर्णन नहीं कर सकते । (फिर कुछ रुककर) कितना कितना वक्त खोया हमने इन फ्रिज़ूल के झगड़ों में । और और हमने तो वक्त ही खोया, पर पर देश ने इस बीच क्या-क्या खो दिया ? और और हमारा तो पुराना वक्त लौट आया, लेकिन लेकिन मुल्क ने जो-जो खोया है वह

[नेपथ्य में मोटर का बिगुल सुनायी देता है ।]

शान्तिप्रिय—(बिगुल को ध्यान से सुनते हुए, कुछ देर चुप रह)
हाँ...हाँ, यह...यह तो हमारी...हमारी ही मोटर का हार्न
है । (प्रसन्नता से) रुबी, आ...आ गयीं दीदी !

[नेपथ्य में मोटर खड़े होने की आवाज आती है । शान्तिप्रिय शीघ्रता
से सामने के दरवाजे की ओर बढ़ता है । रुबी दरवाजे से बाहर निकल
जाती है । शान्तिप्रिय ज्योंही एक पैर बाहर रखता है, त्योंही जहाँनारा
शीघ्रता से आती हुई दिखायी देती है । उसकी वेष-भूषा भी बदल गयी
है । वह अब खादी की एक मोटी साड़ी और शलूका पहने है ।]

शान्तिप्रिय—(जहाँनारा के पैरों में गिरते हुए) तो...तो आखिर
...आखिर तुम आ गयीं, दीदी !

जहाँनारा—(शान्तिप्रिय को बीच ही में रोककर हृदय से लगाते
हुए) भइया, इतने...इतने दिनों तक कैसे नहीं आयी, इसी का मुझे
ताज्जुब है ।

शान्तिप्रिय—(गद्गद् स्वर से) तुमने मुझे माफ़ कर दिया न, दीदी ?

जहाँनारा—(उसी तरह के स्वर में) माफ़ तो मैं तब करती, जब
मैंने कुसूर न किया होता । तुमसे ज्यादा तो मेरा कुसूर है, बड़ी में थी ।

[दोनों अलग-अलग होते हैं ।]

शान्तिप्रिय—लेकिन, दीदी, मैं तो अभी भी कुसूर करता ही जाता
हूँ । देखो न, तुम तो लाहौर से दौड़ी-दौड़ी आयीं और मैं तुम्हें लेने स्टेशन
तक न पहुँच सका ।

जहाँनारा—(आँखें पोंछते हुए, मुस्कराकर) नींद न खुली होगी ?

शान्तिप्रिय—(आँखें पोंछकर) क्या कहूँ ?

जहाँनारा—मैं जानती हूँ तुम्हारे मिजाज को । स्टेशन पर जब
न देखा, तभी समझ लिया था कि सो रहे होंगे । ऐसे मौकों पर तुम्हें
ग़ज़ब की नींद आती है । ज्यादातर लोगों को खुशी की कोई बात हो

जाने पर बेफ़िक्री होती है, पर तुम्हें उसका भरोसा हो जाने पर ही हो जाती है । . . . अभी . . . अभी तक भी तुम्हारा कैसा बच्चों का सा दिल है । (कुछ रुककर) अच्छा, आओ तो ज़रा यहाँ । (आगे बढ़कर टैलीफ़ोन को चौकी से नीचे रखकर) बैठो तो इस चौकी पर ।

शान्तिप्रिय—(जहाँनारा के पीछे-पीछे आकर) क्यों, क्या होने वाला है ?

जहाँनारा—बोलो मत, जो हुकम देती जाऊँ, करते जाओ ।

शान्तिप्रिय—(चौकी पर बैठते हुए) इसी तरह हुकम देती रहती तो यह सब थोड़े ही होता जो हुआ ।

जहाँनारा—(शलूके की जेब से एक राखी और काग़ज़ की पुड़िया निकालकर, पुड़िया खोलते हुए) जानते हो आज है रक्षा-बन्धन ।

शान्तिप्रिय—ओह ! मैं तो भूल ही गया था ।

जहाँनारा—(पुड़िया में जो कुमकुम निकला है, उसे शान्तिप्रिय के मस्तक पर लगाते हुए) इसीलिए तो एकाएक आज पहुँच गयी ।

[जहाँनारा शान्तिप्रिय के हाथ में राखी बाँधती है । शान्तिप्रिय उसके पैरों में सिर रखता है । फिर दोनों गद्दी पर बैठते हैं ।]

शान्तिप्रिय—दीदी, हमारे पुनर्मिलन के लिए तुमने अच्छे से अच्छा दिन चुना । इस पवित्र-बन्धन से हम तो फिर एक हो जायेंगे, लेकिन हमारे ही गुनाहों से देश . . . देश के जो टुकड़े हुए हैं, इनका . . . इनका एकीकरण अब कैसे . . . कैसे होगा ? हमारे इस पाप का प्रायश्चित्त . . .

जहाँनारा—(गम्भीरता से) हाँ, यह बहुत बड़ा सवाल है । हमारे पाप का प्रायश्चित्त आसान नहीं है । जिन्होंने मुल्क के टुकड़े कराये हैं, वह . . . वह भी अब अगर उसे मिलाना चाहेंगे तो भी कामयाबी आसानी से न होगी, . . . मुश्किल . . . बड़ी मुश्किल पड़ेगी । सचमुच भइया, हमने गुनाह . . . बड़े से बड़ा गुनाह किया है । पीरबलूश की वज़ारत

तो अब नहीं टिक सकती। शायद उनका दिल भी बदला है और वह मुल्क के इस हिस्से होने के खिलाफ भी कुछ कहेंगे।

शान्तिप्रिय—(कुछ आश्चर्य से) अच्छा !

जहाँनारा—लेकिन इतने पर भी मुल्क को फिर से एक करने में कहाँ तक कामयाबी होगी, यह देखना है। भइया, जहर मुंह से नीचे उतर कर तमाम जिस्म में फैल गया है। जिन्होंने जहर दिया था, उनके लिए भी उसका इलाज करना आसान चीज नहीं।

शान्तिप्रिय—वजारत तो मिस दुर्गा की भी नहीं रहना है, पर इससे . . . इससे भी . . .

जहाँनारा—भइया, मुल्क के हिस्से करने की हलचल में हम पेशकदमी वालों में से थे। उसे फिर से मिलाने की कोशिश में सिर्फ पेशकदमी देने से काम न चलेगा, हमें अपनी कुर्बानियाँ करनी होंगी। पेशकदमी करने में हमें सिर्फ अपना पसीना बहाना पड़ा था, अब बहाना बड़ेगा अपना खून। (कुछ रुककर) इस सारे मामले पर हमें अमरनाथ जी से बात कर एक पूरा प्रोग्राम तैयार करना होगा।

शान्तिप्रिय—उनसे और महफूजखाँ से आज शाम को हुमायूँ के मक़बरे पर मेरा मिलना तय हुआ है। इन दोनों ने मुल्क के भावी स्वरूप के मुताल्लिक गान्धीवाद और साम्यवाद दोनों का सम्मेलन कर एक नया स्कीम बनाया है, जिसके अन्दर मुल्क का फिर से एकीकरण भी आ जाता है।

जहाँनारा—(प्रसन्नता से) बड़ी खुशी की बात है। मैं भी आज शाम को वहाँ चलूँगी। (कुछ रुककर) भइया, याद है जिस दिन तुम पहले-पहल दिल्ली आये थे, उस दिन शाम को भी हम हुमायूँ के मक़बरे को ही गये थे।

शान्तिप्रिय—(बिचारते हुए) लेकिन उस दिन मेरा आना ठीक मुहूर्त में नहीं हुआ था, दीदी; उसका क्या नतीजा निकला ?

जहाँनारा—(मुस्कराकर) पर....पर आज तो रक्षाबन्धन है, इसीलिए तो मैं ठीक मुहूर्त देखकर आयी हूँ ।

[दो नौकरों के सिर पर जहाँनारा का सामान आता है । आगे-आगे चपरासी है । उसके हाथ में गंगाराम का पिंजरा है । सामान फ़र्श पर रखा जाता है और पिंजरा भी । चपरासी और नौकर जाते हैं ।]

तोता—आवर लाइफ़ इज़ ए रैग्युलर फ़ीस्ट !

[जहाँनारा और शान्तिप्रिय पहले तोते की तरफ़ देखते हैं फिर एक दूसरे की ओर देखने लगते हैं ।]

शान्तिप्रिय—आवर लाइफ़ इज़ ए रैग्युलर फ़ीस्ट !

जहाँनारा—(आँखों में आँसू भरकर) हाँ, बहुत....बहुत दिन के बाद वह....वह रैग्युलर फ़ीस्ट....

यवनिका

समाप्त

